PA.ONE

GS Research Foundation

HISTORY (3.0)

इतिहास

Updated on-

26 Nov, 2023

PET UP-TET S-TET

POLICE UPSSC EXAM

C-SAT SSC-GD LEKHPAL

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

इतिहास

- जिस काल में लेखन कला का विकास नहीं हुआ उसे '**प्रागैतिहासिक** काल कहते है।
- आद्य ऐतिहासिक काल में लेखन कला का विकास तो हो गया था परंतु अभी तक अपठनीय हैं।
- सिंधु घाटी सभ्यता की कालावधि को '**आद्य ऐतिहासिक काल**' की संज्ञा दी जाती है।
- '**ऐतिहासिक** काल' उस काल को कहते हैं जिसके लेख पठनीय हैं।

प्रागैतिहासिक संस्कृतियां

- प्रागैतिहासिक काल को '**पाषाण काल**' भी कहा जाता है क्योंकि उस काल के सभी पुरातात्विक साक्ष्य पाषाण निर्मित हैं। इसे तीन कालों में बांटा गया है- **पुरापाषाण काल, मध्य पाषाण काल, नवपाषाण काल।**

पुरापाषाण काल

- पाषाण काल का आरंभिक काल पुरापाषाण काल के नाम से जाना जाता है। भारत में सर्वप्रथम 1863 ई. में ब्रिटिश भूविज्ञानी **रार्बट ब्रुस फूट** ने **पल्लावरम्** (मद्रास) से पाषाण निर्मित साक्ष्य प्राप्त किया था।
- इस काल का मानव जानवरों का शिकार करता था तथा कन्दराओं में जानवरों की तरह रहा करता था।
- **भीमबेटका** के 200 से अधिक चट्टानी गुफाओं से इस काल के लोगों के रहने के साक्ष्य मिले हैं। चित्रकारी में हरे तथा गहरे लाल रंग का उपयोग हुआ है।

मध्यपाषाण काल

- इस काल के लोग अंत्येष्टि क्रिया से परिचित थे। मानव अस्थियों के साथ कुत्ते की भी अस्थियां भी मिली हैं। पंचमढ़ी में महादेव पहाड़ियों में मध्य पाषाण युग के शैलाश्रय मिले हैं।

नवपाषाण काल (7000-1000 ई.पू.)

- आदमगढ़, चिरांद (बिहार), ब्लूचिस्तान, उ. प्र. का बेलन घाटी, बुर्जहोम व गुफ्फरकराल (कश्मीर), मेहरगढ़, प. बंगाल, प्रायद्वीपीय भारत, कोटदीजी आदि मुख्य स्थल थे।

- **कृषि कार्य का आरंभ**, **पशुपालन** आरंभ, कपड़ा बुनाई, आग से भोजन पकाना, मनुष्य स्थायी निवासी बन गया, खर एवं बांस की झोपड़ी बनाया जाने लगा, नाव का निर्माण हुआ।
- चिरांद और सेनआर नामक स्थान हड्डी के उपकरण के लिए प्रसिद्ध हैं।
- बेलनघाटी (उ.प्र.) से चावल का साक्ष्य, मेहरगढ़ (7000 ई.पू.) से सर्वप्रथम कृषि का साक्ष्य, आदमगढ़ और बागोर (5000ई. पू.) से प्राचीनतम पशुपालन के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
- **बुर्जहोम** (कश्मीर) के निवासी मृदभांडों का प्रयोग करते थे। यहां से मनुष्यों को कुत्तों के साथ दफनाने का साक्ष्य प्राप्त हुआ है।
- कोल्डीहवा से चावल का साक्ष्य प्राप्त हुआ है। अवरंजीखेड़ा कपड़े के छपाई के अवशेष मिले है

ताम्रपाषाण काल

- मानव जीवन में सर्वप्रथम जिस धातु का प्रयोग किया गया, वह तांबा (लगभग पांच हजार ई.पू.) था।

हड़प्पा सभ्यता

- सिंधु घाटी सभ्यता या हडप्पा सभ्यता ताम्रपाषाणिक थी। 1921 में हड़प्पा स्थल पर चला था। इसलिए इसे सिंधु घाटी की सभ्यता भी कहते हैं।
- इसका रहस्योद्घाटन **1856** ई. में **करांची और लाहौर** के बीच पटरी बिछाने के दौरान हुआ **जब विलियम ब्रन्टन** तथा **जान ब्रन्टन** ने दो प्राचीन नगरों का पता लगाया।

भौगोलिक विस्तार

- सैंघव सभ्यता की क्षेत्राकृति **त्रिभुजाकार** है इसकी उत्तरी सीमा **जम्मू (मांडा)**, दक्षिणी नर्मदा के मुहाने **भगतराव**, पूर्वी **आलमगीरपुर (उ.प्र.)** तथा पश्चिमी सीमा **ब्लूचिस्तान के मकरान**-मुत्कागडोर तक थी। यह उत्तर से दक्षिण तक 1100 किमी. तथा पूर्व से पश्चिम तक 1600 किमी. विस्तृत थी।

सिंधु कालीन समाज

- सैंधव समाज में कृषक, शिल्पकार, मजदूर वर्ग आदि सामान्य जन थे तथा पुरोहित, अधिकारी, व्यापारी व चिकित्सक आदि विशिष्ट जन थे। सबसे प्रभावशाली वर्ग व्यापारियों का था।
- सैंघव समाज **मातृप्रधान** था।
- सिंघ तथा पंजाब के लोग **गेहूं और जौ**, राजस्थान के लोग **जौ**, गुजरात के रंगपुर के लोग **चावल**, **बाजरा** खाते थे।

प्रमुख हड़प्पा स्थल

- **भिर्राना प्राचीनतम तथा राखीगढ़ी सबसे बड़ा स्थल**: हरियाणा के फतेहाबाद स्थित **भिर्राना** हड़प्पा का प्राचीनतम स्थल था। सी-14 कार्बन डेटिंग के अनुसार भिर्राना का काल 7570 ईपू. से 6200 ई.पू. था। पहले मेहरगढ़ को हड़प्पा का प्राचीनतम स्थल माना जाता था।
- हरियाणा का ही **राखीगढ़ी** स्थल मोहनजोदड़ो व गुजरात के धोलावीरा से भी बड़ा था।
- **हड़प्पा:** यह पाकिस्तान के पंजाब राज्य के मांटगोमरी जिले में रावी नदी के बायें तट पर स्थित है। **1921** में **दयाराम साहनी** ने इसका सर्वेक्षण किया।
- यहाँ से प्राप्त मुख्य चीजों में हैं; अनाज कूटने के 18 वृताकार चबूतरे, 12 कक्षों वाले अन्नागार, कब्रिस्तान आर-37, ताबूतों में शवाधान का साक्ष्य
- यहां से पीतल की इक्का गाड़ी, शंख का बना बैल, सांप को दबाए गरुड़ चित्रित मुद्रा, स्त्री के गर्भ से निकलता पौधे का चित्र, कागज का साक्ष्य, शव के साथ बर्तन व आभूषण, मजदूरों के आवास प्राप्त हुये हैं।
- **मोहनजोदड़ो:** यह सिंध के लरकाना जिला में स्थित है। इसकी खोज **1922** में **राखालदास बनर्जी** ने की थी। मोहनजोदड़ो का अर्थ होता है **मृतकों का टीला।**
- यहां का सबसे महत्वपूर्ण स्थल **वृहत्त स्नानागार, विशाल अन्नागार**।
- **कालीबंगा:** यह राजस्थान के गंगानगर जिला में स्थित है। कालीबंगा का अर्थ **काली चूड़ियां** होता है। जुते खेत भी यहां से प्राप्त हुये है।
- **लोथल:** यह गुजरात के अहमदाबाद जिला में स्थित है। भोगवा नदी के तट पर स्थित थी। नाप तौल पैमाने की खोज लोथल मे हुयी। लोथल सैंधव सभ्यता का मुख्य **बंदरगाह** था। यहां के उत्खन्न से डॉकयार्ड मिला है। यहां से रंगाई का कुण्ड बनाने का कारखाना,

घोड़े की लघु मृण्मूर्ति, खिलौना नाव, मिट्टी के बर्तन पर चालाक लोमड़ी की कहानीनुमा चित्रांकन प्राप्त हुये हैं। फारसी मुद्रा भी प्राप्त हुयी है।

- **चन्हूदड़ो** - वक्राकार ईंट ईटों पर बिल्ली का पीछा करते कुत्ते के पंजों का निशान, अलंकृत हाथी, कंधा, उस्तरा, चार पहियों वाली गाड़ी, तीन घड़ियाल एवं दो मछलियों वाली मुद्रा। लिपिस्टक भी प्राप्त हुयी है।
- **धौलावीराः** गुजरात के कच्छ जिले में स्थित थी। यहां से जल निकास के साक्ष्य नहीं मिले हैं।
- **रंगपुर**: गुजरात के अहमदाबाद जिला में स्थित था। यहां से धान की भूसी व ज्वार, बाजरा के साक्ष्य मिले हैं।
- **रोपड़ः** सतलज नदी के किनारे पंजाब स्थित था। यहां से मानव के साथ कुत्ते के शवाधान का साक्ष्य मिला है।
- **सुरकोटड़ा**: यह गुजरात के कच्छ जिला में स्थित है
- **आलमगीरपुर** - उत्तर प्रदेश के मेरठ जिला में 'हिंडन नदी के किनारे स्थित है।
- **कोटदीजी** - सिंध प्रांत के खैरपुर में स्थित है। यहां से प्राक् हड़प्पा के साक्ष्य प्राप्त हुये हैं।

आर्थिक स्थिति

- **कपास की खेती** का आरंभ सर्वप्रथम उन्हीं लोगों ने किया। इसलिए यूनानियों ने इस क्षेत्र को **'सिंडोन'** नाम दिया।
- मुख्य कृषि उत्पाद थे- खजूर, सरसों, मटर, बाजरा, कपास, केला, तरबूज, नारियाल, जौ, तिल, अनार आदि।
- चावल के अवशेष **रंगपुर** तथा **लोथल** से प्राप्त हुए हैं।
- हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो से छः घारियों वाले जौ के साक्ष्य मिले हैं।
- **घोड़े** तथा **गाय** पालने का साक्ष्य नहीं मिला है परंतु **हाथी को पालतु** बना लिया गया था।
- व्यापार मुख्यतः विनिमय पद्धति से किया जाता था तथा तौल की इकाई संभवत: **16 के अनुपात** में थी।
- मेसापोटामियाई वर्णित शहर **मेलुहा** सिंध क्षेत्र का ही प्राचीन नाम है। मेसोपोटामिया (ईराक) सैंधव के विनिमय स्थल **'दिलमुन'** और **'मकान'** थे।
- दिलमुन संभवत: बहरीन द्वीप था। माकन संभवतः ओमान था।

- मेसोपोटामिया में सैंधव व्यापारियों के निवास के साक्ष्य मिले हैं परन्तु मेसोपोटामिया बस्तियों के साक्ष्य सैंधव स्थलों में नहीं मिले हैं।
- मेसोपोटामिया से आयातित वस्तुएं थीं ऊन, खुशबूदार तेल, कपड़े आदि। सैंधव सभ्यता से निर्यात की वस्तुएं थीं- तांबा, मोर, हाथी दांत की वस्तुएं, कंधा, सूती वस्त्र मोहनजोदड़ो एवं हड़प्पा से प्राप्त बेलनाकार फारस की मुद्रायें प्राप्त हुई हैं।
- हड़प्पा से प्राप्त मुहरों के चित्र में मानव एवं बैल का अंकन है
- बर्तन बनाना अत्यंत महत्वपूर्ण उद्योग था।
- अन्य महत्वपूर्ण उद्योग-धंधे - बुनाई, मुद्रा निर्माण, मनका निर्माण, ईंट निर्माण, धातु उद्योग, मूर्ति निर्माण।
- मोहनजोदड़ो से ईंट-भट्टों के अवशेष मिले हैं।
- सबसे ज्यादा मिट्टी के बर्तन मिले हैं उसके बाद मिले बर्तन, तांबे के हैं।

कला तथा शिल्प

- मोहनजोदड़ो से प्राप्त **नृत्य की मुद्रा** में स्त्री की कांस्य प्रतिमा।
- मोहनजोदड़ो से प्राप्त **दाढ़ी वाले व्यक्ति** की मूर्ति भी प्रसिद्ध कलाकृति है। संभवतः यह पुजारी की प्रतिमा है।
- अधिकतर मनके सेलखड़ी के बने हैं। सोने एवं चांदी के मनके भी पाए गये हैं। मोहनजोदड़ों से गहने भी पाए गये हैं।
- चन्हूदड़ो एवं लोथल में मनके बनाने के कारखाने थे।
- स्वास्तिक चिन्ह सैंधव सभ्यता की देन माना जाता है।
- सैंधव सभ्यता के लोग सेलखड़ी, लालपत्थर, फीरोजा, गोमेद व अर्धकीमती पत्थर का उपयोग मनके बनाने में करते थे।
- लिपि: सिंधु लिपि में लगभग 64 मूल चिन्ह एवं 250 से 400 तक अक्षर हैं जो सेलखड़ी के आयताकार मुहरों, तांबे की गुटिकाओं आदि पर मिले हैं। यह लिपि भाव **चित्रात्मक** थी। लिपि का सबसे ज्यादा प्रचलित चिन्ह मछली का है। सैंधव भाषा अभी तक अपठनीय है।
- मुहरें: संभवतः इन मुहरों का उपयोग उन वस्तुओं की गांठ पर मुहर लगाने के लिए किया जाता था। जो निर्यात की जाती थीं। मुहरें बेलनाकार, मृताकार, वर्गाकार तथा आयताकार रूप में हैं।

- अधिकांश मुहरें सेलखड़ी की बनी है। विभिन्न स्थलों से दो हजार से ज्यादा मुहरें प्राप्त हुई हैं। मुहरों पर सर्वाधिक चित्र एक **सींग वाले सांड (वृषभ)** की है।

धर्म एवं दर्शन

- सैंधव काल में प्रचलित आस्थाएं- मातृ पूजा, पृथ्वी व उर्वरता की पूजा, नाग-यक्ष पूजा, वृक्ष (पीपल आदि) व पशुओं की पूजा, अग्निपूजा, मातृदेवी, लिंग उपासना थीं।
- लिंग पूजा के प्रमाण भी प्राप्त हुये हैं।
- मोहनजोदड़ों एक मुहर पर योगी की मुद्रा में बैठा एक व्यक्ति है। यह देवता बकरी, हाथी, शेर तथा हिरण से घिरा हुआ है। इसे पशुपति शिव माना जाता है।
- कालीबंगा से अग्निवेदिकाएं मिली हैं। अर्थात वहां अग्निपूजा प्रचलित थी।
- मृतक को सामान्यतः उत्तर-दक्षिण दिशा में दफनाया जाता था। रोपड़ में एक कंकाल पश्चिम पूर्व, लोथल में पूर्व-पश्चिम तथा कालीबंगा में दक्षिण-उत्तर दिशा में मिला।
- हड़प्पा से **आर-37 कब्रिस्तान** मिला है तथा एक ताबूत मिला है। सामूहिक नरकंकाल एवं दाह संस्कार के साक्ष्य मोहनजोदड़ो से मिला है।

नगर-योजनॉ

- सैंधव सभ्यता की सबसे उत्कृष्ट विशेषता उसकी नगर योजना थी। उनके छः स्थलों को ही नगरों की संज्ञा दी जाती है- हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, कालीबंगा, लोथल, चन्हूदड़ो, बनावली।
- नगरें दो भागों में विभाजित थीं। नगर संरचना (धौलावीरा को छोड़कर)। पश्चिमी भाग शासक वर्ग के लिए तथा पूर्वी भाग आमजन के लिए था
- नगरों की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता थी जल निकास हेतु नालियों की व्यवस्था नगर की सड़कें एक दूसरे को **समकोण** पर काटती थीं सड़कें कच्ची थीं।
- मकानों में पक्की एवं बिना पकी ईंटों का प्रयोग होता था। मकान बहुमंजिले थे।
- लोथल को छोड़कर सभी नगरों के मकानों के मुख्य द्वार गलियों में खुलते थे।

पतन के कारण

- आर्य आक्रमण: गार्डन चाइल्ड, व्हीलर
- पारिस्थितिक असंतुलन: फेयर सर्विस
- नदी मार्ग में परिवर्तन: एम.एस. वत्स
- बाढ़- मैक व एस.आर. राव

ऋग्वैदिक काल(1500-1000 ई.पू.)

- सिंधु घाटी सभ्यता का अंत लगभग 1750 ई. पू. के आसपास हुआ और 1500 ई. पू. से पूर्व वैदिक काल की शुरुआत मानी जाती है। वैदिक काल का विस्तार लगभग 1500 ई.पू. से लगभग 500 ई.पू. तक मान सकते हैं।
- आर्य भाषा का सूचक है।

वैदिक साहित्य

- वैदिक साहित्य में चारों वेद, ब्राह्मण ग्रंथ, आरण्यक एवं उपनिषद् शामिल किए जाते हैं। चारों वेद में ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, तथा अथर्ववेद शामिल होते हैं। इनमें ऋग्वेद की रचना प्रारंभिक वैदिक काल (1500-1000 ई. पूर्व) में हुई थी, बाकी तीनों वेदों का रचनाकाल उत्तर वैदिक काल (1000-600 ईसापूर्व) है।

ऋग्वेद

- ऋग्वेद का विभाजन क्रमशः **'मण्डल'**, **'सूक्त'** एवं **'ऋचाओं** में है। इसमें कुल **दस मंडल**, **1028** सूक्त एवं 10,580 ऋचाएं हैं। इसके दूसरे तथा सातवें को सबसे पहले की रचना माना गया है।
- दूसरे मंडल से सातवें मंडल तक की वंश मंडल भी कहा गया है। ऋग्वेद के आठवें मंडल में मिली हस्तलिखित प्रतियों के परिशिष्ट को **'खिल'** कहा गया है। इसकी ऋचाओं का गान करने वाले को **होतृ** कहते थे।
- **पहले एवं दसवें मंडल** को क्षेपक माना गया है। दसवें मंडल में ही 'पुरुष सूक्त' है, जिसमें चारों वर्णों का साक्ष्य है।

यजुर्वेद

- इसमें **यज्ञ संबंधी** अनुष्ठानों का वर्णन है। इसका संकलन **गद्य और पद्य** दोनों में किया गया है।
- यज्ञ संपन्न कराने को **अध्वर्यु** कहते है।

सामवेद

- इसके अधिकांश श्लोक ऋग्वेद से लिया गया है। जिनमें 75 ही नए हैं। इसके गायन **उद्गातृ** करते थे।
- सामवेद की महत्वपूर्ण शाखाएं **कौथुमीय, जैमिनीय** एवं **रामायणीय** थी।

अथर्ववेद

- इसकी गणना **'त्रयी'** में नहीं होती। इस संहिता का विभाजन 'मण्डलों' में न होकर **'काण्डों'** में है।
- इस वेद के अधिकांश सूक्त **जादू-टोने** पर आधारित हैं।

उपवेद

- आयुर्वेदवेद -ऋग्वेद
- गंधर्ववेद- सामवेद
- धनुर्वेद - यजुर्वेद
- शिल्पवेद - अथर्ववेद

- उपनिषद - उपनिषद का अर्थ है समीप बैठना। उपनिषद् वैदिक साहित्य के अंतिम भाग हैं अतः इन्हें **वेदांत** भी कहा जाता है। उपनिषदों की संख्या **108** है, जिसमें ईश, केन, कठ, मांडूक्य, मुण्डक, प्रश्न आदि 12 उपनिषद प्रमुख हैं।
- भारत का प्रसिद्ध राष्ट्रीय आदर्श वाक्य सत्यमेव जयते **मुण्डकोपनिषद (अथर्ववेद)** से ही लिया गया है

छह वेदांग

वैदिक ग्रंथों को समझने तथा वैदिक कर्मकांडों के प्रतिपादन में सहायतार्थ 'वेदांग की रचना की गई। इन्हें वैदिक साहित्य का भाग नहीं माना जाता है। इनका सर्वप्रथम उल्लेख मुंडक उपनिषद में मिलता है। इनकी संख्या 6 है:

1. शिक्षा
2. कल्प सूत्र
3. व्याकरण
4. निरुक्त
5. छन्द
6. ज्योतिष

आर्यों का मूल निवास

- बाल गंगाधर तिलक ने अपनी पुस्तक **'दि आर्कटिक होम ऑफ द आर्यन्स'** में आयो का मूल निवास स्थान आर्कटिक प्रदेश या उत्तरी ध्रुव माना है।
- **मध्य एशिया** - मैक्स मूलर
- **उ० ध्रुव** - बी.जी. तिलक
- **तिब्बत** - दयानन्द सरस्वती
- ईरानी भाषा के सबसे प्राचीन ग्रंथ **'अवेस्ता'** और **ऋग्वेद** में अनेक समानताएं हैं। दोनों में न केवल अनेक देवताओं के बल्कि सामाजिक वर्गों के नाम भी समान हैं।
- इराक से प्राप्त 1600 ई.पू. के **कस्सी अभिलेखों** में और ई.पू. चौदहवीं सदी के मितन्नी अभिलेखों में जिन आर्य नामों का उल्लेख मिलता है,
- **एशिया माईनर (तुर्की)** के **बोगोजकोई अभिलेख** में **इंद्र, मित्र, वरुण व नासत्य** का उल्लेख है। इन्हीं देवताओं की अराधना आर्य लोग करते थे।
- **सिंधु** ऋग्वैदिक आर्यों की सबसे प्रमुख नदी थी और इसका उन्होंने बार-बार उल्लेख किया है। दूसरी नदी जिसका उन्होंने कई बार उल्लेख किया है **'सरस्वती'** थी, जो अब राजस्थान के रेगिस्तान में लुप्त हो गया है। सरस्वती नदी को **नदीतमा** कहा गया है।
- झेलम (वितस्ता), चिनाब (अस्किनी), रावी (परुष्णी) तथा सतलज (शुतुद्री) अन्य नदियां थीं।
- ऋग्वेद में गंगा नदी का एक बार तथा यमुना का 3 बार उल्लेख हुआ है। ऋग्वेद में नदियों की संख्या लगभग 25 बतायी गई है।
- **'दशराज्ञ युद्ध'** भरत वर्ष का राजा सुदास और दस राजाओं (पांच आर्य व पांच अनार्य) के बीच **पुरुष्णी (रावी)** नदी के तट पर हुआ। सुदास की ओर से वशिष्ठ व दस राजाओं की ओर से विश्वामित्र पुरोहित थे। सुदाश विजयी हुआ।
- भरत नाम का उल्लेख पहली बार ऋग्वेद में आया है और इसी के आधार पर हमारे देश का नाम भारत वर्ष पड़ा।

सामाजिक जीवन

- आर्य समाज **पितृसत्तात्मक** था, परन्तु नारी को मातृरूप में पर्याप्त सम्मान प्राप्त था। वह अपने पति के साथ अनुष्ठानों में भाग लेती थी।
- **चावल और जौ** दो मुख्य खाद्य फसल थे।

- ऋग्वेद में सोमरस की प्रशंसा की गयी है। सोमवल्ली मूजवंत पर्वत पर अथवा कीकटों के देश में उत्पन्न होती थी।
- आर्य प्रमुखतः तीन प्रकार के वस्त्र धारण करते थे (1) वास (2) अधिवास तथा (3) नीवी
- शरीर के नीचे के भाग पर वास पहना जाता था, शरीर के ऊपरी भाग पर अधिवास पहना जाता था एवं नीवी को वास के नीचे पहना जाता था।
- पर्दे की प्रथा नहीं थी। शिक्षा के द्वार स्त्रियों के लिए भी खुले थे। **लोपामुद्रा, विश्ववरा, अपाला, सिक्ता** तथा **घोषा** ने तो कई मन्त्रों की रचना की थी और ऋषि पद को प्राप्त कर लिया था।
- **विष्पला** नामक स्त्री लड़ाई में गयी थी। स्त्रियों को यज्ञ करने का भी अधिकार था। विवाह के मामलों में स्त्रियों को बड़ी स्वतंत्रता थी। वे अपनी रुचि के अनुसार विवाह करती "थीं।
- वेद में कहीं भी बाल-विवाह का प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से उल्लेख नहीं मिलता।
- चार वर्णों ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र का उल्लेख पुरुषक्त में मिलता है।
- ऋग्वेद के **10वें मण्डल** में पहली बार शूद्र का उल्लेख हुआ है। ऋग्वेद में 'वर्ण' शब्द का प्रयोग रंग के अर्थ में हुआ है।
- व्यावसायिक स्वतन्त्रता का सबसे अच्छा उदाहरण ऋग्वेद का वह मंत्र प्रस्तुत करता जिसमें एक ऋषि कहता है कि मैं कवि हूँ, मेरी माता आटा पीसती है और पिता वैद्य है।'

राजनैतिक संरचना

- ऋग्वेद में आर्यों के पांच कबीले पंचजन्य कहे जाते थे। इनमें शामिल थे, अनु, द्रुह्यु, पुरु, तुर्वस व यदु।
- कुल या परिवार कुल या परिवार सामाजिक व्यवस्था के साथ-साथ राजनैतिक व्यवस्था की इकाई था। परिवार के प्रमुख को 'कुल' या 'गृहपति' कहा जाता था।
- **ग्रामः** कई गृह या कुल या परिवार के समूहों को मिलाकर ग्राम बनता था। इसका प्रधान ग्रामणी था
- **विश**: ग्राम के ऊपर 'विश' थे। विश का प्रधान 'विशपति' कहलाता था।
- **जनः** कई विशों के समूह को जन कहा जाता था। वेद में जन का प्रयोग 275 बार हुआ है।

- **राष्ट्रः** सम्पूर्ण राज्य के लिए 'राष्ट्र' शब्द का प्रयोग किया जाता था। ऋग्वेद में 'राष्ट्र' के पर्यायवाची रूप में 'गण' शब्द का भी उल्लेख मिलता है।
- राजा को 'जन का रक्षक' (गोप्ता जनस्य) दुर्गा का भेदन करने वाला (पुराभेता) कहा गया है।
- राजा का प्रमुख कर्त्तव्य प्रजा की रक्षा करना था। रक्षा के बदले प्रजा उसे बलि नामक कर देती थी।
- युद्ध के लिए राजा के पास सेना होती थी।
- **'सभा', 'समिति'** और **'विद्य'** नामक संस्थाएं राजा को निरंकुशता पर नियंत्रण रखती थीं। **'सभा'** कुलीन अथवा वृद्ध मनुष्यों को संस्था थी जिसमें उच्च कुल में उत्पन्न व्यक्ति ही भाग ले सकते थे। **समिति** सर्वसाधारण को सभा होती थी, जिसमें जनों के सभी व्यक्ति अथवा परिवारों के प्रमुख भाग ले सकते थे।
- **अथर्ववेद** में सभा और समिति को 'प्रजापति की दो पुत्रियां' कहा गया है।
- युद्ध मुख्य रूप से पशुओं के लिए होता था।
- कुलपति (परिवार का मुखिया), विशपति "(विश का प्रधान), ब्राजपति (चरागाह का अधिकारी), ग्रामणी (ग्राम का प्रधान), स्पेश (गुप्तचर) तथा दूत नामक अधिकारी भी काफी महत्वपूर्ण थे।
- शारीरिक दण्ड तथा जुर्माना किये जाते थे। हत्या करने के अपराध में धनदान द्वारा मुक्त होने की प्रथा थी। एक व्यक्ति को **'शतदाय'** कहा गया है क्योंकि इसके जान की कीमत 100 गायें थीं। सबसे बड़ा अपराध पशुचोरी को माना जाता था।

आर्थिक अवस्था

- ऋग्वेद में पशुपालन का स्थान सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान था। पालतू पशुओं में गाय, बैल, भेड़, बकरी, गधे आदि प्रमुख थे।
- आर्यों के जीवन में गाय का विशेष महत्व था। उसे अघन्या' समझा जाता था।
- पुत्री को **दौहित्री** कहा जाता था क्योंकि वह दूध दुहती थी।
- **गविष्टि** (गाय की खोज) के लिए आर्यों के विभिन्न कबीलों के आपस में और अनार्य कबीलों के साथ युद्ध होते रहते थे।
- ऋग्वेद में फसलें, हंसिया और खेती के सभी कार्य, जैसे- जुताई, बुवाई, सिंचाई, कटाई और मड़ाई आदि का उल्लेख मिलता है।

- ऋग्वेद में **हल** का भी उल्लेख मिलता है। सिंचाई के लिए **कुएं का प्रयोग** होता था अथवा नदी से नहरें निकाली जाती थीं। नहर के लिए **'कुल्चा'** शब्द आया है। खाद का भी प्रयोग होता था। आर्यों को 5 ऋतुओं का ज्ञान था। आर्य लोग खाद्य फसलों के लिए मात्र **'यव'** शब्द का प्रयोग करते थे।
- यद्यपि ऋग्वेद में समुद्र का उल्लेख मिलता है, तथापि इससे विदेशी **व्यापार की पुष्टि नहीं** होती। समुद्र शब्द का व्यवहार संभवतः बड़ी नदियों या सचित जल के लिए किया गया है।
- **'वणिक'** या **'निष्क'** व्यापार या सिक्के के प्रचलन की पुष्टि नहीं करते। ये विनिमय के साधन थे।
- सुदखोरों के लिए बेकनाट का प्रयोग हुआ है।

धार्मिक जीवन

- ऋग्वैदिक आर्य प्रकृति **पूजक एवं बहुदेववादी** थे। प्रकृति की जिन शक्तियों से आर्य प्रभावित थे वे उनकी पूजा करते थे। 33 देवताओं का उल्लेख मिलता है जिनको तीन श्रेणियों में विभक्त किया गया है;

1. पार्थिवः पृथ्वी, अग्नि, सोम, बृहस्पति इत्यादि।
2. अन्तरिक्ष देवताः इन्द्र, वरुण, वायु, मरुत, रुद्र
3. आकाशीय देवताः वरुण, मित्र, सूर्य, उषा, सविता, अश्विन

- देवताओं में सर्वोच्च स्थान युद्ध के देवता **इन्द्र** को दिया गया है। इसकी स्तुति के लिए लगभग **250 मंत्रों** की रचना की गयी है। इन्द्र शक्ति, नैतिकता एवं न्याय का देवता था।
- **अग्नि** दूसरा प्रमुख देवता था। उनके सम्मान में 200 मंत्रों की रचना हुई है। वह देवताओं और मानवों के बीच सम्पर्क का काम करता था।
- तीसरा महत्वपूर्ण देवता **वरुण** था।
- सोमः वनस्पति का देवता
- अश्विन: चिकित्सा का देवता
- पूषन: पशुओं का देवता, (उतरवैदिक काल में शुद्रों के देवता हो गये) ।
- देविओं में प्रमुख **अदिति** एवं **ऊषा** थीं।
- ऋग्वेदिक लोग देवताओं से मोक्ष की नहीं, बल्कि शतवर्षीय पुत्र, धन-धान्य और विजय की कामना करते थे।

उत्तरवैदिक काल (1000-600 ई.पू.)

- इस काल का इतिहास का आधार तीन वेद: यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद ग्रंथ, अरण्यकों एवं उपनिषद हैं।

राजनीतिक संगठन

- दो प्रमुख कबीले भरत व पुरु मिलकर कुरु, तुर्वसु व किवि मिलकर पांचाल हो गये। कुरु और पांचाल को सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधि बताया गया है।
- राजा का पद अब वंशानुगत हो गया। राजा के पद के महत्त्व में वृद्धि का उल्लेख उत्तर वैदिक साहित्य में मिलता है।
- विभिन्न प्रकार के राजत्व की प्राप्ति के लिए यज्ञों का महत्त्व बढ़ गया।
- राजा को सलाह देने के लिए स्थायी सलाहकार भी होने लगे, जिन्हें **रत्निन** नाम से जाना जाता है।
- **'उग्र'** एवं **'जीवग्रह'** इस काल में पुलिस गुप्तचर अधिकारी थे।
- ब्राह्मण की हत्या सबसे बड़ा अपराध था। इसके लिए पुरोहित तक को प्राणदण्ड की सजा का प्रावधान था।

सामाजिक जीवन

- **जन** अथवा **कबीले** अब अपना घुमक्कड़ जीवन छोड़कर स्थायी रूप से एक स्थान पर बस गये और वह क्षेत्र उनका **'जनपद'** कहा जाने लगा।
- इस काल में **गोत्र प्रथा** प्रचलित हुयी।
- आर्यों के स्थायी जीवन में ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य का सामाजिक विभाजन अब पहले की अपेक्षा अधिक कठोर होने लगा और इसमें एक चौथा वर्ण **शूद्र** भी जुड़ गया
- **ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य** को **द्विज** कहा गया।
- शूद्रों को वैदिक शिक्षा का अधिकार नहीं दिया गया।
- एक विवाह के साथ ही बहुविवाह की प्रथा का भी प्रचलन था।
- अनुलोम तथा प्रतिलोम विवाह प्रचलित थे
- यम एवं नचिकेता की कहानी **कठोपनिषद** में हैं।
- लोपामुद्रा अगस्त्य की पत्नी थी।

- उत्तर वैदिक ग्रंथों में केवल तीन आश्रम ब्रह्मचर्य, गृहस्थ व वानप्रस्थ का उल्लेख मिलता है।
- सर्वप्रथम **जाबालोपनिषद** में चारों आश्रम का उल्लेख है।

आर्थिक जीवन

- आर्य ग्रामीण बस्तियों में निवास करने लगे। लौह तकनीक के ज्ञान ने कृषि के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।
- शीत काल में जौ तथा वर्षा ऋतु में धान बोया जाता था। चावल के लिए **व्रीही** शब्द का प्रयोग हुआ है।
- इस समय मिट्टी के एक विशेष प्रकार के बर्तन बनाये जाते थे, जिन्हें चित्रित **घूसर मृदमाण्ड** कहा जाता है।
- उत्तर वैदिक काल में **मुद्रा** का प्रचलन तो हो चुका था, **'निष्क'** जो ऋग्वैदिक काल में आभूषण था, अब मुद्रा माना जाने लगा था।
- वैदिक काल में जिन धातुओं का प्रथम प्रयोग हुआ उनमें **तांबा** पहला था।

धार्मिक जीवन एवं दर्शन

- कई ऋग्वैदिक देवताओं का महत्व घट गया तथा उनके स्थान पर नवीन देवताओं की प्रतिष्ठा हुई।
- ऋग्वैदिक काल के इन्द्र, वरुण आदि देवताओं का स्थान प्रजापति, विष्णु एवं रुद्र (शिव) ने ले लिया।
- रूद्र (पशुओं का देवता) शिव या पशुपति कहलाने लगा। विष्णु पालनकर्ता के रूप में प्रतिष्ठित हुए। इस प्रकार उत्तर वैदिक काल में त्रिमूर्ति की भावना का विकास हुआ। ब्रह्मा, विष्णु और महेश ही प्रमुख देवता बन गये।
- **'पूषन'** जो पहले मवेशियों का देवता था, अब मुख्यतया शूद्रों का देवता बन गया।
- मुण्डक उपनिषद ने खुले हुए शब्दों में कर्मकाण्ड की निंदा की और उन्हें टूटी हुई नावें बताया।

महाजनपद व मगध साम्राज्य

- महात्मा बुद्ध के पूर्व भारतवर्ष 16 महाजनपदों में विभक्त था। बौद्ध ग्रंथ अंगुत्तरनिकाय में इनके नाम निम्न प्रकार मिलते हैं

जनपद	राजधानी
1. मगध	राजगृह (गिरिव्रज)
2. अंग	चम्पा
3. काशी	वाराणसी
4. कोशल	अयोध्या/श्रावस्ती
5. वज्जि	मिथिला/विदेह
6. चेदि	शक्तिमती
7. मल्ल	कुशावती
8. कुरु	इन्द्रप्रस्थ
9. वत्स	कौशाम्बी
10 पांचाल	अहिच्छत्र/कॉपिल्य
11. शूरसेन	मथुरा
12. मत्स्य	विराटनगर
13. अश्मक	पोतना
14. अवन्ति	उज्जयिनी एवं महिष्मती
15. कम्बोज	हाटक
16. गन्धार	तक्षशिला

मगध साम्राज्य का उदय

- पुराणों के अनुसार मगध के सबसे प्राचीन राजवंश का संस्थापक **वृहद्रथ** था। वह जरासंध का पिता था।
- मगध की आरम्भिक राजधानी **वसुमति या गिरिव्रज** थी।
- बिम्बिसार (544-492 ई.पू.): बौद्ध ग्रंथों के अनुसार मगध का प्रथम शासक **बिम्बिसार** था। वह हर्यक वंश का संस्थापक था। जैन साहित्य में **'श्रेणिक'** कहा गया है।
- आरम्भ में **गिरिव्रज** इसकी राजधानी थी, किन्तु बाद में **'राजगृह'** को उसने अपनी राजधानी बनाया।
- उसने अपने समय के प्रमुख राजवंशों से वैवाहिक संबंध स्थापित कर अपनी स्थिति सुदृढ़ की। उसने लिच्छवि गणराज्य के शासक चेटक की पुत्री **चेलना** के साथ विवाह कर मगध की उत्तरी सीमा को सुरक्षित किया। उसने कोशल नरेश प्रसेनजित की बहन **महाकोशला** के साथ विवाह कर स्थापित किया। उसने मद्र देश (कुरु के समीप) की राजकुमारी **क्षेमा** के साथ अपना विवाह कर मद्रों का सहयोग तथा समर्थन प्राप्त कर लिया
- जब अवंति का राजा प्रद्योत पांडु रोग (पीलिया) से पीड़ित हुआ तो उसने अपने राज वैद्य **जीवक** को उसके उपचार के लिए भेजा।

- उसने जैन तथा बौद्ध दोनों धर्मों को राजकीय सहायता व संरक्षण दिया था।
- अजातशत्रु (492-460 ई.पू.): अजातशत्रु ने अपने पिता बिम्बिसार की हत्या कर बलात् सिंहासन पर अधिकार कर लिया। उसे **'कुणिक'** कहा जाता था।
- उसके शासनकाल के आठवें वर्ष में बुद्ध को महापरिनिर्वाण प्राप्त हुआ था। उसके शासनकाल में राजगृह की सप्तपुर्णि गुफा में **प्रथम बौद्ध संगीति** का आयोजन किया गया था।
- उदयिन (लगभग 460-444 ई.पू.) : उदयिन ने **पाटलिपुत्र** नामक नगर की स्थापना है। इसे **कुसुमपुर** भी कहा जाता है। उसने राजगृह से यहां पर अपनी राजधानी स्थानान्तरित की। वह जैन मतानुयायी था।

शिशुनाग वंश (लगभग 412-344 ई.पू.)

- शिशुनाग ने अपनी राजधानी **वैशाली** में बनायी या **वैशाली** मगध साम्राज्य की दूसरी राजधानी बन गयी।
- कालाशोक (काकवर्ण) ने अपनी राजधानी पुनः पाटलिपुत्र में स्थानान्तरित कर दी। इसके बाद पाटलिपुत्र ही मगध की राजधानी रहा। उसके शासनकाल में **द्वितीय बौद्ध संगीति** हुई थी।

नन्दवंश (344-324/23 ई.पू.)

- इस वंश की स्थापना **उग्रसेन या महापद्मानंद** ने की। पुराणों में महापद्म को **'सर्वक्षत्रान्तक'** (सभी क्षत्रियों का नाश करने वाला) और **'द्वितीय परशुराम'** कहा गया है।
- इस वंश का अतिंम शासक **धननन्द** था, जो **सिकन्दर का समकालीन** था। नन्द शासक जैन धर्मावलम्बी थे।

भारत मे प्रथम विदेशी आक्रमण

- भारत पर पहला विदेशी आक्रमण ईरान के **हखामनी वंश** ने किया था। **साइरस** इस वंश का संस्थापक था।

सिकंदर का भारत अभियान

- मकदूनियाई शासक सिकंदर 326 ईपू. में बल्ख जीतते हुआ काबुल व हिंदुकुश पर्वत पहुंचा। तक्षशिला के शासक आंभी ने परास्त होने के बाद उसे सहयोग प्रदान किया। 326 ईपू. में **झेलम नदी** के तट पर राजा पोरस व सिकंदर के बीच **वितस्ता का युद्ध (हाइडेस्पीज का युद्ध)** हुआ जिसमें पोरस की पराजय हुयी परंतु सिकंदर उसकी वीरता से प्रसन्न हुआ।
- सिकंदर भारत में 19 महीने (326-325 ई. पू.) रहा। वह फिलिप को शासन सौंपकर वापस लौट गया और 323ई. पू. में **बेबिलोन** में उसका निधन हो गया।
- सिकंदर ने कई नगरों की स्थापना की; काबुल नदी के तट पर **सिकंदरिया** शहर, **निकैया** (विजयनगर) व **बुकाफेला** (अपने प्रिय घोड़े के नाम पर), बुकाफेल झेलम नदी के तट पर था।

वर्धमान महावीर व जैन धर्म

जैन धर्म की स्थापना जैनियों के प्रथम तीर्थंकर **ऋषभदेव** ने की थी। महावीर स्वामी का तीर्थंकरों की श्रृंखला में 24वाँ स्थान आता है। जैन धर्म के निम्नलिखित 24 तीर्थंकर थे;

1. ऋषभदेव (प्रतीकः सांड़)
2. अजितनाथ (प्रतीकः हाथी)
3. सम्भवनाथ (प्रतीक घोड़ा)

23. पार्श्वनाथ (प्रतीकः सांप)
24. महावीर (प्रतीकः सिंह)

- ऋषभदेव का जन्म अयोध्या में हुआ था जबकि 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ का जन्म काशी में हुआ था। पार्श्वनाथ का निर्वाण सम्मेद शिखर पर हुआ। उनके अनुयायियों को निग्रंथ कहा जाता है।
- पार्श्वनाथ द्वारा प्रतिपादित चार महाव्रत हैं; **सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह व अस्तेय** ।

- तीर्थंकरों को **अरिहंत** (आंतरिक शत्रुओं का नाशक), **जिन** (आंतरिक शत्रुओं पर विजय), **केवलिस** (सभी का ज्ञान) व **वित्रागी** (किसी के प्रति कोई लगाव नहीं) भी कहा जाता है।
- जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर महावीर स्वामी का जन्म 540 ई. पू. (599 ई. पू.) वैशाली के निकट **कुण्डग्राम** में हुआ था। उनके पिता **सिद्धार्थ** थे, उनकी माता का नाम **त्रिशला** था, जो लिच्छवि गणराज्य के प्रधान चेटक की बहन थी। मातृपक्ष से वे मगध के हर्यक राजाओं बिम्बिसार तथा अजातशत्रु के निकट संबंधी थे। बचपन में वे **वर्द्धमान** नाम से जाने जाते थे।
- **यशोदा** के साथ उनका विवाह हुआ, जिससे **ओणज्जा** (**प्रियदर्शना**) नाम की पुत्री पैदा हुई। ओणज्जा का विवाह **जामालि** से हुआ जो महावीर का प्रथम शिष्य था।
- जब वर्द्धमान **30 वर्ष** के हुए तो उन्होंने घर त्याग दिया
- 12 वर्ष की कठिन तपस्या के बाद **जम्भयग्राम** के समीप **ऋजुपालिका** नदी के तट पर महावीर को **'कैवल्य'** (सर्वोच्च ज्ञान) प्राप्त हुआ। इसी कारण उन्हें **'केवलिन'** की उपाधि मिली। अपने समस्त इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने के कारण वे **'जिन'** कहलाये। अपरिमित पराक्रम दिखाने के कारण उनका नाम **'महावीर'** पड़ा। उन्हें अर्हत (पूज्य) और **निग्रंथ** (बंधनहीन) भी कहा गया।
- चंपा, वैशाली, राजगृह आदि नगरों में घूम घूम कर उन्होंने अपने धर्म का प्रचार किया।
- **चन्दना** प्रथम जैन भिक्षुणी हुई और चम्पानगरी जैन धर्म का मुख्य केन्द्र बना
- 72 वर्ष की अवस्था में 468 ई.पू. में **पावापुरी** में उनका निधन हो गया।
- महावीर ने अपना पहला उपदेश (**प्राकृत भाषा** मे) राजगृह के निकट **विपुलाचल पहाड़ी** पर दिया।
- जैन धर्म में भी सांसारिक तृष्णा बंधन से मुक्ति को **'निर्वाण'** कहा गया है।
- जैन **त्रिरत्न** हैं; 1. सम्यक् दर्शन 2. सम्यक् ज्ञान व 3. सम्यक् चरित्र।
- कर्म का जीवन की ओर प्रवाह **आस्रव** कहलाता है। कर्मों का जीव की ओर बहाव रुक जाना **'संवर'** व जीव में व्याप्त कर्म की समाप्ति **'निर्जरा'** कहलाता है। मोक्ष की प्राप्ति के लिए महावीर ने तपश्चर्या एवं **कायाक्लेश व सल्लेखन** पर बल दिया है।
- महावीर ने पूर्ववर्ती चार महाव्रत में पांचवां व्रत **ब्रह्मचर्य** जोड़ा।
- गृहस्थ जीवन व्यतीत करने वाले जैनियों के लिए कठोरता में पर्याप्त कमी की गई है और इसलिए इन्हें **'अणुव्रत'** कहा गया है।

- जैन दर्शन **सप्तभंगी ज्ञान** अथवा **'स्यादवाद'** या **'अनेकांतवाद'** को मानता है। इसके अनुसार प्रत्येक प्रकार का ज्ञान (भति, श्रुति, अवधि, मनः पर्याय व कैवल्य) 7 स्वरूपों में व्यक्त किया जा सकता है।
- मगध में 12 वर्षों का भीषण 'अकाल पड़ा, फलतः भद्रबाहु अपने शिष्यों सहित कर्नाटक, चले गये। किन्तु कुछ अनुयायी स्थूलभद्र के साथ मगध में ही रुक गये।
- भद्रबाहु के वापस लौटने पर मगध के साधुओं से उनका गहरा मतभेद हो गया. जिसके परिणामस्वरुप जैन मत इस समय (लगभग 300 ई. पू.) **श्वेताम्बर** (थेरापंथी) तथा दिगम्बर (समैया) नामक दो सम्प्रदायों में बंट गया। जो लोग मगध में रह गये थे, श्वेताम्बर कहलाये। वे श्वेत वस्त्र धारण करते थे। भद्रबाहु और उनके समर्थक जो नग्न रहने में विश्वास करते थे, दिगम्बर कहे गये।
- **उज्जैन** व **मथुरा** जैन धर्म के दो प्रमुख केंद्र थे। दक्षिण भारत में **राष्ट्रकूटों, गंग, कदंब एवं चालुक्य** ने जैन धर्म को संरक्षण प्रदान किया। कलिंग का खारवेल भी जैन धर्म का अनुयायी था।
- चंपा के शासक दधिवाहन की पुत्री **चंदना** महावीर की पत्नी चंदना महावीर की पहली महिला भिक्षुणी थी।
- दिलवाड़ा में आदिनाथ, नेमिनाथ आदि के मंदिर प्राप्त होते हैं जबकि पार्श्वनाथ-आदिनाथ के मंदिर खजुराहों में हैं।
- जैन स्थापत्य के उदाहरण
  1. पावापुरी, राजगृह का मंदिर (बिहार)
  2. पारसनाथ का मंदिर (पार्श्वनाथ) (झारखंड)
  3. रणकपुर मंदिर (उदयगिरि)
  4. दिलवाड़ा मंदिर, माउंटआबू (गुजरात).
  5. बाघगुफा मंदिर, उदयगिरि (MP)
  6. हाथी गुफा मंदिर (उड़ीसा)
  7. इन्द्रसभा एलोरा (महाराष्ट्र)
  8. गिरनार मंदिर (गुजरात)
  9. बाहुबली या गोमतेश्वर प्रतिमा (कर्नाटक)

बौद्ध धर्म

- बौद्ध धर्म के संस्थापक **गौतम बुद्ध** थे। गौतम बुद्ध, जिनके बचपन का नाम **सिद्धार्थ** था, का जन्म लगभग 563 ई.पू. में कपिलवस्तु के **लुम्बिनी** में हुआ था।
- उनके पिता **शुद्धोधन** कपिलवस्तु के शाक्यगण के प्रधान थे। उनकी माता का नाम **मायादेवी** था, जो कोलिय गणराज्य की कन्या थी।
- उनके जन्म के एक सप्ताह के अंदर ही उनकी माता की मृत्यु हो गई, पालन पोषण उनकी **मौसी प्रजापति** गौतमी ने किया।
- 16 वर्ष की आयु में हो उनका विवाह **यशोधरा** (गोपा) से किया गया। उससे **राहुल** नामक पुत्र भी उत्पन्न हुआ।
- बिहार के लिए जाते हुए गौतम को सर्वप्रथम वृद्ध, दूसरी बार व्याधिग्रस्त मनुष्य, तीसरी बार एक मृतक तथा अंततः एक प्रसन्नचित संन्यासी को देखा। इन समस्याओं के ठोस हल के लिए उन्होंने अपनी पत्नी एवं पुत्र को सोते हुए छोड़कर 29 वर्ष की आयु में गृहत्याग दिया। जिसे बौद्ध ग्रंथों में 'महाभिनिष्क्रमण' की संज्ञा दी गई है।
- मार्ग में उन्होंने वैशाली के **आलारकलाम** तथा राजगृह के रामपुत्र के आश्रमों में जाकर ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास किया, परन्तु इससे उन्हें संतोष नहीं मिला।
- तपमार्ग को निरर्थक मानकर उन्होंने सुजाता नामक स्त्री के हाथों खीर खाकर अपनी तपस्या भंग कर दी।
- उरुवेला से वे गया चले आये और वहीं निरंजना नदी के किनारे एक वट वृक्ष के नीचे बैठकर ध्यान करने लगे। 35 वर्ष की आयु में वैशाखी पूर्णिमा की रात्रि को उन्हें पीपील वृक्ष के नीचे सच्चे ज्ञान (**संबोधि**) की प्राप्ति हुई और तथागत बुद्ध कहलाए।
- सर्वप्रथम उन्होंने अपना उपदेश ऋषिपत्तन या मृगदाव (सारनाथ) में अपने उन पाँच साथियों को दिया, जो उन्हें पाखण्डी बताकर उनका साथ छोड़ गये थे। इस घटना को 'धर्मचक्रप्रवर्तन' कहा जाता है।
- मगध के राजा बिम्बिसार ने उनके उपदेशों से प्रभावित होकर उनका धर्म स्वीकार कर लिया। मगध के अतिरिक्त वैशाली, कोसल इत्यादि जगहों में भी घूम-घूमकर बुद्ध ने अपने धर्म का प्रचार किया।
- उन्होंने सर्वाधिक **उपदेश श्रावस्ती (कोशल)** में दिया।

- धर्म प्रचार के पांचवे वर्ष बुद्ध ने महिलाओं को संघ में सम्मिलित होने की आज्ञा दे दो। **महाप्रजापति गौतमी** प्रथम भिक्षुणी बनी।
- बुद्ध से प्रभावित होकर कई तत्कालीन शासक उनके अनुयायी बन गये, जिनमें प्रमुख थे **अजातशत्रु** (मगध) **बिम्बिसार** (मगध), **प्रसेनजित** (कोशल) तथा **उदयिन** (कौशाम्बी)।
- उन्होंने अपना अंतिम उपदेश **सुमच्छ** को दिया।
- बौद्ध धर्म का प्रचार करते हुए **कुशीनगर** (उत्तर प्रदेश का नवीन जनपद) पहुंचे। वहीं चन्द या कुन्द नामक सुनार के घर भोजन करने के पश्चात उदर विकार होने के कारण 80 वर्ष की अवस्था में 483 ई. पू में **महापरिनिर्वाण** को प्राप्त हुए। मरने के पश्चात उनके अवशेषों को 8 भागों में विभाजित किया गया।

बौद्ध धर्म के प्रतीक

- **जन्मः** श्वेत हाथी, कमल व सांड
- **महाभिनिष्क्रमण या गृहत्यागः** अश्व
- **ज्ञान**: पीपल (बोधिवृक्ष)
- **निर्वाणः** पद चिन्ह
- **मृत्युः** स्तूप

बौद्ध दर्शन

- बौद्ध धर्म का मूलाधार चार आर्य सत्य है। ये हैं दुःख, दुःख समुदाय, दुःख-निरोध तथा दुःख निरोधगामिनी प्रतिपदा (अष्टगिक मार्ग)।
- अष्योगिक मार्ग दुख निरोधगामिनी प्रतिपदा है
- बुद्ध ने **अष्टांगिक मार्ग** के अन्तर्गत अधिक सुखपूर्ण जीवन व्यतीत करना वर्जित किया है। उन्होंने इस संबंध में **मध्यम मार्ग प्रतिपदा(मज्झिम प्रतिपदा)** का उपदेश दिया है।
- बौद्ध धर्म मूलतः **अनीश्वरवादी** है। सृष्टि का कारण ईश्वर नहीं माना गया है। बौद्ध धर्म में **आत्मा की परिकल्पना भी नहीं** है। बौद्ध धर्म में **पुनर्जन्म** की मान्यता है।
- बौद्ध धर्म के **त्रिरत्न** हैं; बुद्ध, धर्म तथा संघ
- संघ में प्रविष्ट होने को **'उपसम्पदा'** कहा जाता था।
- शिष्य **आनन्द** के कहने पर बुद्ध ने नारियों को संघ में प्रवेश की अनुमति दी। गृहस्थ जीवन में रहकर बौद्ध धर्म को मानने वाले को **'उपासक'** कहा जाता था।
- बौद्धों में बुद्ध पूर्णिमा या वैशाख पूर्णिमा को सबसे पवित्र त्योहार है। इसी दिन **बुद्ध का जन्म, ज्ञान की प्राप्ति** एवं **महापरिनिर्वाण** की प्राप्ति हुयी

- बुद्ध से जुड़े आठ स्थलों को **'अष्ट्महास्थान'** कहा जाता है। ये हैं: लुबिनी, गया, सारनाथ, कुशीनगर, श्रावस्ती, संकास्य, राजगृह तथा वैशाली।

चार बौद्ध संगीतियां

प्रथम संगीति

- **तिथि**: 483 ई. पू. (बुद्ध की मृत्यु के दो माह बाद)
- **स्थलः** सप्तपर्ण गुफा (राजगृह, बिहार)
- **शासक**: अजातशत्रु
- **संगीति अध्यक्षः** महाकस्सप
- **उपलब्धिः** बुद्ध की शिक्षाओं को संकलित कर उन्हें सुत (धर्म सिद्धांत) तथा विनय (आचार नियम) नामक दो पिटकों में विभाजित किया गया।

द्वितीय बौद्ध संगीति

- **तिथि**: 383 ई. पू. (बुद्ध के निर्वाण के सी वर्ष बाद)
- **स्थल**: चुल्लबग्ग, वैशाली (बिहार))
- **शासक** - कालाशोक (शिशुनाग वंश)
- **अध्यक्षः** शब्दकामी
- **उपलब्धि**: संघ दो सम्प्रदायों स्थविर (धेरवादी) व महासांधिक (सर्वास्तिवादी) में विभाजित।

तृतीय बौद्ध संगीति

- **तिथि**: 250 ई. पू. (बुद्ध की मृत्यु के 233 वर्ष पश्चात्)
- **स्थल**: पाटलिपुत्र (अशोकाराम विहार)
- **शासक**: अशोक (मौर्य वंश)
- **अध्यक्षः** मोग्गलिपुत तिस्स (या उपगुप्त)
- **उपलब्धिः** तृतीय पिटक 'अभिधम्म' का संकलन, जिसमें धर्म सिद्धांत की दार्शनिक व्याख्या को गयी है।

चतुर्थ बौद्ध संगीति

- **तिथिः** प्रथम शताब्दी ईस्वी स्थलः कुण्डलवन (कश्मीर)

- **अध्यक्षः** वसुमित्र
- **उपाध्यक्षः** अश्वघोष
- **शासक**: कनिष्क (कुषाण वंश)
- **उपलब्धिः** इसी समय बौद्ध धर्म हीनयान तथा महायान नामक दो स्पष्ट व स्वतंत्र संप्रदायों में विभक्त हो गया।
- सातवीं शताब्दी में बौद्धमत में तांत्रिकता का प्रवेश हो गया और तांत्रिक मत के भी तीन भेद भेद हो गये सहजयान, मंत्रयान और ब्रजयान।
- चीन, श्रीलंका, मध्य एशिया तथा कम्बोडिया इत्यादि में बौद्ध धर्म बेहद लोकप्रिय हुआ। कम्बोडिया ने तो 1989 ई. में बौद्ध धर्म का अपना राष्ट्रीय धर्म घोषित कर दिया
- बुद्ध ने अपने विचारों को जनसाधारण तक पहुंचाने के लिए सरल भाषा **पालि** का प्रयोग किया।
- मगध के **बिम्बिसार** व **अजातशत्रु**, कोसल के नरेश व उनकी बहन तथा कौशांबी का राजा **उदयन** बुद्ध के अनुयायी तथा समर्थक थे। आगे चलकर **अशोक**, कनिष्क, **हर्षवर्द्धन** एवं पाल शासकों का भी संरक्षण इस धर्म को प्राप्त हुआ।
- नागार्जुन, बसुमित्र, धर्मकीर्ति जैसे विद्वानों के प्रयास से भी धर्म के प्रसार में सहायता मिली। तक्षशिला, नालंदा, उदयंतपुरी, विक्रमशिला तथा अन्य बौद्ध विश्वविद्यालयों से संपूर्ण भारत के साथ विश्व में भी नाम कमाया। अनेक स्तूपों, विहारों एवं चैत्यों का भी निर्माण हुआ जो बौद्ध कला के उदाहरण हैं। बाघ, अजंता और एलोरा की गुफाओं की चित्रकारियां इसका उत्कृष्ट नमूना पेश करती हैं। **बोरोबुदुर का बौद्ध स्तूप** का निर्माण शैलेंद्र राजाओं ने इंडोनेशिया के जावा में कराया।

बौद्ध साहित्य

- 1. विनय पिटक: इसमें संघ सम्बंधी नियमों, दैनिक आचार-विचार व विधि-निषेधों का संग्रह है
- 2. सुत्तपिटक इसमें बौद्धधर्म के सीद्धांत तथा उपदेशों का संग्रह हैं।
- 3. अभिधम्म पिटकः यह पिटक प्रश्नोत्तर क्रम में है और इसमें दार्शनिक सिद्धांतों का संग्रह है।

षड् दर्शन

1. सांख्य दर्शन इसके प्रवर्तक महर्षि कपिल को माना जाता है।
2. योग दर्शन: इसका प्रवर्तक महर्षि पतंजलि को माना जाता है, जिनका ग्रन्थ "योग सूत्र' इस दर्शन का मूल है।
3. न्याय दर्शनः न्याय और वैशेषिक एक-दूसरे के साथ सम्बन्धित हैं। इनका प्रवर्तन गौतम ने किया
4. वैशेषिक दर्शन वैशेषिक दर्शन के प्रवर्तक महर्षि कणाद हैं इस दर्शन ने परमाणुवाद सिधांत का प्रतिपादन किया। इसके अनुसार संसार के सभी द्रव्यों का निर्माण चार प्रकार के परमाणुओं-पृथ्वी, जल, तेज, तथा वायु से होता है।
5. पूर्व मीमांसाः इसके प्रणेता जैमिनी हैं, जिनका ग्रन्थ मीमांसा सूत्र इस दर्शन का सूत्र है।
6. उत्तर मीमांसा या वेदांत वेदों का ज्ञानमार्गी अंश वेदान्त कहा जाता है। इसे उत्तर मीमांसा भी कहा जाता है। इसके प्रवर्तक वादनारायण है।

दक्षिण भारत मे भागवत (कृष्ण) धर्म

- मेगस्थनीज ने कृष्ण को **हेराक्लीज** कहा है।
- 12 आलवार संत है; पोरगे, भूतत्तालवार, मैयालवार, तिरुमालिसे आलवार, नम्मालवार, मधुरकवि आलवार, कुलशेखरालवार, पेरियालवार, आण्डाल, तांण्डरडिप्पोडरियालार तिरुरपाणोलवार व तिरुमणैवालवार
- **अन्दाल** एक महिला आलवार सन्त थी।
- दक्षिण भारत में वैष्णव धर्म से संबंधित संतों में रामानुज का प्रमुख स्थान है।

दक्षिण भारत मे शैव धर्म

- शिव लिंग का सर्वप्रथम साक्ष्य सिंधु सभ्यता में मिलता है। मोहनजुदाड़ो से प्राप्त पाशुपत शिव का आदि रूप माना है।
- मेगस्थनीज ने शिव को **डायोनिसस** कहा है। गुप्त काल में सर्वप्रथम शिव-विष्णु (हरिहर) तथा शिव-पार्वती पूजा का उल्लेख मिलता है।
- एलीफेन्टा की त्रिमूर्ति अत्यन्त विख्यात है। जिसमें ब्रह्मा, विष्णु और महेश हैं। ब्रह्मा सर्जक, विष्णु पालक और महेश संहार के प्रतीक हैं।
- शिव को हरिहर के रूप में विष्णु के साथ दर्शित किया गया था।

- दक्षिण भारत में शैव आंदोलन **63 नयनार** संतों द्वारा चलाया गया, जिनमें प्रमुख थे सुंदर मूर्ति, सम्बंदर आदि

मौर्यकाल (324 ई.पू. – 184 ई.पू.)

- भारत में ऐतिहासिक युग की शुरुआत मौर्यकाल से ही होती है क्योंकि इसके लिखित स्रोत उपलब्ध हैं। साहित्यिक स्रोत
- ब्राह्मण साहित्य में **पुराण** प्रमुख है। **अर्थशास्त्र** के लेखक कौटिल्य या चाणक्य हैं। अर्थशास्त्र को 15 अधिकरण एवं 180 प्रकरणों में विभक्त किया गया है। इसके अलावा विशाखादत्तकृत **'मुद्राराक्षस'** नाटक से भी मौर्य काल की जानकारी मिलती है। पाणिनी की **अष्टाध्यायी** व पतंजलि के **महाभाष्य** से भी मौय काल के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। घुण्डिराज की **मुद्राराक्षस पर टीका**, वाणभट्ट के **हर्षचरित**, कल्हण की **राजतरंगणी**, से मौर्ययुगीन विवरण मिलते हैं।
- पुराण नन्दों को 'शूद्र' कहते हैं। **विशाखादत्त** के **'मुद्राराक्षस'** नामक नाटक में चन्द्रगुप्त को 'वृषल' (शूद्रं) कहा गया है।
- बौद्ध साहित्यों में दीपवंश, महावंश, महावंशटीका, महाबोधिवंश शामिल हैं। महावंशटीका के अनुसार चाणक्य ने नंदवंश का नाश करके चन्द्रगुप्त मौर्य को जम्बूद्वीप का सम्राट बना दिया।
- **अहनानरु तथा मुरनानरु** से पता चलता है कि चन्द्रगुप्त ने तमिल प्रदेश पर आक्रमण किया था।

विदेशी स्त्रोत

- मेगास्थनीज यूनानी शासक सेल्यूकस का राजदूत था जो पाटलिपुत्र में लगभग 6 वर्षो तक रहा था। उसने अपनी पुस्तक **'इण्डिका'** में चन्द्रगुप्त मौर्य के विषय में तथा तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक अवस्था का विवरण दिया है।
- जस्टिन चन्द्रगुप्त को 'निम्नकुल में उत्पन्न' मानते हैं। उसने चन्द्रगुप्त को **सेंड्राकोटस** कहा है।

पुरातात्विक प्रमाण

- अशोक ऐसा पहला सम्राट था जिसने राजाओं को शिलालेखों पर खुदवाकर जनता के समक्ष रखा। अभिलेख भारत के साथ अफगानिस्तान में भी पाए गए हैं। जूनागढ़ के शक शासक रुद्रदामन के अभिलेख से सौराष्ट्र पर पुष्यगुप्त वैश्य चन्द्रगुप्त के प्रतिनिधि के रूप में शासने की जानकारी मिलती है।

चन्द्रगुप्त मौर्य (323 ईपू.-295 ई.पू.)

- उसने मौर्यवंश की स्थापना की। उसने सिकन्दर से भेंट की। बौद्ध ग्रंथों के अनुसार धनानंद को मारकर उसकी जगह 321 ई.पू. में चंद्रगुप्त मगध का सम्राट बना।
- जस्टिन के अनुसार सारा भारत उसके कब्जे में था। कौटिल्य ने चन्द्रगुप्त को जम्बूद्वीप का सम्राट बनाया। चन्द्रगुप्त का मनोनीत प्रांतपति पुष्यगुप्त सौराष्ट्र का शासक था। उसने पर्वत के नीचे की ओर बहने वाली **सुवर्णसिक्ता व पलाशिनी** आदि नदियों पर बांध बनाकर सौराष्ट्र में प्रसिद्ध **सुदर्शन झील** का निर्माण कराया था।
- सेल्यूकस के साथ संघर्ष (305 ईपू.) - केवल एप्पियानस इस युद्ध के विषय में लिखता है उसके अनुसार, सेल्यूकस ने सिंधु नदी पार की और भारत के सम्राट चन्द्रगुप्त से युद्ध छेड़ा। अंत में उनमें संधि हो गयी और वैवाहिक संबंध स्थापित हो गया।
- संधि के अनुसार सेल्यूकस ने एरियाना के प्रदेश चन्द्रगुप्त को सौंप दिये। इसके अन्तर्गत चार प्रान्त चन्द्रगुप्त को मिले: एरिया (हेरात), आरकोसिया (कन्धार), जेड्रोसिया या होसिया (बलुचिस्तान) और परीपेनिसवाई या बैरोपेनिसडाई (काबुल)।
- सेल्यूकस ने अपनी पुत्री का विवाह चन्द्रगुप्त से कर दिया और चन्द्रगुप्त ने 500 हाथी उपहार स्वरूप सेल्यूकस को भेजे।
- सेल्यूकस ने अपने राजदूत **मेगास्थनीज** को पाटलिपुत्र भेजा जिसने **'इण्डिका'** में चन्द्रगुप्त मौर्य के जीवन, पाटलिपुत्र, इसको प्रशासनिक व्यवस्था और अन्य विषयों पर लिखा।
- चन्द्रगुप्त ने भद्रबाहु की शिष्यता ग्रहण की **'श्रवणबेलगोला'** (कर्नाटक) नामक स्थान सल्लेखना विधि से 298 ई. पू. में प्राण त्याग दिये।
- मेगास्थनीजः मेगास्थनीज यूनानी शासक सेल्यूकस के राजदूत के रूप में पाटलिपुत्र आया था और लगभग 6 वर्षों तक यहां रहा था। **इंडिका** की रचना उसने की। राजा की

सुरक्षा के लिए स्त्री अंगरक्षिकाएं थीं। मेगास्थनीज ने डायोनिसस (शिव) तथा हेराक्लीज (कृष्ण) की पूजा का उल्लेख किया है। इंडिका के अनुसार भारतीय समाज सात जातियों में विभक्त था- दार्शनिक, किसान, शिकारी और पशुपालन, शिल्पी योद्धा, निरीक्षक या गुप्तचर तथा अमात्य एवं सभासद ।

बिन्दुसार (298 ईपू. 272 ईपू.)

- यूनानी लेखकों ने बिंदुसार को **अमित्रचेट्स** कहा है।
- तक्षशिला में विद्रोह को शांत करने के लिए बिंदुसार ने अपने पुत्र अशोक को भेजा था।
- स्ट्रेबी के अनुसार सीरिया के राजा अ**न्तिकस प्रथम ने अपने राजदूत डायमेकस** को बिंदुसार के दरबार में भेजा।
- बिंदुसार को राजकाज में सहायता देने के लिए चाणक्य, खल्लाटक और राधागुप्त जैसे योग्य एवं अनुभवी मंत्री थे। एक अन्य प्रमुख मंत्री सुबन्धु था।

अशोक (273ई-232ई.पू.)

- बिन्दुसार की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र अशोक गद्दी पर बैठा।
- 1750 में **टीफ थैलर** ने सबसे पहले दिल्ली में अशोक स्तंभ का पता लगाया। सर्वप्रथम **1937 ई. में जेम्स प्रिंसेप** ने उन लेखो को पड़ा।
- अशोक नाम **मास्की तथा गुर्जरा** शिलालेख में मिलता है।
- अशोक के पुत्र **महेन्द्र** तथा पुत्री **संघमित्रा** का थी।
- पुराणों में उसे '**अशोकवर्धन**' कहा गया है।
- कल्हण की '**राजतरंगिणी**' से ज्ञात होता है कि अशोक ने कश्मीर पर भी विजय प्राप्त की। ऐसा जान पड़ता है कि अशोक कश्मीर का प्रथम मौर्य सम्राट था और उसने **श्रीनगर** को बसाया था।
- अपने राज्याभिषेक के नवें वर्ष एवं अपने शासनकाल के तेरहवें वर्ष में अशोक ने **कलिंग** पर विजय **(261ई.पू.)** प्राप्त की।
- कलिंग युद्ध की भीषणता ने अशोक पर गहरा प्रभाव डाला। अशोक ने युद्ध की नीति को सदा के लिए त्याग दिया और दिग्विजय के स्थान पर **धम्म विजय**' को नोति को अपनाया।
- अर्थशास्त्र के अनुसार कलिंग **हाथी** के लिए प्रख्यात था।
- '**उपगुप्त**' ने अशोक को बौद्धधर्म में दीक्षित किया।

- राज्याभिषेक के 20वें वर्ष लुंबनी ग्राम की यात्रा की और ग्राम को कर मुक्त कर दिया तथा **केवल 1/8 भाग** कर लेने का आदेश दिया।
- अशोक **नेधर्मयात्रा** का आरम्भ महात्मा बुद्ध के जीवन से संबंधित स्थानों से किया। वह 'लुम्बनी उपवन' (बुद्ध का जीवन स्थल) 'कपिलवस्तु' (बुद्ध की मातृभूमि), 'सारनाथ' (बुद्ध का प्रथम उपदेश स्थल). 'श्रावस्ती' (जहां बुद्ध अनेक वर्ष ठहरे), 'बोधगया' (जहाँ बुद्ध को निर्वाण प्राप्त हुआ) तथा कुशीनगर (जहां बुद्ध को निर्वाण प्राप्त हुआ) गया।

अशोक के शिलालेख

- मास्की एवं गुर्जरा अभिलेखों में 'अशोक' का नाम है।
- भाब्रू लघु शिलालेख से पता चलता है कि अशोक ने बोधगया की यात्रा की थी।
- अशोक के इलाहाबाद स्तंभ लेख को **रानी का अभिलेख** भी कहा जाता है।
- **वृहदथ** मौर्य वंश का अंतिम शासक था जिसकी हत्या 185 ई.पू. में उसके सेनापति पुष्यमित्र ने कर डाली।
- साम्राज्य के जनपद **समाहर्ता** नामक अमात्य के अधीन होते थे।
- **सन्निधाताः** वह राज्य के अर्थ विभाग का अध्यक्ष होता था।
- **दुर्गपाल** : देश के भीतरी भागों में स्थित दुर्गा ..की रक्षा का भार दुर्गपालों को सौंपा गया था।
- **दंडपालः** यह पुलिस विभाग का सर्वोच्च पदाधिकारी था।
- **अमात्य और अध्यक्षः** वस्तुतः राज्य के समस्त कार्यकारिणी और न्याय विभाग के उच्चाधिकारी अमात्य कहलाते थे।
- **नगरों का प्रबंधः** मेगास्थनीज के अनुसार नगर का प्रबन्ध 30 सभासदों की एक समिति करती थी। यह समिति 6 उप-समितियों में बंटी थी। प्रत्येक उपसमिति में 5 सदस्य होते थे।
- **ग्राम प्रशासनः** ग्राम शासन की सबसे छोटी इकाई होता था। ग्राम का अध्यक्ष 'ग्रामणी' होता था।
- (मनु स्मृति के अनुसार) प्राचीन भारत में राज्य के 7 अंग समझे जाते थे 1. राजा, 2. अमात्य, 3. जनपद, 4. दुर्ग, 5. कोप, 6. सेना और 7. मित्र।
- जनपद न्यायाधीश को **रज्जुक** कहा जाता था।
- गुप्तचर विभागः यह विभाग एक पृथक अमात्य के अधीन रखा गया था गुप्तचरों को अर्थशास्त्र में 'गूढपुरुष' कहा गया है। **संस्था** अर्थात् एक ही स्थान पर रहने वाले तथा

संचार अर्थात प्रत्येक स्थानों में भ्रमण करने वाले। अर्थशास्त्र में वेश्याएं भी गुप्तचरों के पदों पर नियुक्त की जाती थी।

- सैन्य प्रबंध: चन्द्रगुप्त मौर्य के पास एक अत्यन्त विशाल सेना थी। प्लिनी के अनुसार चंद्रगुप्त मौर्य के पास 6 लाख पैदल, 50 हजार अश्वारोही 9 हजार हाथी तथा 800 रथों सुसज्जित विशाल सेना थी।
- मौर्यकालीन अधिकारी

1. समाहर्ता - राजकीय कर संग्रहकर्ता
2. सन्निधाता- कोषाध्यक्ष
3. युक्त- लिपिक
4. प्रादेशिक- जिले का मुख्य अधिकारी
5. लक्षणाध्यक्ष- टकसाल का अध्यक्ष
6. सीताध्यक्ष- कृषि का अध्यक्ष
7. पौतवाध्यक्ष- माप-तौल का अध्यक्ष
8. पण्याध्यक्ष- व्यापार का अध्यक्ष
9. रूपदर्शक- सिक्कों का परीक्षक

- स्वतन्त्र रूप से वेश्यावृत्ति करने वाली स्त्रियाँ **'रूपाजीवा'** कहलाती थीं।
- ऐसी भूमि जिसमें बिना वर्षा के भी अच्छी खेती हो सके, **अदेवमातृक** कहलाती थी।
- राजकीय भूमि को **सीता** कहा जाता था।
- जूनागढ़ अभिलेख के अनुसार चन्द्रगुप्त के गवर्नर पुष्यगुप्त वैश्य ने सौराष्ट्र में **सुदर्शन झील** का निर्माण करवाया था।
- पूर्वी तट पर **ताम्रलिप्ति** तथा पश्चिमी तट पर **भृगुकच्छ** तथा **सोपारा** बंदरगाह थे।
- प्रमुख मुद्रा प्रणाली -

1. **सुवर्ण**- सोने का,
2. **कार्यापण** या **पण** या **धरण**- चाँदी का
3. **माषक**- ताँबे का,
4. **काकिणी-** ताँबे का

- अशोक ने अपने शासनकाल के बारहवें वर्ष में बराबर पहाड़ियों की दो गुफाएं आजीवकों को दे दी थी।
- इस समय **तक्षशिला'** उच्चतम शिक्षा का एक प्रसिद्ध केन्द्र था। तक्षशिला के अतिरिक्त वाराणसी शिक्षा का दूसरा प्रमुख केन्द्र था।
- अशोक के अधिकांश शिलालेखों **ब्राह्मी** तथा **खरोष्ठी** लिपि में मिलते हैं। केवल **'मानसेहरा'** और **'शहबाजगढ़ी'** के शिलालेख **खरोष्ठी** लिपि में हैं। खरोष्ठी लिपि दाई से बाई ओर लिखी जाती है।
- बौद्ध अनुभुति के अनुसार **अशोक ने 84 हजार स्तूपों** का निर्माण किया था।

- अशोक की समस्त कला कृतियों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण हैं उसके **पाषाण स्तम्भ।** इनकी संख्या 30-40 है। इनका निर्माण चुनार के बलुआ पत्थर से किया गया था। इनकी पॉलिश आज भी शीशे की भांति चमकती है। डा. स्मिथ के अनुसार 'कठोर पाषाण को चिकना करने की कला इस पूर्णता तक पहुँच गयी थी।'
- **सारनाथ का स्तम्भ** काफी महत्वपूर्ण हैं। इनमें चार शेरों को एक ही साथ पीठ जोड़े खड़ा किया गया है।

अशोक स्तंभ लेख

- दिल्ली-टोपरा : प्रारम्भ में यह उ. प्र. के सहारनपुर जिले (खिज्राबाद) में था। फिरोजशाह तुगलक ने इसे दिल्ली लाया था।
- दिल्ली-मेरठ प्रारम्भ में यह मेरठ में था। फिरोजशाह तुगलक ने इसे दिल्ली लाया।
- लौरिया अरेराज : बिहार के चंपारन जिले में स्थित है।
- लौरिया नंदनगढ़ : बिहार के चम्पारन जिले में स्थित है
- रामपुरवा (Bull Capital): यह भी बिहार के चम्पारन जिले में स्थित है।

प्रयाग : पहले यह कौशाम्बी में था तथा बाद में अकबर द्वारा इलाहाबाद के किले में रखा गया। इसमें समुद्रगुप्त के राजकवि हरिषेण द्वारा समुद्रगुप्त की विजय अभियानों का भी वर्णन है।

मौर्योत्तर काल

- मौर्यों के बाद सबसे पहले जो देशी राजवंश आया वह शुंग वंश था। उसके बाद क्रमशः कण्व, सातवाहन यवन, शक, पहलव, कुषाण आदि वंश अलग-अलग क्षेत्रों में सत्तारूढ़ हुए।

शुंग राजवंश (185-73 ई.पू.)

- 'हर्षचरित' के अनुसार सेनापति **पुष्यमित्र शुंग** ने अंतिम मौर्य राजा वृहद्रथ की तथा उसके बाद 185 ई.पू. में गद्दी पर बैठा। अवंति पर नियंत्रण सुदृढ़ करने के लिए उसने **'विदिशा'** को अपनी राजधानी बनाया।
- पुष्यमित्र शुंग ने पतंजलि के नेतृत्व में दो अश्वमेध यज्ञ किये।
- **अयोध्या शिलालेख** पुष्यमित्र शुंग से संबंधित है।
- पुष्यमित्र बौद्ध धर्म का प्रबल विरोधी था।

- पुष्यमित्र शुंग को बौद्धों का हत्यारा और बौद्ध मठों एवं विहारों को नष्ट करने वाला बताया गया है।
- कालिदास की कृति **'मालविकाग्निमित्रम्'** का नायक अग्निमित्र पुष्यमित्र शुंग का पुत्र था।
- अंतिम शुंग शासक **देवभूति** की हत्या कर उसके मंत्री **वासुदेव काण्व** ने 73. ई.पू. में काण्व वंश की नींव डाली।

काण्व वंश (73 ई.पू. -28 ई.पू.)

- काण्व वंश की स्थापना **वासुदेव (ब्राह्मण)** ने 73 ई.पू. में अंतिम शुंग शासक **देवभूति** की हत्या कर के की थी।
- अंतिम कण्व वंशी शासक **सुशर्मा** की हत्या, उसके सामंत **सिमुक** ने कर दी। और आंध्र सातवाहन वंश की नींव डाली

आंध्र-सातवाहन वंश

- सातवाहनों के पूर्वज पहले मौर्यों के सामंत थे। **'सिमुक'** ने सातवाहन वंश की नींव डाली।
- सातवाहन की राजधानी **प्रतिष्ठान (पैठन)** थी, जो एक प्रमुख व्यापारिक नगर भी था। उनकी प्रारम्भिक राजधानी **धान्यकटक** या **धरणीकोट** थी।
- शातकर्णी प्रथम - इसके नाम का उल्लेख **'पेरीप्लस ऑफ दि एरिथ्रियन सी'** में मिलता है। **'श्री सात'** नाम की प्राप्त मुद्राओं से शातकर्णी का पश्चिम मालवा पर अधिकार स्पष्ट होता है।
- हाल - यह सातवाहन वंश का 17 वां राजा था। उसने प्राकृत भाषा में **'गाथा सप्तशती'** नामक पुस्तक की रचना भी की थी।
- गौतमी पुत्र शातकर्णी- यह सातवाहन वंश का सर्वश्रेष्ठ शासक था। उसकी उपाधि **'वर-वरुण-विक्रम-चार विक्रम'** थी।
- गौतमीपुत्र शातकर्णी के विषय में कहा गया है कि उसके घोड़ों ने तीनों समुद्र का पानी पिया था। इसलिए उसे **त्रि-समुद्र-तोय** पिता वाहन भी कहा जाता है। यहां तीनों समुद्रों से तात्पर्य बंगाल की खाड़ी अरब सागर तथा हिंद महासागर से है।
- भरूकच्छ, कल्याण, सोपारा आदि प्रमुख पश्चिमी तट के बंदरगाह थे।
- सातवाहनों ने **तांबा, सीसा, पोटोन** के सिक्क काफी मात्रा में चलाएं। इस काल का सबसे बड़ा सिक्का **सुवर्ण** था जो चांदी के 35 कर्यापण के बराबर होता था। इससे नीचे चांदी का **'कुषण'** नाम का सिक्का था।

कलिंग शासक खारवेल (चेदि वंश)

- कलिंग राज्य के विषय में जानकारी के प्रमुख स्रोत अशोक के लेख तथा खारवेल का **हाथीगुफा अभिलेख** हैं।
- खारवेल, कलिंग पर शासन करने वाले तीसरे वंश का शासक था, जो अपने वंश का नाम 'चेति' (चंदि) बताता है।
- खारवेल की राजधानी कलिंगनगर थी।

इण्डोग्रीक शासक (यवन)

- **मिनान्डर** हिन्द-यूनानी शासकों में सबसे महान शासक था।
- महायान बौद्ध ग्रन्थ **'मिलिन्दपन्हों'** में मिलिन्द के जीवन और तथा उसके क्रिया-कलापों का वर्णन है।
- मिनान्डर की राजधानी **साकल** या **स्यालकोट** थी। वह पहला हिन्द-यूनानी शासक था जिसने बौद्ध धर्म में गहरी रूचि दिखायी तथा बौद्ध बन गया।
- यूनानियों को गोलमिर्च इतना पसंद था. कि इसे **'यवनप्रिय'** कहा जाने लगा।

शक

- नहपान (119-124 ई.) क्षहरात वंश का सबसे प्रसिद्ध शासक नहपान था। 'पेरिप्लस ऑफ दि एरिथ्रियन सी' पुस्तक में इसका उल्लेख है।
- रुद्रदामन (130-150 ई.) इस वंश का तथा समूचे शक वंश का सबसे प्रसिद्ध शासक था। इसने **महाक्षत्रप** की उपाधि धारण की थी। रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख संस्कृत में है। सुदर्शन झील की मरम्मत उसी के समय करायी गयी। शकों का अंतिम शासक रूद्रसिंह तृतीय था जिसे गुप्त सम्राट चन्द्रगुप्त द्वितीय ने परजित कर शक राज्य को अपने राज्य में मिला लिया।

पहलव अथवा पार्थियन

- पार्थियन लोगों का मूल स्थान ईरान में कहीं था और वहीं से वे भारत की ओर आये। भारत का प्रथम पार्थियन शासक **'माउस'** (90-70 ई.पू.) था। इस वंश का सबसे प्रसिद्ध शासक **गोंदोफर्निस** (20 ई.-41 ई.)' था।
- गोंदोफर्निस के शासनकाल में ही भारत में थो प्रथम ईसाई धर्म प्रचारक सेंट थामस आया।

कुषाण

- कुषाण यू-ची कबीले से संबधित थे।
- भारत में कुषाण वंश का प्रथम शासक **कुजुल कडफिसस** (15-65ई.) था।
- कुषाण शासकों में विम कडफिसस ने ही **सर्वप्रथम भारत में स्वर्ण सिक्के** प्रचलित करवाये थे।
- विम कडफिसस के कुछ सिक्कों पर शिव, नंदी एवं त्रिशूल की आकृति मिलती है जो उसके शैव होने का प्रमाण है।
- कनिष्क - कुषाण वंश का सबसे प्रसिद्ध शासक कनिष्क था। कनिष्क का काल 78 से 144 है के बीच माना जाता है। कनिष्क ने **पुरुषपुर (पेशावर)** को अपनी राजधानी बनायो। उसकी दूसरी राजधानी **मथुरा** थी।
- कल्हण की **राजतरंगिनी** के अनुसार कनिष्क कश्मीर पर अधिकार कर वहां **कनिष्कपुर**' नामक नगर बसाया।
- कनिष्क के समय **बौद्ध धर्म की चौथी संगीति** कश्मीर के **कुंडलवन** में संपन्न हुई थी। कनिष्क महायानी बौद्ध था। कनिष्क के समय सिल्क मार्ग अत्यंत प्रसिद्ध था।
- **78 ई.** में कनिष्क ने **शक संवत** चलाया। महास्थान (बोगरा) से एक सोने की मुद्रा प्राप्त हुई है जिस पर कनिष्क की एक खड़ी प्रतिमा अंकित है। **(भारत ने शक संवत अपनाया है। सन् मे 78 घटाने पर शक संवत निकलता है, जबकि 57 जोड़ने पर विक्रम संवत निकलता है।)**
- उसके दरबार को नागार्जुन, चरक, अश्वपोष, मातृचेट, 'यूनानी इंजीनियर एसिय आदि विद्वान सुशोभित करते थे।
- गंधार कला (50 ई.पू. 500 ई.) : इसके अंतर्गत मूर्तियों में शरीर की आकृति को सर्वथा यथार्थ व पारदर्शी दिखाने का प्रयत्न किया गया। यूनानी देवताओ के समान दिखती है
- मथुरा कला (150 - 300 ई.): देशी कला केंद्र, जो जैन धर्मानुयायियों द्वारा मथुरा में प्रथम शती में आरंभ किया गया। इसे कुषाण शासकों का संरक्षण मिला। मथुरा कला यथार्थवादी न होकर आदर्शवादी थी,
- सांची का स्तूपः यह स्तूप भारत का सबसे महत्वपूर्ण स्तूप है। यह अशोक द्वारा बनवाया गया था। शुंग शासन काल में इसका आकार दुगुना करवा दिया गया था। इस स्तूप में बुद्ध के जीवन की चार प्रमुख घटनाएं जन्म, बोधिसत्व की प्राप्ति, धर्म चक्र पवर्तन और महापरिनिर्वाण के चित्र अंकित हैं।

संगम काल (प्रथम से तीसरी ई.)

- 'संगम' एक संस्कृत शब्द है, जिसका अर्थ 'सभा' होता है। इस सभा में तमिल कवि या विद्वान एकत्र होते थे।
- प्रत्येक कवि अथवा लेखक अपनी रचनाओं को संगम के समक्ष प्रस्तुत करता था तथा इसकी स्वीकृति प्राप्त हो जाने के बाद किसी भी रचना का प्रकाशन सम्भव था। इसके अतिरिक्त इसमें 8598 कवियों और 197 पाण्ड्य राजाओं के नाम गिनवाये गये हैं। जो कि अविश्वसनीय प्रतीत होता है।
- परम्परा के अनुसार प्राचीन समय में पाण्ड्य राजाओं के संरक्षण में कुल तीन संगम आयोजित किये गये। इन संगमों में संकलित साहित्य को ही 'संगम साहित्य' के नाम से जाना जाता है।
- **औवैयार** एवं **नच्चेलियर** संगमकालीन प्रसिद्ध कवयित्रियां थी।
- राजा को मन्नम, वेदन, कौशवन, इरैवन आदि के नाम से पुकारा जाता था।
- प्रथम संगम: प्रथम संगम का आयोजन पाण्डयों की प्राचीन राजधानी **मदुरा** में हुआ था। इसकी अध्यक्षता **अगस्त्य ऋषि** ने की।
- द्वितीय संगमः मदुरा के पतन के पश्चात् पाण्ड्य राजाओं के संरक्षण में दूसरा संगम नये नगर **कपाटपुरम् अथवा अलैवे** में आयोजित किया गया। इस संगम को अध्यक्षता भी **ऋषि अगस्त्य** ने की। ।
- तृतीय संगमः तृतीय संगम उत्तरी **मदुरा** में आयोजित किया गया। इस सभा की अध्यक्षता **नक्कीरर** ने की।
- तमिल साहित्य के अन्तर्गत अनेक महाकाव्यों - शिलपादिकरण, मणिमेखलाईम जीवक चिंतामणि, बलयपति एवं कुंदलकेसी आदि ग्रंथ आते हैं।
- चोल राजधानी- **उरैयुर** व **तंजावर**, चिहून- **बाघ**, बंदरगाह-**पुहार (कार्बरी पत्तनम),**
- पांड्यः राजधानी- **कोरक** व **मदुरई**; चिह्न-**मछली** बंदरगाह-**शालियर व कोरक।**
- चेर: राजधानी- **वंजी** (**करूर**) चिह्न-**धनुषः** बंदरगाह **तोंडे व मुशिरी या मुजिरिश**

- चेर राज्य भैंस, कटहल, काली मिर्च तथा हल्दी के लिए विख्यात था।
- **उरैयूर** सूती वस्त्र एवं सूत का एक विख्यात केन्द्र था।
- भारतीय पक्षी मोर का सर्वाधिक निर्यात रोम को होता था।

- **अलक्जेन्ड्रिया**, भारत और रोम के बीच व्यापार का प्रमुख केन्द्र था। उस काल में दक्षिणी राज्यों में सबसे विकसित व्यापार एवं उद्योग कपड़े का था।
- दक्षिण भारत में वैदिक संस्कृति को ले जाने का श्रेय अनुश्रुतियों में **अगस्त्य ऋषि** को दिया जाता है।
- दक्षिण भारत में **मुरुगन या मुरुकन** की उपासना सबसे प्राचीन है। बाद में मुरुगन का नाम सुब्रह्मण्यम वेल्लन भी मिलता है और स्कन्द - कार्तिकेय से इस देवता का एकीकरण होता है।

गुप्त साम्राज्य

- कुषाण साम्राज्य के ध्वंसावशेषों पर गुप्त साम्राज्य का उदय हुआ।
- श्रीगुप्तः गुप्तवंश का **संस्थापक** श्रीगुप्त को माना जाता है। श्रीगुप्त के पुत्र व उत्तराधिकारी के रूप में **घटोत्कच** का उल्लेख किया गया है।

चन्द्रगुप्त प्रथम (319-335 ई.)

- गुप्तवंशावली में सबसे पहला **वास्तविक शासक चन्द्रगुप्त प्रथम** था। वह 320 ई. में स्वतंत्र शासक बना और '**महाराजधिराज**' की उपाधि धारण की। चन्द्रगुप्त प्रथम ने 319 में **गुप्त संवत** चलाया। गुप्त संवत व शक संवत के बीच 241 वर्षों का अंतर था।

समुद्रगुप्त (335-380 ई.)

- चन्द्रगुप्त प्रथम का पुत्र तथा उत्तराधिकारी **समुद्रगुप्त** ने गुप्त राज्य का अपार विस्तार किया।
- '**काच**' नामधारी कुछ सिक्कों के आधार पर कुछ विद्वानों ने 'काच' को समुद्रगुप्त का विद्रोही भाई बताया है और कुछ ने 'काच' और समुद्रगुप्त दोनों को एक ही बताया है।
- समुद्रगुप्त की दिग्विजयों का वर्णन **प्रयाग प्रशस्ति** में किया गया है।
- समुद्रगुप्त की विजय यात्राओं की सफलता के आधार पर विन्सेंट स्मिथ ने उसे भारतीय '**नेपोलियन**' की संज्ञा प्रदान की है।
- समुद्रगुप्त के सिक्कों पर मुद्रित '**अप्रतिरथ**', **व्याघ्रपराक्रम**', '**पराक्रमांक**' जैसे विरुद्ध उसके गौरवमय जीवन चरित का स्पष्ट साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं।

- समुद्रगुप्त को **'कविराज'** भी कहा गया है। समुद्रगुप्त ने 6 प्रकार की मुद्राएं गरुड़, धनुर्धर, परशु, अश्वमेध, व्याघ्रहंता एवं वीणासरण जारी करवायी, इसमें **गरुड़** मुद्राएं सर्वाधिक लोकप्रिय थीं।
- पाटलिपुत्र इस विशाल साम्राज्य की राजधानी थी।
- समुद्रगुप्त महान संगीतज्ञ या तथा वीणावादन में निपुण था।

चंद्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य' (380-415 ई.)

- पश्चिम भारत के शक शासक रूद्रसिंह तृतीय को पराजित किया और इस उपलक्ष्य में उसने **'विक्रमादित्य'** की उपाधि धारण की।
- चन्द्रगुप्त ने **उज्जैन** को द्वितीय राजधानी बनायी। वहां पर उसके दरबार में **नवरत्न** विद्वान जैसे कालिदास, अमरसिंह, धन्वंतरि, बाराहमिहिर आदि रहते थे।
- उसके काल में चीनी यात्री **फाह्यान** (399-414 ई) भारत आया था। फाह्यान के अनुसार उसके काल में मृत्युदंड नहीं दिया जाता था।
- उसके स्वर्ण के सिक्के **'दीनार'** तथा चांदी के सिक्के **'रूपक'** कहलाते थे।

कुमारगुप्त (415-455 ई.)

- चन्द्रगुप्त द्वितीय का पुत्र कुमारगुप्त के अभिलेख हैं उसने **नालंदा विश्वविद्यालय** की स्थापना की। उसने अश्वमेघ यज्ञ भी किया था।

स्कन्दगुप्त (455-467 ई.)

- जूनागढ़ अभिलेख -यह स्कन्दगुप्त का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अभिलेख है। इसी अभिलेख से ज्ञात होता है कि सुराष्ट्र प्रान्त में उसने पर्णदत्त को अपना राज्यपाल नियुक्त किया था तथा सुदर्शन झील के बांध का पुनर्निर्माण कराया गया था।
- उसके चांदी के सिक्कों पर उसकी उपाधि **परमभागवत** एवं **विक्रमादित्य** है।
- स्कन्दगुप्त की मृत्यु के बाद गुप्त वंश का हास आरंभ हो गया।
- गुप्त वंश का अंतिम शासक **'विष्णुगुप्त'** था।

गुप्तकालीन प्रशासन

- गुप्तों ने अनेक छोटे-छोटे राजाओं पर शासन किया।

- पहली बार दीवानी और फौजदारी कानून पारिभाषित किए गये। फाहियान के अनुसार दंड विधान अत्यंत कोमल था।
- गुप्त साम्राज्य **प्रांतों** में, **प्रांत भुक्ति**, **विषयों** (जिलों) में तथा विषय विधियों में तथा विधियां ग्रामों में विभाजित थे।
- अमरकोष में 12 प्रकार की भूमि का उल्लेख मिलता है।
- **क्षेत्रः** खेती के लिए उपयुक्त भूमि
- **वास्तुः** निवास योग्य भूमि
- **खिलः** जो भूमि जोती नहीं जाती थी
- **अप्रहत**: बिना जोती हुयी जंगली भूमि
- **चारागाह**: पशुओं के चारा योग्य भूमि

गुप्तकालीन अर्थव्यवस्था

- गुप्तकाल में भूमिदान की प्रथा थी। राजा भूमि का मालिक था। पश्चिम में **सोपारा** तथा **भड़ौच** एवं पूर्व में **ताम्रलिप्ति** प्रमुख बंदरगाह थे। गुप्त शासकों ने **सबसे अधिक स्वर्ण मुद्राएं (दीनार)** जारी किये।
- व्यापारियों की अपनी **श्रेणियां** होती थीं। ये स्वायत्तःशाली होती थी तथा इनके अपने नियम-कानून होते थे।
- फाहियान के अनुसार विनिमय में कौड़ियों का प्रयोग होता था।
- चीन का रेशम (**चीनांशुक**) भारत में अत्यंत लोकप्रिय था। इस काल में चीन के साथ व्यापार में अत्यधिक वृद्धि हुआ।
- इथोपिया से हाथी दांत तथा अरब-फारस से घोड़े का आयात किया जाता था।
- गुप्त काल का सर्वप्रमुख उद्योग **कपड़ा उद्योग** था।

गुप्तकालीन समाज

- समाज में **दास प्रथा** का प्रचलन था तथा युद्धबंदियों को दास बनाने की प्रथा का प्रचलन था।
- गुप्त काल में प्रथम बार, **कायस्थ जाति** का उल्लेख मिलता है।

कला एवं साहित्य

- कला और साहित्य के विकास की दृष्टि से गुप्तकाल को **भारतीय इतिहास का स्वर्णयुग** कहा जाता है।
- गुप्तकालीन मंदिर **नागर शैली** में बने हैं।
- गुप्त काल का सर्वोत्कृष्ट मंदिर झांसी जिल में देवगढ़ का **दशावतार मंदिर** है।
- सारनाथ में **धमेख स्तूप** का निर्माण हुआ। एकमुखी एवं चतुर्मुखी शिवलिंग तथा शिव के **अर्द्धनारीश्वर** रूप की रचना सर्वप्रथम गुप्तकाल में हुई।
- अजंता की गुफाओं में कुछ चित्रांकन गुप्त काल के हैं जिसमें गुफा संख्या 16 में मरणासन् राजकुमारी का चित्र अत्यंत प्रशंसनीय है। ये चित्रांकन महायान बौद्ध शाखा से संबंधित हैं।
- सर्वप्रथम **सती होने का प्रमाण** 510 ई. के **भानुगुप्त के एरण अभिलेख** में मिलता है।
- शुद्रक रचित **मृच्छकटिकम्** में एक ब्राह्मण एवं वेश्या के प्रेम का वर्णन है।
- राजकीय भाषा **संस्कृत** थी। जबकि निम्न कुल की प्राकत व पाली थी

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

- आर्यभट्ट ने सिद्ध किया कि पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है। ब्रह्मगुप्त का ब्रह्म-सिद्धांत खगोलशास्त्र का प्रसिद्ध ग्रन्थ है। धन्वन्तरी तथा सुश्रुत इस युग के प्रख्यात वैद्य थे। ।

धर्म

- गुप्त काल में त्रिमूर्ति के अन्तर्गत ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश की पूजा आरंभ हुई। अब मूर्तिपूजा हिन्दू धर्म का सामान्य लक्षण बन गया।
- इस काल में **हरिहर** की मूर्तियां बनाई गई। जिसमें शिव व विष्णु को एक साथ दर्शाया गया।
- इसके केन्द्र में विष्णु की पूजा है।

पुष्यभूति वंश एवं हर्षवर्धन

- **हर्षचरित** का लेखक **बाणभट्ट** हर्षवर्द्धन का दरबारी कवि था।
- पुष्यभूति वंश का संस्थापक **पुष्यभूति** था। इस वंश का प्रथम प्रसिद्ध शासक **'प्रभाकरवर्धन'** था जो हर्षवर्द्धन का पिता था। उसकी राजधानी **'थानेश्वर'** (हरियाण के पास) थी।
- प्रभाकरवर्द्धन के पुत्र राज्यवर्द्धन के शासन काल में मालवा के शासक देवगुप्त एवं बंगाल के शासक शशांक ने कन्नौज के मौखरि शासक ग्रहवर्मन की हत्या कर दी और उसकी पत्नी राज्यश्री को बंदी बना लिया। राज्यवर्द्धन अपनी बहन राज्यश्री को मुक्त कराने के प्रयास में शशांक द्वारा मारा गया। राज्यवर्द्धन की मृत्यु के बाद उसका 16 वर्षीय भाई **हर्षवर्द्धन** मंत्रियों के परामर्श से राजगद्दी पर बैठा।

हर्षवर्द्धन (606-647 ई.)

- हर्षवर्द्धन ने एक बौद्ध दिवाकरमित्र की सहायता से अपनी बहन राज्यश्री को बचाया तथा कन्नौज का शासनभार अपने ऊपर ले लिया।
- हर्ष ने **कन्नौज** को राजधानी बनाया और पांच राज्यों पंजाब, कन्नौज, गौड़ (बंगाल), मिथिला तथा उड़ीसा पर आधिपत्य स्थापित किया।
- लगभग 620 ई. में हर्ष का दक्षिण के **शासक पुलकेशिन द्वितीय** के साथ **नर्मदा के तट** पर युद्ध हुआ। जिसमे हर्ष हार गया इसके बाद हर्ष उत्तर भारत तक ही सिमट कर रह गया।
- ह्वेनसांग के अनुसार बंगाल के शासक **शशांक** ने गया के **बोधिवृक्ष** को कटवाकर गंगा में फेंकवा दिया था। तत्कालिन साहित्यों में शशांक को **'अधम गौड़ सर्प'** कहा गया है। शशांक के सिक्कों पर शिव एवं नन्दी के चित्र हैं।
- हर्षचरित के अनुसार नेपाल एवं कश्मीर पर भी हर्ष का प्रभाव था।
- दानशीलता के कारण हर्ष को **'भारतीय हातिम'** भी कहा जाता है।
- हर्ष ने दिन को भागों में बांट दिया था। एक भाग में प्रशासनिक, एक भाग में धार्मिक तथा अन्य में व्यक्तिक कार्य करता था।
- राजा की सहायता के लिए **मंत्रिपरिषद** होती थी। मंत्री को **सचिव या आमात्य** कहा जाता था।
- संदेशवाहक **'दिर्घध्वज'** तथा गुप्तचर **सर्वगतः** कहे जाते थे।

- हर्षकाल में **दंडविधान कठोर** था। सामाजिक अपराधों के लिए अपराधियों के नाक, कान, हाथ, पैर आदि काट लिये जाते थे।
- हर्ष **नाटककार और कवि** था। हर्ष ने **परमभट्टारक, मगध नरेश, शिलादित्य एवं प्रतापशील** की उपाधि धारण की। वह **शिव** तथा **विष्णु** का उपासक थी।
- मथुरा **सूती वस्त्रों** के उत्पादन के लिए प्रसिद्ध था।
- बाणभट्ट तथा मयूर, हर्ष के दरबारी कवि थे। हर्ष ने तीन नाटकों; **रत्नावली, प्रियदर्शिका तथा नागानंद** की रचना की थी। जबकि **हर्षचरित बाणभट्ट** ने लिखी है।
- हर्ष **महायान बौद्धमतानुयायी** था। हर्ष ने कन्नौज सभा तथा प्रयाग सभा का आयोजन कराया। प्रयाग सभा को महामोक्ष परिषद कहा जाता था। यह पांच वर्ष के अंतराल पर होती थी।
- हवेनसांग की अध्यक्षता में कन्नौज सभा आयोजित हुई थी। इसमें बुद्ध की स्वर्ण मूर्ति की पूजा की गई।
- छठे प्रयाग सभा में ह्वेनसांग उपस्थित हुआ था। इसमें बुद्ध, सूर्य तथा शिव (ईश्वर) की पूजा हुई। सभा के अंत में हर्ष ने अपनी समस्त संपत्ति एवं पहने हुए कपड़े दान कर दिये तथा बहन राज्यश्री से वस्त्र मांगकर पहना।

राजपूत वंश व क्षेत्रीय राज्य

- **पृथ्वीराज रासो** (चंदवरदाई) को आधार मानकर कुछ विद्वान राजपूतों को माउंट आबू पर्वत पर वशिष्ठ के अग्निकुंड से उत्पन्न हुआ मानते हैं। अग्निकुंड से प्रतिहार, चालुक्य, परमार व चौहान की उत्पत्ति हुयी।
- शाकम्भरी के चौहान- इस वंश का संस्थापक **वासुदेव** था। अजयराज ने अजयमेरू अथवा **अजमेर नगर** की स्थापना की।
- इस वंश का महानतम राजा राय पिथौरा अथवा **पृथ्वीराज तृतीय** (1179-92 ई.) था। 1191 में तराईन की प्रथम लड़ाई में उसने गोरी को हराया जबकि दूसरी लड़ाई में गोरी ने उसे पराजित किया। पृथ्वीराज का दरबारी चंदबरदाई ने पृथ्वीराज रासो तथा जगनिक ने पृथ्वीराज विजय की रचना की।
- चंदेल वंश- चंदेल वंश की स्थापना **नन्नुक** ने बुंदेलखण्ड के आसपास की थी। उसके पौत्र जयशक्ति के नाम पर यह प्रदेश **जेजाकभुक्ति** कहलाया। **खजुराहों** उनकी राजधानी थी। **धंग** के शासनकाल में खजुराहो का विश्वविख्यात मंदिर कंधरिया का शिव मंदिर निर्मित हुआ। एक कथा के अनुसार धंग ने संगम में जल समाधि ले ली।
- सेन वंश- सेन वंश का संस्थापक **सामन्त सेन** या उसका पुत्र हेमन्तसेन था। सेन वंश के **वास्तविक संस्थापक विजयसेन** (1095-1158 ई.) को माना जाता है।
- उड़िसा का गंग वंश- पूर्वी गंग वंश के अनन्तवर्मन चोड गंग (1076-1148 ई.) के समय पुरी में **जगन्नाथ** मंदिर का निर्माण हुआ। **नरसिंह वर्मन प्रथम** (1238-64 ई.) के समय **कोणार्क के सूर्य मंदिर** का निर्माण हुआ। केसरी वंश के जलाली केसरी ने 11 वीं शताब्दी में भुवनेश्वर के **लिंगराज मंदिर** का निर्माण करवाया।
- कश्मीर का कर्कोट वंश- **ललितादित्य** ने कश्मीर में प्रसिद्ध **मार्तण्ड (सूर्य) मंदिर** के अतिरिक्त भूतेश के शिव मंदिर एवं परिहासकेशव के विष्णु मंदिर का निर्माण कराया।
- कश्मीर के **उत्पल वंश** का महत्वपूर्ण शासक अंवतिवर्मन था।
- कश्मीर के **लोहार वंश** के शासक क्षेमगुप्त की मृत्यु के बाद 958 ई. में **रानी दिद्दा** ने कश्मीर पर पचास वर्षों तक शासन किया। राजतरंगिणी के लेखक कल्हण उसका आश्रित कवि था।

त्रिसत्तात्मक संघर्ष

- कन्नौज पर अधिकार के लिए 8वीं सदी के मध्य से आरंभ हुए **राष्ट्रकूट, पाल तथा गुर्जर प्रतिहार** राजवंश के बीच के युद्ध को **'त्रिपक्षीय संघर्ष'** के नाम से जाना जाता है। त्रिपक्षीय संघर्ष का आरंभ **प्रतिहार** शासक वत्सराज ने आरंभ किया। इस संघर्ष में दक्षिण से उत्तर पर आक्रमण करने वाले 'राष्ट्रकूट' प्रथम शक्ति थे।
- त्रिपक्षीय संघर्ष लगभग 100 वर्षों तक चला तथा **अंत में प्रतिहार शासक**, नागभट्ट द्वितीय के पक्ष में समाप्त हुआ, जिससे कन्नौज पर प्रतिहारों का वर्चस्व दो शताब्दियों तक रहा।

गुर्जर प्रतिहार वंश

- **मिहिरभोज** की ग्वालियर प्रशस्ति के अनुसार नागभट्ट प्रथम (730-56 ई.) ने अरबों के आक्रमण को रोका।
- मिहिरभोज के सिक्कों में उसे **'आदिवराह'** कहा गया है। महेन्द्रपाल प्रथम के दरबार में महाकवि **राजशेखर** रहता था जिसने कर्पूर मंजरी आदि ग्रन्थों की रचना की।

पाल वंश

- **गोपाल** ने पालवंश की नींव डाली। वह बौद्ध धर्म से प्रभावित था। इनकी राजधानी मुंगेर थी
- गोपाल ने **ओदन्तपुरी विश्वविद्यालय** की स्थापना की
- धर्मपाल (770-810 ई.) के शासन काल में कन्नौज के लिए त्रिदलीय संघर्ष आरंभ हुआ। इसने **विक्रमशिला विश्वविद्यालय** की स्थापना की
- देवपाल (810-850 ई.) के समय पाल साम्राज्य चरमोत्कर्ष पर था। अरब यात्री सुलेमान उसे सर्वश्रेष्ठ राजा मानता था। परंतु उसे प्रतिहार शासक मिहिरभोज ने कई बार पराजित किया।.
- **महिपाल प्रथम** को पालवंश का द्वितीय संस्थापक भी कहा जाता है।
- पालवंश बौद्ध धर्म को आश्रय प्रदान किया।
- धर्मपाल ने विक्रमशिला में बौद्ध विहार की स्थापना की तथा गया में चतुर्मख महादेव की मूर्ति स्थापित करवाया।

हूण

- हूणों ने पांचवीं शताब्दी के मध्य में बड़ा आक्रमण किया था। हूण चीन के पड़ोस में रहने वाले खनाबदोश थे। भारत में आने वाले हूण श्वेत हूण थे जो कि ऐपथलाइटस के नाम से जाने जाते थे।
- **'मिहिरकुल'** सबसे प्रसिद्ध हूण शासक था।
- मालवा के शासक यशोधर्मा और बालादित्य ने हृण शक्ति को अंतिम रूप से समाप्त कर दिया।
- मिहिरकुल के सिक्कों पर शिव के बैलों के चित्र हैं।

पल्लव वंश (560-903 ई.)

- संस्कृत में पल्लव का अर्थ होता है, **लता** तथा तमिल भाषा में पत्लव शब्द का अर्थ **डाकू** होता है। पल्लवों को 'राजकीय भाषा **संस्कृत** थी।
- पल्लव लोग **सातवाहनों के सामंत** थे। पल्लव का संस्थापक **बाप्पदेव** था,
- सिंहविष्णु (575-600 ई.): वे पल्लव वंश के संस्थापक थे। इसे 'सिंहविष्णुपोत्तरयण' भी कहा जाता है।
- महेन्द्रवर्मन प्रथम (600-630 ई.) : महेन्द्रवर्मन के समय ही पल्लवों एवं चालुक्यों के बीच संघर्ष शुरू हो गया। वे दोनों ही दक्षिण पर आधिपत्य चाहते थे।
- नरसिंहवर्मन प्रथम (630-668 ई.) : महेन्द्रवर्मन के पश्चात नरसिंहवर्मन प्रथम गद्दी पर आसीन हुआ। उसने **पुलकेशिन द्वितीय (चालुक्य) को हराया** और मार डाला। उसने **'महामल्ल'** तथा **'वातापीकोंड'** (बादामी को जीतने वाला) की उपाधि धारण की। उसके दरबार में श्रीलंका का राजकुमार **मानवर्मा** रहता था।
- धर्मः अधिकतर पल्लव शासक **शैव धर्म** को मानते थे। किंतु सिंहविष्णु एवं नदिवर्मन, विष्णु के अनुयायी थे। इनके शासनकाल में भक्ति से संबंधित संतों के दो समूह विकसित हुए। ये थे- नयनार (शैव भक्त) तथा अलवार (वैष्णव भक्त)

चालुक्य वंश

- इनकी उत्पत्ति ब्रह्मा के चुल्लुक (हथेली) से हुई थी, इसलिए इन्हें चालुक्य कहा
- चालुक्यों की चारों शाखाओं का विवरण इस प्रकार हैं:
  1. बादामी के चालुक्य (मूल शाखा),
  2. वेंगी के चालुक्य (पूर्वी चालुक्य),
  3. कल्याणी के चालुक्य (उत्तरवर्ती चालुक्य अथवा पश्चिमी चालुक्य)।
  4. अन्हिलवाड़ा (लाट) के चालुक्य (सोलंकी)।

बादामी के चालुक्य (कर्नाटक)

- इस वंश का पहला शासक राजा **जयसिंह** था, चालुक्य का वास्तविक इतिहास **पुलकेशिन प्रथम** (सत्याश्रय रण विक्रम) से आरंभ होता है।
- पुलकेशिन प्रथम (550-567 ई.): बादामी को जीतकर अपनी राजधानी बनायी। उसने कई अश्वमेघ यज्ञ किये तथा दुर्ग भी बनवाये।
- कीर्तिवर्मन प्रथम (566-597 ई.): उसने **'सत्याश्रय'** पृथ्वी वल्लभ, पुरुरणपराक्रम' की उपाधि ली थी। उसे वातापी का प्रथम निर्माता कहा गया है। इसके बाद **मंगलेश** का शासन आता है
- पुलकेशिन द्वितीय (609-642 ई.) उसने **'पृथ्वी वल्लभ सत्याश्रय'** की उपाधि धारण की। पुलकेशिन द्वितीय ने कदंब, गंगा, लाट, गुर्जर, मालवा आदि राज्यों को उखाड़ फेंका। उसने पल्लव शासक **महेन्द्रवर्मन प्रथम** को नर्मदा नदी के तट पर हराकर वेंगी के प्रांत को छीन लिया और वहां चालुक्यों की पूर्वी शाखा को स्थापित किया।
- **ऐहोल अभिलेख** पुलकेशिन द्वितीय से सम्बन्धित है

कल्याणी के चालुक्य

- तैलप द्वितीय (973-997 ई.): वह कल्याणी के स्वतंत्र चालुक्यों के संस्थापक था। उसने **मान्यखेत** को अपनी राजधानी बनायी।
- सोमेश्वर प्रथम (1043-1068 ई.): सोमेश्वर प्रथम ने मालवा के प्रदेश को जी भर कर लूटा। उसके समय में भी चोल-चालुक्य संघर्ष होता रहा। उसने **'कोप्पम** की लड़ाई (1059 ई.) में चोल शासक राजाधिराज को युद्ध क्षेत्र में ही मार डाला। उसने **'मान्यखेत'** के स्थान पर 'कल्याणी' को अपनी राजधानी बनायी। उसने **तुंगभद्रा में जल समाधि** ले लो।

वेंगी के चालुक्य (पूर्वी चालुक्य)

- पुलकेशिन द्वितीय (बादामी शाखा) का भाई **विष्णु वर्धन** इस राजवंश का संस्थापक था। विष्णु वर्धन ने **'विषमसिद्धि'** की उपाधि ली। चोलों एवं पूर्वी चालुक्यों में हुए वैवाहिक संबंधों के कारण चोल शासक राजराज प्रथम के प्रदौहित्र कुलोत्तुंग द्वितीय ने शीघ्र ही अपने को चोल शासक घोषित किया और वेंगी को चोलों का एक प्रांत बना दिया। इस प्रकार पूर्वी चालुक्य राज्य की स्वतंत्र सत्ता समाप्त हो गयो।

अन्हिलवाड़ा के चालुक्य (सोलंकी)

- इस वंश के वास्तविक संस्थापक **मूलराज प्रथम** था। वह शैव धर्म का अनुयायी था।
- उसी के दरबार में **हेमचंद** कवि (जैन) रहते थे।
- कुमारपाल (1144-1171 ई.) उसने **सोमनाथ के मंदिर** का पुनर्निर्माण कराया। अपने राज्य में उसने जीव हिंसा एवं मद्य विक्रय को रोका और विधवाओं की संपत्ति जब्त होने के कानून को रद्द कर दिया। जैन धर्म स्वीकार किया। उसी के दरबार में रहते हुए. हेमचंद्र ने **'कुमारपाल चरित'** लिखा।
- मूलराज द्वितीय (1176-1178 ई.) अजयपाल का उत्तराधिकारी मूलराज द्वितीय बना। उसी के समय **मुहम्मद गोरी** ने (1178 ई.) आक्रमण किया, परंतु मूलराज ने उसे मार भगाया।

राष्ट्रकूट वंश

- राष्ट्रकूट चालुक्यों के सामंत थे,
- दंतिदुर्ग (735-755 ई.) : इस वंश की स्थापना का श्रेय **दंतिदुर्ग** को ही जाता है। उसने अनेक युद्धों में विजय प्राप्त कर राज्य और शक्ति का विस्तार
- इन्द्र तृतीय (915-927 ई.) **इन्द्र तृतीय तथा कृष्ण तृतीय को राष्ट्रकूटों का सर्वश्रेष्ठ** शासक माना जाता है। इसने प्रतिहार वंश के राजा महिपाल प्रथम को पराजित करके उसकी राजधानी कन्नौज में लूटपाट को तथा पूर्वी चालुक्य साम्राज्य की चुनौती दी। इसी समय भारत भ्रमण पर आये हुए **अल मसूदी (अरबयात्री)** के अनुसार राष्ट्रकूट राजा बलहारा या वल्लभराज **(इन्द्र तृतीय)** भारत का सर्वश्रेष्ठ राजा था।

- कृष्ण तृतीय (939-67 ई.): इसने **तक्कोलम के युद्ध (949 ई.)** में चोल शासक परांतक प्रथम को हराया और रामेश्वरम् पर अपना अधिकार कर लिया। उसने रामेश्वरम में **"कृष्णेश्वर"** एवं **'गंडमार्तंडादित्य'** मंदिर बनवाया।
- **राष्ट्रकूटों का सांस्कृतिक योगदानः** राष्ट्रकूट शासकों में धार्मिक सहिष्णुता थी और उन्होंने शैव, वैष्णव, जैन, इस्लाम धर्म के प्रति भी सहिष्णु थे। दन्तिदुर्ग ने एलोरा में दशावतार मंदिर बनवाया।
- कृष्ण प्रथम ने ऐलोरा में कैलाश पर शिव मंदिर बनवाया। एलोरा की गुफाओं में ब्राह्मण, बौद्ध तथा जैन मत के मंदिरों, विहारों, चैत्यों आदि का निर्माण इनकी धार्मिक सहिष्णुता तथा भारतीय कला के प्रतीक है। राष्ट्रकूटों के शासनकाल में भारतीय शैलकृत वास्तुकला अपनी पराकाष्ठा पर पहुंच गयी थी।
- अपभ्रंश का महान कवि **स्वयंभू** राष्ट्रकूटों के दरबार में रहता था

चोल राजवंश

- द्वितीय चोल वंश का प्रथम शासक **विजयालय** बना। विजयालय पहले पल्लवों का सामंत था। चोल साम्राज्य **पेन्नार व कावेरी** नदियों के बीच स्थित था।
- राजराजा प्रथम (985-1014 ई.) उसने चेर, चालुक्य एवं गंग राज्यों को हराया। चोल वंश के सबसे महान शासक **राजराज प्रथम तथा उसका पुत्र राजेन्द्र प्रथम** थे। राजराज प्रथम का मूल नाम **अरूमोलीवर्मन** था। अपनी शक्तिशाली नौसेना की मदद से उसने लक्षद्वीप और मालद्वीप को जीता और श्रीलंका के शासक महिंद्र पंचम को हराकर उसकी राजधानी अनुराधापुर को नष्ट कर दिया। उसने **चोलमार्तंड**, **जयगोंड**, **मुम्माडिचोलदेव** की उपाधि धारण की।
- राजेन्द्र प्रथम (1014-1044 ई.) राजेन्द्र ने सिंहल(श्रीलंका) विजय पूरा किया। श्रीलंका के राजा महिंद्र पंचम को गिरफ्तार कर चोल राज्य ले आया। अगले पचास वर्षों तक श्रीलंका चोलों के अधिकार से अपने को मुक्त नहीं करा पाया।
- राजेन्द्र प्रथम के **सुमात्रा अभियान** की पुष्टि करेंडे-ताम्रपत्र अभिलेख से भी होती है। उसने यह नौसैनिक अभियान अपनी साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए नहीं किया था बल्कि व्यापारिक अवरोध दूर करने तथा मलय प्रायद्वीप एवं चीन के साथ

वाणिज्यिक संबंध बढ़ाने के लिए यह कदम उठाया था। व्यापारिक एवं राजनीतिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसने चीन में दो दूतमण्डल भेजे।

- **राजेन्द्र तृतीय** (1250-1279 ई.) चोल राजवंश का अंतिम शासक था।
- स्थानीय स्वशासनः स्वशासन संबंधी जानकारी परांतक प्रथम के **उत्तरमेरूर अभिलेख** से मिलती है। चोल सम्राटों ने स्थानीय प्रशासन व्यवस्था में समिति प्रणाली को लागू किया, जिसे **'वारियम'** कहा जाता था। चोल अभिलेखों में तीन प्रकार के ग्राम सभाओं का उल्लेख प्राप्त होता है, वे हैं,
- धर्मः चोल राजा शैव थे। मंदिरों में देवदासी प्रथा प्रचलित श्री विष्णु का तमिल नाम विरूमल है।
- समकालीन वैष्णव संतों में महान वैष्णवाचार्य रामानुजाचार्य उल्लेखनीय है।
- राजराज प्रथम द्वारा निर्मित तंजावूर का **राजराजेश्वर** या **बृहदीश्वर मंदिर** द्रविड़-चोल स्थापत्य कला शैलों का सर्वोत्कृष्ट निदर्शन है।
- **नटराज** एवं अन्य शिव मूर्तियों के साथ-साथ पार्वती, स्कन्द, कार्तिकेय, गणेश आदि की असंख्य प्रतिमाएं भी निर्मित की गयी, पर चोलयुगीन नटराज प्रतिमा को चोल कला का **'सांस्कृतिक निचोड़** या **सार'** कहा जाता है।
- साहित्यः चोल शासकों ने तमिल, कन्नड़ तेलगू तथा संस्कृत भाषा को संरक्षण प्रदान किया। 'कंबन की रामायण' को तमिल साहित्य का गौरव ग्रंथ माना जाता है। तिरूतकदेवर ने जीवक चिन्तामणि नामक महाकाव्य की रचना की।

तुर्की आक्रमण व सल्तनत काल की स्थापना

- यामिनी वंश का संस्थापक **अलप्तगीन** था। उसने गजनी को अपनी राजधानी बनाया। अलप्तगीन का पुत्र **सुबुक्तगीन** प्रथम तुर्की शासक था जिसने भारत पर आक्रमण किया। सुबुक्तगीन के विजयों से उत्साहित होकर **महमूद गजनवी** ने 1000 ई. से 1027 ई. तक भारत पर **17 बार** आक्रमण किये।
- महमूद का दरबारी इतिहासकार **उत्बी** था जिसने उसके आक्रमणों को **जेहाद** की संज्ञा दी।
- महमूद का परम उद्देश्य भारत को लूटना था। महमूद को प्रथम महत्वपूर्ण आक्रमण 1001 ई. में हिन्दूशाही शासक **जयपाल** पर हुआ। इस युद्ध में महमूद की विजय हुई। महमूद का **अंतिम आक्रमण 1027 ई.** में जाटों पर हुआ।
- महमूद का सर्वाधिक महत्वपूर्ण आक्रमण गुजरात में समुद्र तट पर स्थित **सोमनाथ (1025 ई.)** पर था। उस समय यहां का शासक **भीम प्रथम** था ।

मुहम्मद गोरी का आक्रमण

- 1178 ई० में गोरी ने गुजरात पर आक्रमण किया किंतु **मूलराज द्वितीय** ने उसे आबू पर्वत की तलहटी में हराया।
- **1191** ई० में हुए **तराइन के प्रथम युद्ध** में पृथ्वीराज चौहान ने गोरी को परास्त किया किंतु अगले ही वर्ष **1192 ई०** में वह गोरी से पराजित हो गया।
- तराइन के युद्ध के बाद भारत में तुर्की राज्य की स्थापना हुई। 1193 से दिल्ली भारत में गोरी की राजनीतिक गतिविधियों का केंद्र थी।
- **1194 ई०** में मुहम्मद गोरी ने कन्नौज के शासक जयचंद को **चंदावर के युद्ध** में हराया। मुहम्मद गोरी के सिक्कों पर एक ओर कलमा खुदा रहता था तथा दूसरी ओर लक्ष्मी की आकृति अंकित रहती थी।
- चन्दावर, इटावा जिले (यमुना तट) मे है

सल्तनत काल

- वर्ष **1206 से 1526** तक दिल्ली में पांच मुस्लिम वंशों ने शासन किया, जिसे 'दिल्ली सल्तनत' कहा जाता है।

गुलाम वंश या दास वंश (1206-1290 ई.)

- **कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-1210 ई.)** भारत में गुलाम वंश ममलूक शासन की स्थापना का श्रेय **कुतुबुद्दीन ऐबक** को दिया जाता है। कुतुबुद्दीन एक दास था, मुहम्मद गोरी ने उसे **आमीर-ए-आखूर** का पद दिया।
- उसकी राजधानी लाहौर थी।
- उसे **लाखबख्श** तथा **हातिम द्वितीय** भी कहा जाता था। उसने मुल्तान एवं सिंघ के शासक नासिरुद्दीन कुवाचा से अपनी बहन की, गजनी के शासक ताजुद्दीन एल्दौज की पुत्री से अपनी तथा इल्तुतमिश से अपनी पुत्री का विवाह कर दिया।
- उसने विद्वान **हसन निजामी व फक ए मुदब्बर** को संरक्षण दिया। उसने दो मस्जिदें बनवाय 1. **कुव्वत-उल इस्लाम मस्जिद** (दिल्ली) 2. **अढ़ाई दिन का झोपड़ा** (अजमेर)। कुव्यत-उल-इस्लाम मस्जिद भारत में इस्लामी पद्धति पर आधारित पहली मस्जिद मानी जाती है।
- सूफी संत ख्वाजा **कुतुबद्दीन बख्तियार काकी** के नाम पर दिल्ली में कुतुबमीनार का निर्माण आरंभ करवाया जिसे **इल्तुतमिश ने पूरा करवाया।** 1210 ई. में चौगान (पोलो) खेलते समय घोड़े से गिरने के कारण उसकी मृत्यु हो गयी।
- कुतुबुद्दीन ऐबक की मृत्यु के पश्चात लाहौर के अफसरों ने आरामशाह को गद्दी पर बैठाया, लेकिन वह अयोग्य शासक था।

इल्तुतमिश (1210-1236 ई.)

- वह सुल्तान बनने से पूर्व बदायूँ का शासक था।
- उसने चालीस तुर्क गुलाम सरदारों का एक दल बनाया जिसे **तुर्कन-ए-चिहलगामी** अथवा **चरगान** कहा गया।
- उसने **तराईन के तृतीय युद्ध** में अपने प्रमुख प्रदिद्वन्दि एल्दौज को को हराया। बाद में नासिरुद्दीन कुवाचा का दमन किया।

- चंगेज खां के नेतृत्व वाले मंगोलों के संभावित आक्रमण को ख्वारिज्म के शाह के पुत्र जलालुद्दीन मंगबर्नी को सहायता न देकर रोका।
- उसने सुल्तान पद को वंशानुगत बना दिया। इल्तुतमिश ने शुद्ध अरबी सिक्के **चांदी का टंका** (लगभग 175 ग्रेन) तथा **तांबे का जीतल** चलवाया।
- इसने **दिल्ली** को राजधानी बनाया तथा **इक्ता व्यवस्था** का प्रचलन किया।
- उसके दरबार में **मिन्हाज उस सिराज** तथा **मलिक वाजुधीन** को संरक्षण मिला था।
- उसने कुतुबमीनार को पूरा करवाया।
- इल्तुतमिश के वैध उत्तराधिकारी रजिया को छोड़कर अमीरों ने उसके विलासी पुत्र रूक्नुद्दीन फिरोज को गद्दी पर बैठा दिया,

रजिया सुल्तान (1236-40 ई.)

- रजिया बेगम इल्तुतमिश की बेटी थी। दिल्ली सल्तनत पर बैठने वाली वह **प्रथम तथा अंतिम महिला** थी।
- रजिया के चुनाव में सिर्फ दिल्ली के ही अमीर तथा जनता शामिल थे। इसलिए अन्य सूबों के अमीर तथा फिरोज का वजीर निजामुल्मुल्क ने उसके सत्तासीन होने का विरोध किया।
- **जमालुद्दीन याकूत** नामक एक हब्शी पर जो अमीरे आखर (घोड़ों का सर्वोच्च अधिकारी) था, वह विशेष अनुराग रखती थी।
- वह पर्दा प्रथा को त्यागकर पुरुषों के समान **कुबा (कोट)** एवं **कुलाह (टोपी)** पहनकर राजदरबार में बिना पर्दा के पहुंचने लगी।
- रजिया बंदी बना कर तथा याकूब की हत्या कर दी गयी।
- मिनहास के अनुसार रजिया में सभी बादशाही गुण विद्यमान थे सिवाय नारीत्व के।

गयासुद्दीन बलबन (1266-86 ई.)

- बलवन का मूल नाम **बहाउद्दीन** था।
- इल्तुतमिश ने उसे खरीदकर बाद में अपने चालीस गुलामों के दल में शामिल कर लिया। 1265 ई. में नासिरुद्दीन महमूद की मृत्यु के बाद वह सुल्तान बना
- बलबन ने एक केंद्रीय सैन्य विभाग **'दीवान ए-अर्ज'** की स्थापना की तथा इमाद उल मुल्क को सेनामंत्री (दीवाने-ए-आरिफ) के पद पर नियुक्त किया।

- राज्य के अन्तर्गत होने वाले षडयंत्रों एवं विद्रोहों के विषय में पूर्ण जानकारी प्राप्त करने के लिए **गुप्तचर विभाग** का भी गठन किया।
- बलबन की शासन व्यवस्था का मुख्य आधार मजबूत सैन्य संगठन तथा संगठित गुप्तचर व्यवस्था थी। उसने अयोग्य एवं वृद्ध सैनिकों को पेंशन देकर मुक्त करने की योजना चलायो तथा सैनिकों का **वेतन भुगतान नकद** किया।
- बलबन के दरबार में प्रसिद्ध कवि **अमीर खुसरो** (तुतिए हिंदू) एवं अमीर इसन रहते थे।
- उसने राजा को पृथ्वी पर ईश्वर का प्रतिनिधि (नियामते खुदाई) माना। उसने फारसी परंपरा **सिजदा** (घुटने पर बैठकर सिर झुकाना) और **पैबोस** (सुल्तान के पैर चूमना की प्रथा को अपनाया ईरानी त्योहार नवरोज को शुरू किया।
- क्यूमर्स का वध करवाकर खिजली वंश की स्थापना की गयी।

खिलजी वंश (1290-1320)

जलालुद्दीन फिरोज खिल्जी (1290-1296)

- जलालुदीन खिलजी कैकुबाद के शासन काल में आरिज-ए-मुमालिक के पद पर था। मलिक फिरोज खिलजी जिसे **शाइस्ता खां** की उपाधि प्राप्त थी।
- उसने विद्रोहियों के प्रति दुर्बल नीति अपनायी और कहा **'मैं एक वृद्ध मुसलमान हूँ, मुसलमानों का रक्त बहाने की मेरी आदत नहीं है।'**
- चंगेज का नाती उलगु खां मंगोल (एवं 4000 अन्य मंगोल) इस्लाम स्वीकार कर दिल्ली में ही बस गये। इन्हें 'नवीन मुसलमान' के नाम से जाना जाता है।
- देवगिरि के सफल अभियान से लौटते हुए कड़ा-मानिकपुर का सूबेदार तथा उसके भतीजे अलाउद्दीन खिलजी ने सुल्तान की हत्या कर दी तथा अपने को सुल्तान घोषित कर दिया।
- बरनी का ग्रंथ **'तारीखे फिरोजशाही'** ही जलालुद्दीन के शासन काल के लिए एकमात्र प्रामाणिक ऐतिहासिक ग्रंथ है।

अलाउद्दीन खिलजी (1296-1316 ई.)

- अलाउद्दीन खिलजी के बचपन का नाम **अली** तथा **गुरशास्प** था, पूर्व सुल्तान जलालुद्दीन का भतीजा तथा दामाद था।
- उसने **सिकंदर सानी** को उपाधि धारण कर इसका उल्लेख अपने सिक्कों पर करवाया।

- **नवीन धर्म** स्थापित करने तथा विश्व विजय करने की सलाह अपने मित्र दिल्ली के कोतवाले अताउल मुल्क के समझाने पर त्याग दिया।
- गुप्तचर विभाग का पुनसँगठन कर भारी मात्रा में उनकी तैनाती की **बरीद** (गुप्तचर अधिकारी) एवं **मुनहिस** (गुप्तचर) के डर से अमीरों तथा साधारण जनता में दहशत का माहौल बन गया।
- **मद्यपान पर निषेध** लगा दिया तथा सुल्तान ने स्वयं मद्यपान त्याग दिया।
- 1298 ई. में नुसरत खां तथा उलूग खां के नेतृत्व में सुल्तान की सेना ने गुजरात के बचेल राजा कर्ण को पराजित किया। इस आक्रमण में राजा कर्ण की पत्नी कमला देवी (बाद में अलाउद्दीन की प्रिय पत्नी) पकड़ी गयी तथा नुसरत खां ने एक **हिजड़ा (मलिक काफूर)** को एक हजार में खरीद कर सुल्तान के पास भेज दिया। बाद में **दक्षिण विजय का श्रेय इसी मलिक काफूर** को जाता है।
- चित्तौड़ पर आक्रमण करने का कारण रत्नसिंह की सुंदर पत्नी रानी पद्मिनी के प्रति अलाउद्दीन के लोलुपता को माना है। नाइब मलिक काफूर के नेतृत्व में देवगिरि (1307-8 ई.) विजय किया गया। वहां के शासक राजा रामचंद्र देव को **रायरायन** की उपाधि प्रदान की।
- तेलंगाना के शासक **प्रतापरुद्र ने मलिक काफूर को कोहनूर** हीरा दिया।
- पांड्यों की राजधानी मदुरा को लूटा गया। तदुपरांत पूरब की ओर पंबन के द्वीप पर स्थित रामेश्वरम् पहुंचकर उसने विशाल मंदिर को ध्वस्त कर दिया।

अलाउद्दीन का बाजार नियंत्रण

- अमीर खुसरो के अनुसार अलाउद्दीन की बाजार. नियंत्रण व्यवस्था से आम प्रजा को लाभ हुआ।
- बरनी के अनुसार विशाल सैन्य बल की के कारण बाजार सुधार लागू किया गया।
- मलिक कबूल को उसने खाद्यान्न या अन्न बाजार का **शहना-ए-मंडी** नियुक्त किया।
- दिल्ली में व्यापार करने वाले व्यापारियों को **दीवान-ए-रियासत** में अपना नाम लिखवाना पड़ता था। अलाउद्दीन ने अपने बाजार नियंत्रण प्रणाली को **दीवाने-रियासत** तथा **शहना-ए-मंडी** नामक दो न्युक्ति किया।
- मूल्य नियंत्रण में **मुहतसिब (सेंसर)** एवं **नाजिर** को भी महत्वपूर्ण भूमिका थी।

राजस्व सुधार

- बरनी के अनुसार **खुत, मुकदम** और **चौधरी** ग्रामीण अभिजात वर्ग से थे। ये किसानों से कर वसूल करके **दीवान-ए- विजारत** के अधिकारी के पास जमा कर देते थे। चौधरी **'सौ गांवों'** परगनों का प्रमुख होता था।
- राजस्व व्यवस्था में भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए **'दीवान-ए-मुस्तखराज'** विभाग की स्थापना की।
- जजिया गैर मुसलमानों से वसूल किया गया परंतु स्त्रियों, बच्चों एवं विक्षिप्तों को इससे मुक्त रख गया।
- **खुम्स** (युद्ध में लूट से प्राप्त धन) 4/5 हिस्सा वसूला गया।
- **जकात** केवल मुसलमानों से वसूल किया जाता था और यह संपत्ति का 40वां हिस्सा था।
- अमीर खुसरो तथा अमीर हसन देहलवी को संरक्षण प्रदान किया।
- उसने **अलाई दरवाजा** का निर्माण करवाया।

कुतुबुद्दीन मुबारक खिलजी (1316-1320)

- उसने **'क्षमा करो और भूल जाओ'** की नीति का अनुसरण किया।
- मुबारक खिलजी दिल्ली सल्तनत का पहला शासक था जिसने **खलीफा के महत्व को अस्वीकार** कर दिया

खुशरव शाह (1320ई)

- खुसरो शाह पहला **भारतीय मुसलामन** था जो सल्तनत की गद्दी पर बैठा।
- खुशरव शाह को निजामुद्दीन औलिया का समर्थन प्राप्त था।

(तुगलक वंश 1320 -1414)

गयासुद्दीन तुगलक (1320-25 ई.)

- गाजी मलिक गयासुद्दीन तुगलक शाह के नाम से दिल्ली की गद्दी पर बैठा। गयासुद्दीन ने **29 बार मंगोल आक्रमणकारियों** को पराजित किया था।
- गयासुद्दीन ने कृषि को प्रोत्साहन दिया। उसने सिंचाई के लिए नहरों एवं कुओं का निर्माण करवाया। बंजर भूमि को फिर से कृषि योग्य बनाया गया।
- यातायात व्यवस्था को समुन्नत बनाने और विशेषकर डाक व्यवस्था को पूर्ण रूप से सुसंगठित करने का श्रेय गयासुद्दीन तुगलक को जाता है।

- उसने न्याय विभाग में सुधार किया तथा राजकीय ऋण वसूल करने के लिए शारीरिक यातनाएं देने की प्रथा को बंद कर दिया। परंतु गयासुद्दीन में धार्मिक सहिष्णुता का अभाव था।
- **शराब** के बनाने या **बिक्री** पर प्रतिबंध लगाया गया।
- बंगाल से लौटकर गयासुद्दीन तुगलक ने औलिया को सजा देने की धमकी दी थी। इस पर औलिया ने कहा **'हनोज दिल्ली दूर अस्त'**, अर्थात दिल्ली अभी दूर है।"
- बंगाल अभियान से लौटते समय तुगलकाबाद (गयासुद्दीन तुगलक द्वारा निर्मित) के पास जूना खां द्वारा निर्मित लकड़ी के महल के गिर जाने से 1325 में उसकी मृत्यु हो गयी।

मुहम्मद बिन तुगलक (1325-1351ई.)

- गयासुद्दीन तुगलक के बाद उसका पुत्र जूना खा जिसे **उलगू खां** की उपाधि प्राप्त थी,
- दिल्ली के सुल्तानों में मुहम्मद बिन तुगलक सबसे **अधिक पढ़ा-लिखा** तथा योग्य शासक था। किंतु उसमें व्यवहारिक ज्ञान एवं विचार शक्ति का अभाव था।
- मोरक्को यात्री **इब्नबतूता** उसके समय भारत आया था और अपना विवरण **'रेहला'** में प्रस्तुत किया है। उसने **इब्नबतूता** को काजी नियुक्त किया था। मुहम्मद तुगलक ने एक नया कर (**अबबाब**) भी लगाया।
- सुल्तान ने **दोआब में कर वृद्धि** कर दिया, परंतु उसी समय दोआब में अकाल पड़ गया जिसके कारण व्यापक पैमाने पर किसान आंदोलन हुआ।
- कृषि के विकास हेतु **सोनधर** नामक कृषि ऋण प्रारंभ किया गया तथा एक कृषि विभाग **'दीवान-ए-अमीर कोही'** स्थापित किया गया। मुहम्मद बिन तुगलक ने अपनी **राजधानी दिल्ली से दौलताबाद** हस्तांतरित कर दी।
- इब्नबतूता के अनुसार दिल्लीवासियों को दंड देने के लिए यह परिवर्तन किया गया था। दिल्लीवासियों को भयंकर कष्ट का सामना करना पड़ा। अंतत: सुल्तान को पुनः राजधानी दिल्ली हस्तान्तरित करनी पड़ी।
- सांकेतिक मुद्रा: सुल्तान ने **तांबे व पीतल** की मिश्र धातु का एक सिक्का जारी किया तथा उसकी संगणना चांदी के टंके के बराबर रख दिया, परंतु इसके नकल को नहीं रोका जा सका फलतः यह प्रयोग पूर्णतः असफल रहा। मुहम्मद तुगलक ने सोने का एक सिक्का चलाया जिसे इब्नबतूता **दीनार** कहता है

- **खुरासान एवं कराचिल अभियानः** खुरासन को जीतने की योजना के लिए सुल्तान ने 3,70,000 सैनिकों की विशाल फौज खड़ा किया, किंतु इसे अव्यवहारिक पाकर बाद में त्याग दिया गया। जिससे भयंकर आर्थिक क्षति हुयी।
- खुसरो मलिक के नेतृत्व में उसने एक विशाल सेना पहाड़ी राज्यों को जीतने के लिए भेजा किंतु पर्वतीय भूमि तथा अत्यधिक वर्षा के कारण भीषण क्षति उठानी पड़ी तथा अन्ततः यह प्रयोग भी असफल रहा।
- **1336 ई.** में **हरिहर एवं बुक्का** ने दक्षिण भारत में **विजयनगर साम्राज्य** की स्थापना की।
- अलाउद्दीन बहमन शाह के नेतृत्व में **1347** ई. में स्वतंत्र **बहमनी राज्य** की स्थापना कर ली।
- उसकी मृत्यु पर इतिहासकार **बदायूंनी** कहता है 'सुल्तान को उसकी प्रजा से तथा प्रजा को अपने सुल्तान से मुक्ति मिल गयी।"
- मुहम्मद बिन तुगलक ने 1328 ई. में **जिन प्रभा सूरी** का अपने दरबार में स्वागत किया।

फिरोज शाह तुगलक (1351-1388 ई.)

- 1360 ई. में फिरोज ने जाजनगर के शासक भानुदेव द्वितीय को परास्त कर जगन्नाथ मंदिर को ध्वस्त कर दिया। 1361 ई. में फिरोज ने नगरकोट पर आक्रमण कर वहां के शासक को परास्त कर प्रसिद्ध ज्वालामुखी मंदिर को पूर्णतः ध्वस्त कर दिया।
- सुल्तान ने चौबीस कष्टप्रद करों को हटाकर शरियत के नियम के अनुसार चार कर **खराज, खम्स, जजिया और जकात** लगाये।
- **हक-ए-शर्व** नामक सिंचाई कर उपज का 1/10 भी लिया जाता था।
- फिरोज ने जजिया (गैर-मुसलमानों पर लगने वाला कर) को सख्ती से लागू किया। उसने **ब्राह्मणों को भी इसके दायरे में** लाया। राजस्व बढ़ाने के लिए सुल्तान ने **1,200 बाग** लगवाये जिससे 1 लाख 80 हजार टंका की वार्षिक आय होती थी।
- भूमि को ठेके पर देगे की प्रथा आरंभ की। सिंचाई के लिए फिरोज ने **अनेक नहरों** का निर्माण करवाया। **रजववाडी व उलुगखानी** दो प्रमुख नहरों का निर्माण उसने कराया। सबसे बड़ी नहर यमुना से हिसार तक 150 मीली थी। (रजतवाही नहर)

- फिरोज ने **300 नये नगरों** की स्थापना की जिसमें जौनपुर, हिसार, फिरोजाबाद(दिल्ली), फिरोजपुर इत्यादि प्रमुख थे। खिजाबाद तथा मेरठ से **अशोक के दो स्तम्भ** दिल्ली लाये गये।
- अपने लोक कल्याणकारी कार्यों के अंतर्गत उसने एक रोजगार दफ्तर, **दीवाने खैरात** के नाम से एक दानशाला तथा **दारुल सफा** के नाम से एक खैराती अस्पताल की स्थापना की।
- फिरोज तुगलक को दासों का बहुत शौक था। उसने दासों की देख-भाल हेतु **दीवान-ए-बंदगान** नामक दास विभाग की स्थापना करवाई। उसके राज्य में दासों की संख्या 1,80,000 तक हो गयी थी।
- बरनी ने **फतवा ए-जहांगीरी** तथा **तारीख-ए फिरोज शाही** की रचना फिरोज तुगलक के समय ही की।
- फिरोज ने अपनी आत्मकथा **फतुहात-ए फिरोज शाही** के नाम से लिखी।
- फिरोज के समय तांबा एवं चांदी के मिश्रण से निर्मित सिक्के जारी करवाए गये जिसे सम्भवतः **अद्धा एवं बिख** कहा जाता था। उसके समय **'शशगनी'** छः जीतलों के बराबर का एक विशेष सिक्का था।
- नासिरुद्दीन महमूद शाह (1394-1412)- वह तुगलक वंश का अंतिम सुल्तान था। महमूद शाह का शासन दिल्ली से पालम (आलम से पालम तक) तक ही रह गया था। दौलत खा लोदी को पराजित कर खिज खां ने दिल्ली की गद्दी को हस्तगत कर लिया।

सैय्यद वंश (1424 -1451)

खिज्र खां (1414-1421 ई.

- सैय्यद वंश के संस्थापक **खिज्र खां** ने सुल्तान की उपाधि धारण नहीं की उसने **रयाते आला** की उपाधि धारण की।

मुबारक शाह (1421 ई.-1434 ई.) मुबारक शाह जब अपने द्वारा निर्मित नये नगर का निरीक्षण कर रहा था, असंतुष्ट वजीर सरवर-उल-मुल्क द्वारा मारा गया।

लोदी वंश 1451 -1526

बहलोल लोदी (1451-89 ई.)

- दिल्ली में प्रथम अफगान राज्य का संस्थापक **बहलोल लोदी** था। बहलोल लोदी मलिक काला का पुत्र था वह सरदारों के साथ समानता का व्यवहार करता था **सल्तनत का सबसे लम्बा कार्यकाल** लिया।

सिकन्दर लोदी (1489-1517 ई)

- **1504** ई. में सिकन्दर लोदी ने **आगरा नगर** की नींव डाली तथा उसे अपनी राजधानी बनाया। सिकन्दर ने भूमि के लिए एक प्रामाणिक पैमाना गंजे सिकन्दरी 30 इंच का गलाया।
- मुसलमानों को ताजिया निकालने एवं मुसलमान स्त्रियों के पीरों एवं सन्तों के मजार पर जाने पर सुल्तान ने प्रतिबंध लगाया।
- उसने **गुलरूखी** शीर्षक से फारसी में कविता लिखी। सिकन्दर लोदी ने **संगीत** को प्रोत्साहन दिया।
- उसने हिंदुओं पर जजिया कर पुनः लगा दिया।

इब्राहिम लोदी (1517-1526 ई.)

- इब्राहिम लोदी अमीरों की सर्वसम्मति से इब्राहिम शाह की उपाधि धारण कर आगरा में गद्दी पर बैठा।
- इब्राहिम तथा राणा सांगा के मध्य (**खतोली का युद्ध**) 1518 मे होता है।
- **21 अप्रैल, 1526 ई. को पानीपत के प्रसिद्ध युद्ध** में इब्राहिम लोदी मारा गया तथा बाबर ने एक नये राजवंश की नींव डाली।

सल्तनतयुगीन प्रशासन

- "सुल्तान की उपाधि तुर्की शासकों द्वारा प्रारंभ की गयी।
- **मजलिस-ए-खलवत**: दिल्ली सल्तनत में मुल्तान की सहायता के लिए मंत्रिपरिषद होती थी जिसे 'मजलिस-ए-खलवत' कहा जाता था। निम्न विभाग राज्य के चार स्तम्भ माने जाते थे
- **वजीरः** यह विशेष रूप से वित्त विभाग का प्रमुख होता था। वजीर का कार्यालय दीवाने-ए-विजारत कहा जाता था।
- **मुस्तफी (महालेखा परीक्षक)** यह हिसाब-किताब की जांच करता था।

- **मुजमुआदार:** आय-व्यय को ठीक रखता था। लोगों को उधार देकर उसका हिसाब रखना इसका काम था।
- **खजीन (खजांची):** नकद रुपया इसके पास रहता था। इसका कार्यालय कोषाध्यक्ष के अनुरूप था।
- **दीवाने अमीर कोही:** इस विभाग का कार्य जिस भूमि पर खेती न हो रही हो उसे खेती योग्य बनाना था। इसकी स्थापना मुहम्मद बिन तुगलक ने की थी।
- **दीवाने रिसालतः** यह विदेश विभाग था।
- **सद्र - उस सुदूर:** यह धर्म विभाग का अध्यक्ष होता था।
- दिल्ली सल्तनत अनेक प्रांतों में बंटा था जिसे **'इक्ता'** कहते थे।
- **'इक्ता'** का प्रमुख **'मुक्ता'** या **'वली'** या **'सूबेदार'** कहलाता था। शिक **'परगनों'** में एवं परगना **'गांवों'** में विभाजित था।

सैन्य संगठन

- सल्तनत काल में सेना विभाग का प्रधान आरिज-ए-मुमालिक होता था। अलाउद्दीन ने **घोड़ों को दागने** की और सैनिकों का हुलिया रखने की प्रथा चलायी थी।
- सेना में बाबर के आने से पूर्व तोपें नहीं थीं, केवल पत्थर फेंकने वाली मशीनें थीं।
- सैन्य व्यवस्था **दशमलव प्रणाली** पर आधारित थी।

न्याय विभाग

- गैर-मुसलमानों का धार्मिक तथा व्यक्तिगत कानून: दिल्ली सल्तनत हिंदुओं के सामाजिक मामलों में न्यूनतम हस्तक्षेप करती थी और उनके मुकदमों का निर्णय पंचायतों में पंडित तथा विद्वानों द्वारा किया जाता था। दिल्ली सुल्तान मुकदमों का निर्णय काजियों और मुफ्तियों की सहायता से करता था। प्रांतीय गर्वनर भी इसी के अनुरूप न्याय करते थे। काजी और मुफ्ती दोनों ही कानूनी विशेषज्ञ होते थे।

कृषि व्यवस्था तथा भू-व्यवस्था

- अक्ता भूमि का यह विशेष खंड होता था, जो सैनिकों एवं सैनिक अधिकारियों को बांटा जाता था। अक्ता प्राप्त करने वाले अधिकारियों को मुक्ता, अमीर तथा कभी-कभी मलिक भी कहा जाता था।

- खालसा भूमि वह भूमि थी जिसका प्रबंध सुल्तान की ओर से होता था और जिससे प्राप्त होने वाली आय केंद्रीय सरकार के लिए सुरक्षित रहती थी।
- अनुदान भूमिः सल्तनत काल में सुल्तान के अधिकार से मुक्त भूमि को 'अनुदान' कहा है। यह अनुदान मिल्क (राजा द्वारा प्राप्त), वक्फ (धर्म की सेवा के आधार पर प्राप्त भूमि) तथा इनाम (पेंशन) थे। इस प्रकार की भूमि पर किसी प्रकार का कर नहीं लगाया जाता था।
- जकातः यह कई अर्थों में प्रयुक्त होता था, जैसे पशु कर, निर्यात कर अर्थात व्यापारिक वस्तुओं की चुंगी, सोने और चांदी के कर एवं भूमि कर
- खराज - गैर मुसलमानों पर लगाया गया भू-राजस्व था। खराज देने वाली भूमि को यदि मुसलमान जोतता था तो उससे खराज लिया जाता था।
- खम्स - वस्तुतः यह लूट का धन था, जो युद्ध में शत्रु राज्य की जनता से लूटा जाता था।
- तैयार फसल का माप-तौल करने के बाद उसके आधार पर सरकारी करों को मांगने की प्रणाली को विविध नाम दिये गये हैं: बटाई, किस्मत-ए-गल्ला, गल्ला बक्शी अथवा हासिल बटाई तीन प्रकार की होती थी।
- 1. खेत बटाई: खड़ी फसल से अथवा खेत बोने के तुरंत बाद ही सरकारी हिस्सा खेत बांट कर निर्धारित करना।
- 2. लंक बटाई: फसल काटने के बाद किसान फसल को खलिहान में लाता था। यहां अनाज से भूसा अलग निकाले बिना, उसका राज्य व किसान में हिस्सा बांटा जाता था।
- 3. रास बटाई इसका अभिप्राय अनाज से भूसा अलग करने के पश्चात लगान का हिस्सा निर्धारित करना होता था।
- **मार्को पोलो** एवं **इब्न बतूता** ने तुर्किस्तान एवं ईरान से घोड़े के निर्यात का वर्णन किया है। गुजरात का **देवल** अंतरराष्ट्रीय बंदरगाह था।
- अदन एवं मिस्र से दासों का व्यापार होता था।
- भारत में अंगूर ईरान से आयात होता था। इब्नबतूता के अनुसार भारत आने वाले विदेशी यात्रियों द्वारा भेंट ला गई वस्तुओं में सूखे मेवे प्रमुख थे। बाबरनामा में भारतीय श्वेत वस्त्रों की प्रशंसा की है।
- तांबे के सिक्के को **दिरहम** कहा जाता था।

सल्तनतकालीन स्थापत्य कला

- कुब्बत उल-इस्लाम मस्जिद: कुतुबुद्दीन ऐबक ने दिल्ली में राय पिथौरा के किले पर अधिकार कर सत्ताइस जैन मंदिरों के ध्वसावशेष पर वहां कुव्वत-उल-इस्लाम (जामा मस्जिद) का निर्माण 1198 ई. में करवाया। इल्तुतमिश एवं अलाउद्दीन के समय मस्जिद के क्षेत्रफल को बढ़ाया गया। इसमें स्पष्ट रूप से हिंदू प्रभाव दृष्टिगत होता है।
- कुतुब मीनार: दिल्ली में मेहरौली के पास कुतुबुद्दीन ऐबक ने ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी की स्मृति में कुतुब मीनार का निर्माण कार्य 1206 ई. में शुरू करवाया। कुतुबुद्दीन इसके एक ही मंजिल का निर्माण करवा पाया. शेष मंजिलों का निर्माण इल्तुतमिश के समय पूरा किया गया। फिरोज शाह तुगलक एवं सिकन्दर लोदी के समय इसकी मरम्मत करवायी गयी।
- अढ़ाई दिन का झोपड़ा यह इमारत सम्राट विग्रहराज द्वारा निर्मित संस्कृत मंदिर को तोड़कर अजमेर में बनवाया गया था। यह मूलतः एक मस्जिद है। इसका विस्तार इल्तुतमिश के समय हुआ।
- इल्तुतमिश का मकबरा : इल्तुतमिश द्वारा इस मकबरे का निर्माण कुब्बत-उल-इस्लाम मस्जिद के समीप 1235 ई. में करवाया गया। मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह इल्तुतमिश ने निर्मित करवाया तथा अलाउद्दीन खिलजी के समय इसका विस्तार हुआ।
- अलाई दरवाजाः अलाउद्दीन द्वारा एक ऊंची कुर्सी पर निर्मित इस दरवाजे में बनी गुम्बद में पहली बार विशुद्ध वैज्ञानिक विधि का प्रयोग हुआ है।
- कोटला फिरोजशाह: फिरोजशाह तुगलक द्वारा निर्मित जामा मस्जिद के सामने एवं कुश्क-ए-शिकार महल के सामने अशोक का टोपरा एवं दिल्ली-मेरठ स्तंभ खड़ा है।
- फिरोजशाह का मकबराः संगमरमर एवं लाल पत्थर से निर्मित इस वर्गाकार इमारत का गुम्बद **अष्टकोणीय** ड्रम पर निर्मित है।
- मोठ की मस्जिद का निर्माण सिकन्दर लोदी के वजीर मिया मुआ ने करवाया था। मार्शल के अनुसार 'लोदियों की स्थापत्य कला में जो भी सबसे सुन्दर है उसका संक्षिप्त रूप मोठ की मस्जिद में विद्यमान है।'

विजयनगर साम्राज्य (किशकिन्धा)

- विजयनगर साम्राज्य की स्थापना **1336** में **संत विद्यारण्य** के प्रभाव से **हरिहर और बुक्का** ने की थी।

संगम वंश (1336 1485)

- हरिहर और बुक्का प्रथम संगम के पुत्र थे और उन्होंने अपने पिता के नाम पर ही अपने वंश की स्थापना की। अतः **1336** ई० में स्थापित विजय नगर के पहले वंश को 'संगम वंश' कहा जाता है।
- हरिहर प्रथम ने 1352-53 ई. में दो सेनाएं दो राजकुमारों **सवन्ना** और **कुमार कम्पन** के नेतृत्व में मदुरा के सुल्तान के विरुद्ध भेजी और उसे विजयनगर में मिला लिया।
- बुक्का ने **'वेद मार्ग प्रतिष्ठापक'** की उपाधि ग्रहण की।
- 1410 ई में उसने तुंगभद्रा पर बांध बनवाकर अपनी राजधानी विजयनगर तक नहरें (जलसेतु या जलप्रणाली) निकलवाई।
- देवराय प्रथम के शासन काल में **इतालवी यात्री निकाली कोन्टी** ने विजयनगर की यात्रा की।
- देवराय द्वितीय के समय में फारसी (ईरानी राजदूत **अब्दुर्रज्जाक** ने विजयनगर की यात्रा की थी।
- चीनी चात्री **माहुआन** 1451 ई. में **मल्लिकार्जुन** के समय में विजयनगर आया था। **विरूपाक्ष द्वितीय** संगम वंश का अन्तिम शासक था।

सालुव वंश (1405-1505)

- नरसिंह सालुव ने 1485 ई. में सालुव वंश की स्थापना की।
- 1505 ई. में नरसा नायक के पुत्र वीर नरसिंह ने सालुव नरेश इम्माडि नरसिंह की हत्या करके तुलुव राजवंश की स्थापना की।

तुलुव वंश (1505-1570)

- 1509 ई. में वीर नरसिंह ने स्थापना परन्तु इसकी मृत्यु के बाद उसका अनुज **कृष्ण देवराय** (1509-39) सिंहासनारूढ़ हुआ।
- वह विजयनगर साम्राज्य में महानतम एवं भारत के महानशासकों में से एक था।

- कृष्ण देवराय का पुर्तगालियों से बिजापुर से शत्रुता तथा घोड़ों की आपूर्ती के कारण अच्छे संबंध थे।
- कृष्ण देवराय ने अपने प्रसिद्ध तेलगू **आमुक्तमाल्यद** में अपने राजनीतिक विचारों और प्रशासनिक नीतियों का विवेचन किया है। उसके दरबार में तेलगू के **आठ महान विद्वान** एवं कवि सुशोभित थे। अतः उसे **आन्ध्र भोज** भी कहा जाता है।
- उसके शासनकाल में पुर्तगाली यात्री **डोमिगो पायस** ने विजयनगर साम्राज्य की यात्रा की।
- पायस ने विजयनगर राजधानी की अतिशय प्रशंसा की और लिखा कि 'इसके बाजारों में सम्पूर्ण विश्व की ऐसी कोई वस्तु नहीं है जो न बिकती हो।
- कृष्ण देवराय के शासन काल में एक अन्य पुर्तगाली यात्री **डुआर्ट बारबोसा** ने भी यात्रा की जिसने समकालीन सामाजिक एवं अर्थिक जीवन का बहुत सुन्दर वर्णन किया। उसने **हजारा मन्दिर** तथा **विट्ठल स्वामी के मन्दिर** का निर्माण कराया।

आरवीडु वंश (1570-1650)

- 1570 ई. में **तिरूमल** ने तुलुव वंश के अन्तिम शासक सदाशिव को अपदस्थ करके आरवीडु वंश की स्थापना की।
- वेंकट द्वितीय की चित्रकला में बड़ी रूची थी, इसे यूरोपीय चित्र बहुत पसंद थे, इसने दो जेसुइट चित्रकार अपनी सेवा में रखे।

विजयनगर साम्राज्य का प्रशासन

- राज्यपरिषद के बाद केन्द्र में मंत्रिपरिषद होती थी जिसका प्रमुख अधिकारी **'प्रधानी'** या **"महा प्रधान'** होता था।
- मन्त्रिपरिषद के अध्यक्ष को **'सभा** नायक' कहा जाता था।
- विजयनगर जैसे विशाल साम्राज्य पर प्रशासन के लिए उसे अनेक प्रान्तों में विभाजित किया गया था। प्रान्त राज्य कहलाते थे; **मण्डल** (कमिश्नरी) प्रांतों के अन्तर्गत थे; **नाडु** (परगना या तहसील)- कोट्टम या **वलनाडु** के अन्तर्गत थे, **कोट्टम** या **वलनाडु** जिले कहलाते थे। स्थल एवं सीमा- कुछ गांवों के समूह होते थे।
- प्रशासन की सबसे छोटी इकाई **उर** या **ग्राम** थी।
- विजयनगर सम्राटों ने **आयगार व्यवस्था** द्वारा स्थानीय प्रदेशों में शासन की व्यवस्था प्रचलित की।

- सामाजिक और सामुदायिक करों में **'विवाह कर'** बहुत रोचक है। यह कर वर और कन्या दोनों पक्षों से वसूल किया जाता था।
- खेती में लगे कृषक मजदूर **कुदि** कहलाते विजयनगर का सर्वाधिक प्रसिद्ध सिक्का स्वर्ण का **'वराह'** था सोने के छोटे सिक्के को **प्रताप** तथा **फणम्** कहा जाता था। चांदी के छोटे सिक्के **तार** कहलाते थे। विजयनगर का **बराह** एक बहुत सम्मानित सिक्का था।
- विजयनगर में दास प्रथा प्रचलित थी। मनुष्यों के क्रय-विक्रय को **बेस-वग** कहा जाता था।
- मन्दिरों में देव पूजा के लिए रहने वाली स्त्रियों को **देवरानी (देववासी)** कहा जाता था।
- लिंगायत सम्प्रदाय की विधवाओं को जीवित दफना दिया जाता था।
- **शतरंज एवं पासा** खेल बहुत लोकप्रिय था। कृष्ण देवराय स्वयं बड़े शतंरज प्रेमी थे।

बहमनी राज्य

- मुहम्मद बिन तुगलक के शासन काल के अन्तिम दिनों में **जफर खाँ (हसन गंगू)** ने 1347 ई० में बहमनी साम्राज्य की नींव डाली। उसने **गुलबर्गा** को अपने साम्राज्य की राजधानी बनाया तथा उसका नाम **अहसानाबाद** रखा।
- अपने शासन के अन्तिम दिनों में बहमनशाह ने **दाभोल** पर अधिकार किया जो पश्चिम समुद्र तट पर बहमनी साम्राज्य का सबसे महत्वपूर्ण बन्दरगाह था।
- मुहम्मद शाह प्रथम के शासन में **प्रथम बार बारूद का प्रयोग** हुआ इनकी राजभाषा **मराठी** थी।
- उसने अकबर के फतेहपुर सीकरी की भांति भीमा नदी के किनारे **फिरोजाबाद** नगर की नींव डाली।
- अलाउद्दीन की मृत्यु के बाद उसका ज्येष्ठ पुत्र **हुमायूँ** शासक बना। वह इतना निष्ठुर था कि उसे **'जालिम'** की उपाधि दी गई। इसे **'दक्कन का नीरो'** भी कहा जाता था।
- **मुहम्मद तृतीय** के शासन काल में रूसी यात्री **निकितिन** ने बहमनी राज्य की यात्रा की थी।
- इस वंश का अन्तिम सुल्तान **कली मुल्लाशाह** था। 1527 ई. में उसकी मृत्यु के बाद बहमनी साम्राज्य का अन्त हो गया।
- इमादशाही और निजामशाही राजवंशों के संस्थापक हिन्दू से इस्लाम धर्म स्वीकार करने वाले दक्कनी लोग थे।

- सबसे पहले बहमनी साम्राज्य से अलग होने वाला क्षेत्र **बरार** था, जिसे फतहउल्ला इमादशाह (हिन्दु से मुस्लमान) ने 1484 ई. में स्वतन्त्र घोषित करके इमादशाही वंश की स्थापना की। 1547 ई. में बरार को अहमद नगर ने हड़प लिया।
- बीजापुर के सूबेदार **यूसुफ अदिल खाँ** ने 1489-90 ई. में बीजापुर को स्वतन्त्र घोषित करके आदिलशाही वंश की स्थापना की।
- इब्राहीम के बाद अली **आदिलशाह द्वितीय** 1580 ई. में शासक बना। इसे **जगतगुरु** को उपाधि प्राप्त हुई। गरीबों की सहायता के कारण। उसे '**अबलाबाबा**' अथवा '**निर्धनों का मित्र**' कहा जाता था। इस काल में सुल्तान की चाची **चांदबीबी बीजापुर** की वास्तविक शासिका रहा।
- 1686 ई. में बीजापुर का एक स्वतन्त्र राज्य के रूप में अस्तित्व समाप्त हो गया जब उसे मुगल बादशाह औरंगजेब ने जीतकर अपने साम्राज्य में मिला लिया।
- 1633 ई. मुगल सम्राट शाहजहाँ ने अहमदनगर को मुगल साम्राज्य में मिला लिया।
- **मुहम्मद कुली** हैदराबाद नगर का संस्थापक था। 1687 ई. में औरंगजेब ने इस राज्य पर अधि कार कर उसे मुगल साम्राज्य में मिला लिया।
- बहमनी साम्राज्य से स्वतन्त्र होने वाले राज्य क्रमशः **बंरार** (इमादशाही वंश), **बीजापुर** (आदिलशाही, **अहमदनगर** (निजामशाही), **गोलकुण्डा** (कुतुबशाही) तथा **बीदर** (बरीदशाही वंश) हैं।

मुगल साम्राज्य

- मूलत: मुगल तैमूर के वंशज थे। बाबर पितृ पक्ष की तरफ से तैमूर का पांचवां तथा मातृ पक्ष से मंगोल शासक चंगेज खां के द्वितीय पुत्र चगताई का वंशज (14 वां) था

बाबर (1526-30 ई.)

- **जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर** भारत में मुगल वंश का संस्थापक था। उसका जन्म 24 फरवरी, 1483 ई. को फरगना में हुआ था। उसके पिता का नाम **'उमर शेख मिर्जा'** व मां का नाम **कुतलुगनिगार** खां था।
- बाबर अपने पिता की मृत्यु के बाद फरगाना की गद्दी पर 11 वर्ष की उम्र में 1494 ई. बैठा।
- 1504 में काबूल पर 1507 में **पादशाह** की उपाधि धारण किया। बाबर के चार पुत्र थे **हुमायूँ कामरान, असकरी तथा हिंदाल**
- बाबर ने **तुर्की भाषा** में लिखित अपनी आत्मकथा **बाबरनामा** में पांच मुस्लिम शासकों (बंगाल, दिल्ली, मालवा, गुजरात एवं बहमनी) तथा दो हिंदू शासकों **विजयनगर** व **मेवाड़** का उल्लेख किया है। इनमें विजयनगर के **कृष्णदेव राय** को तत्कालीन भारत का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक बताया है।
- बाबर को भारत आने का न्योता दौलत खां लोदी तथा इब्राहिम लोदी के चाचा आलम खां लोदी ने दिया था। हालांकि बाबर ने अपनी आत्मकथा में राणा सांगा द्वारा आमंत्रण का भी उल्लेख किया है।
- **12 अप्रैल, 1526 ई.** को बाबर पानीपत पहुंचा। उसने पानीपत के प्रथम युद्ध में भारत के अफगान शासक इब्राहिम लोदी को बुरी तरह परास्त किया। इस युद्ध में बाबर ने मंगोल सेना व **तुलगुमा पद्धति** का प्रयोग किया। इस युद्ध के पश्चात काबुल के प्रत्येक नागरिक को एक एक चांदी का सिक्का दिया। अपनी उदारता के कारण वह **कलंदर** कहलाया।
- बाबर व राणा सांगा की सेनाओं के मध्य **खानवा का युद्ध (16 मार्च, 1527 ई.)** हुआ। राणा सांगा की पराजय हुई और उसे उसके ही सामंतों ने जहर देकर मार डाला। बाबर ने खानवा युद्ध में **जेहाद** का नारा दिया। उसने युद्ध में विजयी होकर **'गाजी'** की

उपाधि धारण की। उसने मुसलमानों पर लगने वाले **तमगा** नामक कर कर समाप्ति की घोषणा की।

- **1528 ई**. में बाबर ने **चंदेरी के युद्ध** मे मेदिनी राय को हराया।
- बंगाल की ओर बढ़कर **6 मई, 1529 ई.** को बाबर ने **घाघरा के युद्ध** में अफगानों को पराजित किया।
- बाबर को मृत्यु **26 दिसंबर, 1530 ई**. को हुई। बाबर का मृत शरीर पहले यमुना के किनारे आगरा के रामबाग में दफनाया गया। लेकिन बाद में उसकी इच्छा के अनुसार **काबुल** में दफनाया गया।
- बाबर ने आगरा में नूर अफगान नामक एक बाग लगवाया जिसे **रामबाग** कहा जाता है।
- बाबर ने अपनी आत्मकथा **तुर्की भाषा** में लिखी थी, जिसका नाम था **बाबरनामा या तुजुके बाबरी।** इसका फारसी में अनुवाद इस्किन व अब्दुर्रहीम खानखाना ने तथा अंग्रेजी में अनुवाद श्रीमती बेबरिज ने किया। ने बाबर ने **मुबइयान नामक पद्य शैली** का विकास किया।

हुमायूं (1530-1556)

- हुमायूँ 30 दिसंबर, 1530 ई. को आगरा में 23 वर्ष की अवस्था में सिंहासन पर बैठा।
- हुमायूँ ने अपना साम्राज्य भाइयों में वितरित किये। अपने भाई **कामरान को काबुल और कुधार**, **मिर्जा असकरी को संभल**, **मिर्जा हिंदाल को अलवर व मेवाड़** की जागीरें दी
- **1553 ई.** में हुमायूँ ने **दीनपनाह नामक** नये शहर की स्थापना की।
- हुमायूँ तथा शेर खां (शेरशाह) के बीच बक्सर के निकट **चौसा का युद्ध 29 जून, 1539 ई**. को हुआ, जिसमें मुगलों की पराजय हुई। चौसा की जीत के बाद शेरखां ने **'शेरशाह'** की उपाधि धारण की, अपने नाम के सिक्के चलवाए और फतवा पढ़ा। शेरशाह का वास्तविक नाम **फरीद खां** था।
- **27 मई, 1540 ई.** को **कन्नौज का युद्ध या बिलग्राम का युद्ध** शेरशाह तथा हुमायूं के बीच एक माह की प्रतीक्षा के बाद कन्नौज के पास गंगा के किनारे हुआ। इसमें भी अफगानों ने मुगल सेना को हरा दिया। हुमायूँ को गद्दी छोड़कर भागना पड़ा और दिल्ली की सल्तनत शेरशाह के अधिकार में चली गई।
- हिन्दुस्तान को पुनः जीतने की भावना से हुमायूँ **5 सितम्बर 1554 ई.** को अपनी सेना के साथ पेशावर पहुंचा। फरवरी 1555 ई. में उसने लाहौर पर कब्जा कर लिया।

- **15 मई, 1555 ई.** को हुमायूँ ने नसीब खां एवं तातार खां के सेनापतित्व वाली अफगान सेना को **मच्छीवाड़ा के युद्ध** में पराजित कर सम्पूर्ण पंजाब पर अधिकार कर लिया।
- 23 जुलाई, 1555 ई. को हुमायूँ एक बार फिर दिल्ली की गद्दी पर बैठा। **24 जनवरी, 1556 ई.** को दीनपनाह में स्थित अपने पुस्तकालय की सीढ़ीयां उतरते समय उसे सांघातिक चोट लगी और वह इस दुनिया से चल बसा।
- उसके बारे में लेनपूल लिखता है **'हुमायूं जीवनभर लड़खड़ाता रहा और लड़खड़ाते हुये अपनी जान दी।"**
- अबुल फजल ने हुमायूं को **'इंसान-ए-कामिल'** कहा।

प्रमुख युद्ध -

- कालिंजर का आक्रमणः 1532 ई.
- दौहरिया का आक्रमण: 1532 ई.
- चुनार का आक्रमणः 1532 ई.
- मालवा एवं गुजरात विजयः 1535-36 ई.
- चौसा का युद्ध: 1539 ई.
- बिलग्राम एवं कन्नौज का युद्ध: 1540 ई.
- मच्छीवाड़ा का युद्ध 1555 ई.
- सरहिन्द का युद्ध: 1555 ई.

शेरशाह और सूर साम्राज्य

- शेरशाह का जन्म 1472 ई. में बजवाड़ा (होशियारपुर) में हुआ था। इसके बचपन का नाम **फरीद** था।
- दक्षिण बिहार के तत्कालीन शासक बहार खां ने निहत्थे हाथ एक शेर मार देने पर उसे **शेर खां** की उपाधि प्रदान की।
- 1539 ई. में चौसा के युद्ध में अंतिम रूप से मुगल बादशाह हुमायूं को पराजित करके शेर खां दिल्ली के सिंहासन पर बैठा और **शेरशाह** की उपाधि धारण की।
- 1529 में बंगाल के शासक को नूसरतशाह को पराजित करने के पश्चात **हजरते आला** की उपाधि ग्रहण की थी।

- **1544 ई. में सैमल की लड़ाई** में मालदेव (मारवाड़ के शासक) को हराकर शेरशाह ने अजमेर, जोधपुर एवं मेवाड़ पर अधिकार कर लिया। **जयता व कुप्पा** नामक राजपूत सरदारों ने अपनी वीरता से शेरशाह का मन मोह लिया। इसी लड़ाई के दौरान शेरशाह ने कहा था- **'एक मुठ्ठी बाजरे के हेतु हिन्दुस्तान के बादशाहियत खो दिया होता'** शेरशाह का **अंतिम युद्ध अभियान 1545 ई. में कालिंजर** में माना जाता है जिसका शासक कीरत सिंह था। उक्का नामक आग्नेयास्त्र चलाते समय बारूद में विस्फोट होने से 22 मई, 1545 ई. को शेरशाह की मृत्यु हो गई।
- प्रशासनिक सुधारक के रूप में उसे अकबर का अग्रदूत कहा जाता है।
- शेरशाह ने स्थानीय उत्तरदायित्व का सिद्धांत लागू किया। स्थानीय अधिकारी यदि हत्यारे या डकैती का पता नहीं लगा पाते तो उन्हें ही उसकी सजा दी जाती थी। सुरक्षा इतनी कड़ी होती थी कि अहमद खां शेरवानी को कहना पड़ा कि 'बिल्कुल अशक्त वृद्ध अशर्फियों का बाल हाथ पर लिये चला जाय और जहाँ चाहे वहाँ पड़ा रहे। चोर या लुटेरे की मजाल नहीं कि, आँख भर कर उसकी ओर देख सके।'
- शेरशाह ने निष्पक्ष न्याय और जल्द फैसले पर भी ध्यान दिया। उसने **'सुल्तान उल अदल'** की उपाधि धारण की थी। उसका मानना था कि न्याय कार्य सभी धार्मिक कार्यों में श्रेष्ठ है।
- शेरशाह- प्रत्येक **बुधवार** को अपनी अदालत लगाता था।
- सेना को **नकद वेतन देने की व्यवस्था** की और **घोड़ों को दागने एवं सैनिकों की हुलिया** लिखने की प्रथा को पुनः शुरू किया।

शेरशाह के सुधार

- शेरशाह के समय भूमि को उपज के आधार पर अच्छी, साधारण एवं खराब श्रेणियों में विभाजित किया गया था। उसके शासनकाल में महान भू-विशेषज्ञ **'टोडरमल** खत्री' था, जिसने आगे चलकर अकबर के साथ भी कार्य किया।
- शेरशाह ने भूमि की माप के लिए 32 अंक वाला **'सिकन्दरीगज'** एवं **'सन की डंडी'** का प्रयोग किया।
- सरकार की ओर से किसानों को **पट्टे** दिये जाते थे और किसान **कबूलियत** पत्र के द्वारा इसे स्वीकार करता था।
- शेरशाह ने 4 बड़ी सड़कें तथा स्थान-स्थान पर यात्रियों के ठहरने के लिए सुविधाजनक सराय बनवाये। उसके द्वारा निर्मित करायी गयी सबसे लम्बी सड़क **बंगाल के सोनार**

गांव से लेकर पेशावर (वर्तमान पाकिस्तान) तक थी, जिसका अस्तित्व आज भी है। यह सड़क ग्रैंड ट्रंक रोड के नाम से जानी जाती है। इसे **सड़क-ए-आजम** भी कहा जाता था।

- **दाम एवं रुपये का अनुपात 64:1** था। शेरशाह के रुपये के विषय में स्मिथ ने कहा कि, 'यह रुपया वर्तमान ब्रिटिश मुद्रा प्रणाली का आधार है।
- शेरशाह ने दिल्ली में **'लंगर'** की स्थापना की, जहाँ पर सम्भवतः 500 तोला सोना हर दिन व्यय किया जाता था।
- शेरशाह ने दो महत्पूर्ण इमारती **सासाराम (बिहार)** में एक झील के मध्य में अपने मकबरे और दिल्ली में **पुराना किला** का निर्माण कराया था।
- सासाराम के मकबरे में पुरानी शैली की पराकाष्ठा और नयी शैली का प्रवर्तन देखा जा सकता है। कनिंघम ने इसे **'ताजमहल से भी सुंदर'** कहा है।
- किसानों को **तकावी कर्ज** भी दिये।
- शेरशाह ने 1700 सरायों का निर्माण करवाया। प्रत्येक सरायों में हिंदुओं एवं मुसलमानों के ठहरने के लिए अलग-अलग व्यवस्था थी।
- शेरशाह के शासनकाल में **जायसी** ने **पदमावत** लिखी

अकबर (1556-1605 ई.)

- अकबर का जन्म अमरकोट के वीरसाल के रेगिस्तानी किले में 15 अक्टूबर, 1542 ई. को हुआ था। उसका राज्याभिषेक **13 वर्ष की आयु** में 14 फरवरी, 1556 को **बैरम खां** की देखरेख में मिर्जा अबुल काजिम द्वारा कलानौर (पंजाब) में किया गया।
- वह 1556-60 तक बैरम खां के संरक्षण में रहा। उसे वकील नियुक्त किया गया तथा **खान-ए-खाना** की उपाधि दी गई।
- **पानीपत की दूसरी लड़ाई (5 नवम्बर, 1556):** हेमू के नेतृत्व में अफगान सेना व बैरम खां के नेतृत्व में मुगल सेना के मध्य लड़ाई हुई। मुगल विजयी रहे।
- बैरम खां व अकबर के बीच **तिलवाड़ा का युद्ध** हुआ जिसमें बैरम खां की पराजय हुयी। मक्का जाते समय **मुबारक खां** नामक अफगान ने बैरम खां की हत्या कर दी। बैरम खां की हत्या (1560) तथा 1562 के बीच वास्तविक शासन अकबर की धाय मां माहम अनगा, उसके पुत्र अधम खां के हाथ में था। इस अवधि **(1560-1562) को 'पेटिकोट शासन'** की संज्ञा दी जाती है।
- 1561 ई. में ही अकबर ने चुनार का किला जीता।

- 1564 ई. में गोंडवाना के गढ़कटंगा को जीता जिसकी शासिका **दुर्गावती** थी। इस राज्य की स्थापना अमन दास ने की थी।
- आमेर का शासक **भारमल** पहला राजपूत राजा था जिसने स्वेच्छापूर्वक अकबर की अधीनता स्वीकार की।
- 1562 में अजमेर के **मोइनुद्दीन चिश्ती** की दरगाह पर जाते समय **भारमल** ने अकबर से अपनी पुत्री **हरखा बाई** के विवाह का प्रस्ताव दिया जिसे ने स्वीकार कर लिया।
- 1567 ई. में अकबर ने चितौड़ पर घेरा डाला। चितौड़गढ़ के किले को मध्य राजस्थान का प्रवेश द्वारा माना जाता था। राजा उदय सिंह ने **जयमल व फतेह सिंह** पर किले का भार सौपकर जंगल में छिप गया। यहां अकबर द्वारा कत्लेआम करावाया गया जो उसके जीवन पर दाग है। जयमल व फतेह की वीरता से प्रभावित होकर उसने आगरा किला के प्रवेश द्वार पर हाथी पर उन दोनों की मूर्तियां स्थापित करवाया। चितौड़ विजय के उपलक्ष्य में **'फतहनामा'** जारी किया गया।
- राजा रामचन्द्र ने अन्य राजपूतों की भांति 1569 ई. में कालिंजर का किला अकबर को सौंप दिया।
- 1570 ई. में मारवाड़ तथा बीकानेर दोनों किले अकबर को सौंप दिए गए तथा बीकानेर का राव मानसिंह को बादशाह के दरबार में मनसबदार बनाया गया।
- **1572 में अकबर ने गुजरात** पर आक्रमण किया। इसी समय उसने **समुद्र का पहली बार दर्शन** किया। गुजरात विजय के उपलक्ष्य में अकबर ने राजधानी फतेहपुर सिकरी ने में **बुलंद दरवाजा** बनाया।
- राणा प्रताप की सेना व मानसिंह तथा आसफ खां के नेतृत्व वाली मुगल सेना के मध्य **हल्दीघाटी का युद्ध (1576 ई.)** हुआ, परन्तु मुगल पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं कर सके।
- कश्मीर के राजा युसुफ से मुगल सेना ने **1586** ई. में कश्मीर को जीता।
- खानदेश (1593 ई) के राजा अली खां ने अकबर का सन्देश मिलने पर समर्पण कर दिया। अकबर ने खानदेश का नाम बदलकर **'घनदेश'** रखा। मुगल सेना ने **चांद बीबी** के प्रबल विरोध का सामना करने के बावजूद 1600 ई. अहमदनगर पर विजय पा ली।
- **1601 ई. में असीरगढ़** को विजित किया गया। ऐसा कहा जाता है कि अकबर ने इस किला को **'सोने की कुजियों'** से खोला। असीरगढ़ की विजय अकबर की अन्तिम विजय थी।
- युसुफजाहियाँ (अफगान बलूचियों) के हमले के समय बीरबल की मृत्यु हो गई थी।

- 1589 में शाहजादा सलीम ने पुर्तगालियों के साथ षडयंत्र कर विद्रोह कर दिया व इलाहाबाद में अपने स्वतंत्र घोषित कर दिया। शाहजादा सलीम के इशारे पर **अबुल फजल की हत्या ओरछा के बुंदेला सरदार वीरसिंह** देव ने कर दिया।
- अकबर 10 अक्टूबर, 1605 ई. को पेचिस की लम्बी बीमारी के बाद चल बसा। उसे सिकन्दरा के मकबरे में दफनाया गया। उसके मकबरे पर बौद्ध प्रभाव झलकता है।
- **1562 ई. में दास प्रथा** पर पूर्ण रोक, **1563 ई. में तीर्थ यात्रा कर** की समाप्ति, **1564 ई में जजिया कर** की समाप्ति कर दी गई।
- 1583 ई. में विशेष अवसरों पर कुछ पशुओं की हत्या पर रोक, सती प्रथा का निषेध भी किया था। लड़कों एवं लड़कियों के लिए विवाह की आयु 16 और 14 वर्ष निर्धारित की गई, विधवा विवाह को प्रोत्साहन, अनुवाद विभाग की स्थापना, शाही चित्रशाला का निर्माण किया गाय।
- 1575 ई. में फतेहपुर सीकरी में एक **इबादतखाना** का निर्माण किया गया। 1577-78 ई. में इबादतखाना को धर्म-संसद में परिवर्तित कर दिया गया अर्थात् सभी धर्मों के लिए इबादतखाना का दरवाजा खोल दिया गया।
- 1579 में **'महजर'** (घोषणा पत्र) जारी किया गया जिसने धर्म मामलों में उसे सर्वोच्च बना दिया।
- **1582 में 'दीन-ए-इलाही' या द-ए-इलाही'** (दैवी एकेश्वरवाद) की स्थापना की गई। इसकी प्रेरणा सुलहकुल से मिली। इसका प्रधान **पुरोहित अबुल फजल** था तथा इस दीन-ए-इलाही धर्म में सम्मिलित होने वाला पहला हिन्दू **बीरबल (महेशदास)** था।
- अकबर ने सूफी मत के **चिश्ती सम्प्रदाय** को संरक्षण प्रदान कर उसमें अपनी आस्था प्रकट की थी। उसने शेख सलीम चिश्ती से प्रभावित होकर अपने बेटे का नाम सलीम रखा था। उसने जैन मुनि हरि को **'जगतगुरु'** तथा जिनप्रभा सूरि को **'युगप्रधान की उपाधि** से सम्मानित किया।
- 1583 ई. में उसने **'इलाही संवत्'** के नाम से नया कैलेण्डर जारी किया था। **बदायूंनी अकबर का विरोधी** था। क्योंकि उसे अकबर की वजह से हिन्दू धर्म की किताबे पढ़नी व भाषा परिवर्तित करनी पड़ी थी।
- अकबर ने मुद्राओं पर सूर्य व चंद्रमा की महिमा बखान करने वाले पद्य अंकित किये।
- अकबर ने अपने शासन काल में दरिद्रों क निःशुल्क भोजन देने के लिए **धर्मपुरा** (हिंदू) **जोगीपुरा** (जोगियों के लिए) तथा **खैरपुर** (मुसलमानों के लिए) में दरिद्रालय खुलवाये थे

- अकरब ने वेश्याओं के लिए **शैतानपुर नगर** की स्थापना की थी।

अकबर के नवरत्न

- 1. **बीरबल** 1583 ई. में न्याय विभाग का सर्वोच्च अधिकारी बनाया गया।
- 2. **अबुल फजल** अकबर का मुख्य सलाहकार, दीन-ए-इलाही धर्म का प्रमुख पुरोहित था, 1602 ई. में बुन्देला सरदार ने इसकी हत्य कर दी।
- 3. **टोडरमल** शेरशाह के अधीन नौकरी शुरू की, 1572 में गुजरात का दीवान, 'दीवान-ए अशरफ के पद पर कार्य करते हुए भूमि सुधार का कार्य किया, 1589 ई. में मृत्यु
- 4. **भगवान दास**ः आमेर के राजा भारमल का पुत्र, इसे 'अमीर-उल-उमरा' को उपाधि मिली थी।
- 5. **तानसेन**ः कण्ठ भरण वाणी विलास' की उपाधि प्राप्त, इसके समय 'ध्रुपद गायन शैली का विकास हुआ।
- 6. **मानसिंह:** मानसिंह के साथ संबंध होने के याद अकबर ने जजिया कर समाप्त कर दिया।
- **7. अब्दुर्रहीम खानखाना**: जहांगीर का गुरु रह चुका था. बाबरनामा का फारसी में अनुवाद किया।
- 8. **मुल्ला दो प्याजा**ः अरब मूल का था, 'दो प्याजा उसकी उपाधि थी।
- 9. **फैजी**: अकबर का दरबारी राजकवि था।

जहांगीर (1605-1627 ई.)

- जहांगीर का जन्म 30 अगस्त, सन् 1569 को राजा भारमल की पुत्री हरखा बाई (मरियम उज्जमानी) से शेख सलीम चिश्त की कुटिया में हुआ था।
- जहांगीर का असली नाम **सलीम** था। शेख सलीम चिश्ती के आशीर्वाद से सलीम का जन्म हुआ था,
- 1599 ई. में सलीम ने अकबर के विरूद्ध विद्रोह कर दिया। अकबर के द्वारा विद्रोह के दमन के लिए भेजे गए अबुल फजल का 1602 ई. में उसने वध करवा दिया।
- सलीम का 3 नवंबर, 1605 को राज्याभिषेक हुआ। इसके उपरांत **'नुरूद्दीन मुहम्मद जहांगीर बादशाह'** की उपाधि धारण की। जोधपुर के शासक उदय सिंह ने अपनी लड़की **जगत गोसाई या जोधाबाई** का विवाह सलीम (जहांगीर) से कर दिया।

- उसकी एक अन्य पत्नी मानसिंह की बहन मानबाई थी जिससे **खुसरो** का जन्म हुआ था। मानबाई को सलीम ने 'शाह बेगम' का पद प्रदान किया था। मानबाई ने बाद में आत्महत्या कर ली थी।
- जहांगीर ने यमुना तट पर एक स्थान से आगरा के किले के शाहबुर्ज तक घण्टियां व एक स्वर्ण न्याय जंजीर लगा दी, जिससे न्याय प्रार्थी बिना किसी सहायता से घण्टी बजाकर सीधे सम्राट से फरियाद कर सके।
- जहांगीर की 12 घोषणाओं को **'आईने-जहांगीरी'** कहा जाता है।
- 1611 ई. में जहांगीर ने **मेहरून्निसा** नामक शेर अफगान की विधवा से विवाह करके उसे (नूरजहां) नूरमहल की उपाधि दी। नूरजहां के पिता **ग्यास बेग** को दीवान या राज्य कर मंत्री नियुक्त किया गया तथा उसे **एतमादउद्दौला** की उपाधि दी गई।
- 1615 ई में उसने अपनी प्रेमिका **अनारकली** के लिए लाहौर में एक सुंदर केंद्र बनवाया।
- सिक्खों के पांचवें गुरू **अर्जुन देव** को शाहजादा खुसरो को सहायता देने के आरोप में मृत्यु दण्ड दिया।
- भेरावल में खुसरो पराजित हुआ और उसे अंधा कर दिया गया। 1622 ई में शाहजहां ने उसकी हत्या करवा दी।
- ब्रिटिश सम्राट जेम्स प्रथम का दूत **कैप्टन हाकिन्स (1608-11)** तथा **सर टामस रो (1615-19)** उसके दरबार में आए थे। जहांगीर ने हॉकिंस को 400 का मनसब दिया था।
- जहागीर के समय **'नूरजहां-गुट'** का बहुत प्रभाव था, जिसमें **शहजादा खुर्रम, एतमाद्दौला तथा आसफ खां** सम्मिलत थे।
- उसने मनसबदारी प्रणाली में **दो अस्पा एवं सिंह अस्पा** की शुरूआत की।
- इसके समय में एक भी मस्जिद नहीं बनाई गई। इसने अपनी आत्मकथा **'तुजुके-जहांगीरी' फारसी** में लिखी।
- जहांगीर की मृत्यु 1627 ई. में लाहौर में हुई। वहीं पर **शहादरा** में उसका मकबरा है।
- जहांगीर ने 1612 ई. में रक्षाबंधन त्योहार मनाया। उसने श्रीकांत नामक एक हिंदू को न्यायाधीश नियुक्त किया। जहांगीर सूरदास का संरक्षक था।
- जहांगीर ने 1618 ई. में तंबाकू के सेवन को प्रतिबंधित कर दिया। नूरजहां की मां **अस्मत बेगम** ने 'इत्र' बनाने की विधि का आविष्कार किया।

शाहजहां (1627-1658 ई.)

- शाहजहां का जन्म 5 जनवरी, 1592 ई. को लाहौर में हुआ। उसकी माता **'जगत गोसाई'** राजपूत राजा उदयसिंह की पुत्री थी। उसके बचपन का नाम **खुर्रम** था।
- 1612 ई. में इसका विवाह आसफ खां की पुत्री **अजुमंद बानो बेगम (मुमताज महल)** से हुआ।
- मलिक अम्बर के पुत्र फतेहखान ने शाहजहां से समझौता कर लिया व 1633 ई. में **अहमदनगर का विलय** मुगल साम्राज्य में कर लिया गया।
- **घरमट का युद्ध 15 अप्रैल, 1658** ई. को दारा शिकोह व औरंगजेब के बीच हुआ।
- शहजादा खुर्रम को **'शाहजहां'** की उपाधि जहांगीर ने 1617 ई. में दक्षिण के अभियान की सफलता पर दिया था।
- उसने 1636 ई. में बीजापुर और गोलकुण्डा के साथ संधि की गोलकुंडा के वजीर मुहम्मद सैय्यद (मीर जुमला) ने शाहजहां 'को कोहिनूर हीरा भेंट किया। 1638 ई. में कन्धार की पुनः प्राप्ति हुई जबकि 1649 ई. में कन्यार अंतिम रूप से मुगलों के हाथ से निकलकर ईरानियों के कब्जे में चला गया।
- शाहजहां ने 1636-37 में **सिजदा व पाबोंस पर प्रतिबंध** लगा दिया और उसके बदले **चहार तस्लीम** की प्रथा चलायी। उसने इलाही संवत के स्थान पर **हिजरी संवत** चलाया।
- उसने हिंदुओं पर **तीर्थयात्रा कर** लगाया। गोहत्या पर लगे प्रतिबंध को भी समाप्त कर दिया। हालांकि खंभात के नागरिकों के अनुरोध पर गो-हत्या को प्रतिबंधित कर दिया।
- उसने झरोखा दर्शन, तुलादान व हिंदू राजाओं को तिलक लगाने की प्रथा समाप्त कर दी।

उत्तराधिकार का युद्ध

- औरंगजेब ने 6 सितम्बर 1657 ई. में शाहजहां को पकड़ कर आगरा के किले में कैद कर दिया तथा अपने भाइयों **दाराशिकोह, मुराद** व **शुजा** को मार कर स्वयं गद्दी पर बैठा। **जहांआरा ने दाराशिकोह** का, **रोशनआरा ने औरंगजेब** का तथा **गौहनआरा ने मुरादबख्श** का साथ दिया।
- **15 अप्रैल, 1658 में धरमत युद्ध** में औरंगजेब व मुरादबख्श की संयुक्त सेना ने जसवंत सिंह व कासिम खां की संयुक्त शाही सेना को पराजित किया।

- **29 मई, 1658 को सामूगढ़ के युद्ध** में औरंगजेब व मुराद की संयुक्त सेना ने शाही सेना को पराजित किया। **5 जनवरी, 1659 को खंजवा के युद्ध** में औरंगजेब ने शुजा को पराजित किया।
- **अप्रैल 1659 में देवराई के युद्ध** में औरंगजेब ने दाराशिकोह को अंतिम रूप से पराजित किया। दारा को मृत्युदंड दिया गया व हुमायुं के मकबरे में दफना दिया गया। बर्नियर के मुताबिक 'दारा को देखने के लिए दिल्ली में विशाल भीड़ एकत्रित थी और सर्वत्र लोग रोते व बिलख रहे थे।"

औरंगजेब (1658-1707 ई.)

- मुहीउद्दीन मुहम्मद औरंगजेब का जन्म 3 नवंबर 1618 को उज्जैन के निकट दोहद में हुआ। मुमताज महल उसकी मां था।
- औरंगजेब का दो बार राज्याभिषेक हुआ था। प्रथम राज्याभिषेक 21 जुलाई 1658 को दिल्ली में हुआ और अबुल मुजफ्फर आलमगीर के रूप में हुआ और दूसरा राज्याभिषेक 5 जून, 1659 को दिल्ली में हुआ।
- मुगलों के साथ शिवाजी का पहला संघर्ष **1656** ई में आरंभ हुआ था।
- **पुरन्दर की सन्धि जून 1665** ई. में **शिवाजी व राजा जयसिंह** के बीच हुई थी। शिवाजी 22 मई, 1666 ई. में औरंगजेब के आगरा दरबार में 'दीवाने आम' में पहुंचे, परन्तु उन्हें कैद कर **जयपुर भवन (आगरा)** में रख दिया गया। वहां से वे गुप्त रूप से भाग कर महाराष्ट्र पहुंच गए। 1686 ई. में औरंगजेब स्वयं दक्षिण पहुंचा व बीजापुर पर कब्जा कर लिया।
- 21 सितम्बर, 1687 ई. में उसने **गोलकुण्डा** पर अधिकार जमा लिया।
- 1682 ई. में अपने पुत्र शाहजादा अकबर का पीछा करते हुये औरंगजेब दक्षिण भारत तक गया। यह उसका अंतिम दक्षिण अभियान था। दक्षिण भारत औरंगजेब का कब्रिस्तान सिद्ध हुआ।
- 1669 ई. में मन्दिरों को धवस्त करने का आदेश दिया। परिणामस्वरूप सोमनाथ, बनारस और मथुरा के केशव राय मंदिर को गिरा दिया गया। 1679 ई. में औरंगजेब ने हिन्दुओं पर पुनः जजिया कर लगा दिया। इसने झरोखा दर्शन व संगीत पर रोक लगायी। उसे **जिंदापीर** व शाही दरवेश कहा जाता था।
- वह भारत को दारूल हर्ब की जगह दारूल इस्लाम देश बनाना चाहता था।

- उसने **सती प्रथा पर प्रतिबंध** लगा दिया तथा **हिंदुओं पर तीर्थयात्रा** कर लगाया। 1707 ई. में अहमदनगर में उसकी मृत्यु हो गई।
- उसके शासन काल में 1668 ई. में गोकुल के नेतृत्व में जाटों ने विद्रोह किया।
- सिक्खों के असन्तुष्ट होने पर उनके गुरु **तेगबहादुर** ने आवाज उठायी। परिणामस्वरूप औरंगजेब ने उन्हें फांसी पर चढ़ा दिया।
- उसके समय में हिन्दू मनसबदारों की संख्या सर्वाधिक थी।
- उसे गुरुवार को पीरों की मजार एवं अन्य कब्रों पर दिये जलाने की प्रथा को बंद करवा दिया।

मुगल प्रशासन

केन्द्रीय प्रशासन

- उनके राजत्व सिधांत का आधार शरिअत था।
- औरंगजेब **हनफी** विचारधारा का परिपोषक था। मुगल बादशाहों ने बादशाह के दो कर्तव्य माने थे; **जहांबानी** (राज्य की सुरक्षा) व **जहांगीरी** (दूसरे राज्यों पर अधिकार)। मुगलकालीन प्रशासन सैन्य शक्ति पर आधारित थी। मंत्रिपरिषद् के लिए **विजारत** शब्द प्रयुक्त हुआ है।
- **वजीर** - अकबर से पूर्व **प्रधानमंत्री** को वजीर कहा जाता था। अकबर के काल में इसे **वकील** कहा जाने लगा।
- **दीवान** - दीवान या **वित्त मंत्री** शाही खजाने का प्रबंध और उसके हिसाब की जांच करता था। अकबर के समय पहले मुजफ्फर खां व बाद में राजा टोडरमल को दीवान नियुक्त किया गया। सादुल्ला खां शाहजहां के समय तथा असद खां औरंगजेब के समय दीवान था। इसके दो सहायक थे- दीवान-ए-खालसा, दीवान-ए-तन व मुस्तौफी
- **मीर बख्शी**: यह सेना की भर्ती, वेतन तथा रखरखाव की व्यवस्था करता था।
- **सद्र-उस-सुदूरः** यह प्रधान न्यायधीश था।
- **मुसतौफी-ए-मुमालिक**: प्रधान लेखापरीक्षक
- **मुहतसीबः** नैतिक व्यवस्था का अधिकारी
- **दारोगा-ए-डाक-चौकी**: डाक अधिकारी
- **वाकिया नवीस**: संदेशवाहक
- **खुफिया नवीसः** गुप्त पत्र लेखक

- **हरकरा-** जासूस तथा विशेष संदेशवाहक

प्रांतीय प्रशासन

- अकबर ने अपने साम्राज्य को **12 सूबों** में विभाजित किया गया। बरार, खानादेश व अहमदनगर के जुड़ने के पश्चात सूबों की संख्या **15** हो गयी थी।
- जहांगीर ने कांगड़ा को विजय कर लाहौर सूबे में शामिल किया गया। शाहजहां के समय कश्मीर, थट्टा व ओडिसा को सूबा बनाया गया। इससे सूबों की संख्या **18** हो गयी। 1689 ई. में औरंगजेब के शासन काल तक बढ़कर **20** हो गयी। उसके समय बीजापुर एवं गोलकुंडा को सूबा बनाया गया।
- **सूबेदार (सिपहसालार):** यह सूबे में बादशाह का प्रतिनिधि व सूबे का प्रमुख था। यह राज्यों की सीमा में कर एकत्र व न्याय आदि का फैसला करता था।
- **दीवान :** प्रांत में वित्त विभाग का अध्यक्ष होता था।
- **कोतवालः** यह सूबों की आन्तरिक सुरक्षा, शान्ति और सुव्यवस्था की देख-रेख करता था।
- सरकार का शासन प्रत्येक सूबा कई (सरकारों) में विभक्त था। जिलों सरकार परगनों में तथा परगना गांवों में विभक्त होते थे।
- 1580 में अकबर ने प्रत्येक परगने में **करोड़ी** नामक एक नये अधिकारी की नियुक्ति की।
- गांवों के अधिकारी खूत, मुकद्दम व चौधरी कहा जाता था। पटवारी उनकी सहायता करता था।
- परगनों के अंतर्गत आने वाले गांवों को **मावदा या दीह** कहा जाता था।
- शाहजहां के समय परगना एवं सरकारों के बीच **चकला इकाई** का निर्माण किया गया।
- बंदरगाहों के प्रशासन की देखभाल के लिए **मुसद्दी** की नियुक्ति की जाती थी।
- **कारकून**: ये क्लर्क का काम करते थे।
- **कानूनगो**: यह परगने के सभी पटवारियों का अफसर होता था और परगने की पैदावार, मालगुजारी आदि बातों का लेखा-जोखा रखता था।

सैन्य व्यवस्था

- सेना के मुख्यतः तीन रूप थे 1. **मनसबदारों की फौजें**- जिनमें दाखिले सिपाही और कुमकी सिपाही भी शामिल थे। 2. **अहदी या सभ्य सिपाही**- जिन्हें मनसब नहीं मिल

सकती थी। 3. **राजपूत राजाओं की सहायक सेनाएं** ये वे सेनाएं थीं, जो लड़ाई के समय साम्राज्य की ओर से लड़ती थीं और ये बड़ी उपयोगी सिद्ध हुई।

- सेना पांच भागों में विभाजित थी। पैदल, घुड़सवार, तोपखाना, हाथी और जल सेना।
- **तोपखाना:** इस विभाग में बन्दूकची या बन्दूक चलाने वाले सशस्त्र सैनिक होते थे। दक्षिण भारत में तोपों का पहला प्रयोग बुक्का प्रथम ने बहमनी के विरुद्ध किया।
- **नौ सेनाः** मुगल अपनी निजी नौ सेना नहीं रखते थे।

मनसबदारी व्यवस्था.

- मनसबदारी प्रथा की शुरूआत संभवत: **चंगेज** खां ने शुरू किया था और उसने अपनी सेना को दशमलव पद्धति के आधार पर सुगठित किया था। अकबर के शासन काल में **सबसे कम मनसब 10 का** तथा **सबसे अधिक मनसब 10,000 का** था। अकबर के शासन काल के अंतिम दिनों में इसे 12,000 कर दिया गया।
- इन पदों को दो वर्गों-जात तथा सवार में विभाजित किया गया। सवार से घुड़सवारों की संख्या का बोध होता था, जिसे मनसबदार अपने अधीन रखता था।
- 500 से नीचे जात श्रेणी वालों को मनसबदार कहा जाता था। 500 से ऊपर व 2500 से नीचे जात श्रेणी होने पर अमीर कहे जाते थे तथा 2500 व उससे ऊपर के उच्चतम जात श्रेणियों के अधिकारियों को **अमीर-ए-उमदा** या **उम्दा-ए-आजम** कहा जाता था।

भूमि व्यवस्था

- अकबर ने शासन के 31 वें वर्ष (1587 ई.) में भूमि की पैमाइश हेतु पुराने **'सिकन्दरी गज'** के स्थान पर नया **'इलाही गज'** का प्रयोग शुरू करवाया अकबर ने 1570-71 ई. में **'जाब्ता प्रथा'** की शुरूआत करवाई।
- **'जाब्ता प्रथा'** के अन्तर्गत भूमि माप एवं वास्तविक पैदावार के आधार पर भू-राजस्व दर तय की जाती थी।
- मुगल काल में **बंटाई या गल्ला बख्शी** प्रणाली का सर्वाधिक प्रचलन था।
- जिस भूमि पर हर साल बुआई होती थी उसे **पोलज** कहा जाता था, जब उसपर बुआई नहीं होती थी तो उसे **परती** कहा जाता था। जब जमीन दो-तीन साल तक बिन बोई रहती थी, तो उसे **चाचर** कहा जाता था और उससे अधिक समय तक काश्त न होने पर वह **बंजर** कहलाती थी।

- अकबर और उसके उत्तराधिकारियों के शासनकाल में राजस्व निर्धारण की चार मुख्य प्रणालियां प्रचलित थीं (क) जब्ती या दहसाला प्रणाली, (ख) बटाई, गल्ला बख्मी या भा-ओली (ग) कनकूत, (घ) नस्का
- अकबर ने **1580 ई. में दहसाला** नाम की नयी प्रणाली लागू की। इस प्रणाली के अन्तर्गत अलग-अलग फसलों के पिछले दस (दह) वर्ष के उत्पादन और इसी अवधि में उनकी कीमतों का औसत निकाला जाता था। इसी औसत उपज का एक तिहाई राजस्व होता। दहसाला प्रणाली जब्ती प्रणाली का विकसित रूप थी।
- जब्ती प्रणाली के प्रारम्भ का श्रेय राजा **टोडरमल** को जाता है।
- शाहजहां ने **नहर-ए-साहिब** (नहर-ए-शाह), **नहर-ए-फैज** (रावी नहर लाहौर) का निर्माण करवाया।

जागीरदारी व्यवस्था

- नकद वेतन के बदले **जमादामी** (अनुमानित आय) के आधार पर जिन मनसबदारों को जागीर दी जाती थी उन्हें जागीरदार कहते थे।

मुद्रा प्रणाली

- बाबर ने चांदी के सिक्कों के एक ओर कलमा व चारों खलिफाओं तथा दूसरी ओर बाबर का नाम लिखवाया।
- बाबर ने काबूल में चांदी का **शाहरुख** तथा कंधार में **बाबरी** नामक सिक्का चलाया।
- अकबर ने **'जलाली'** नाम का मुद्रा चलाया था। मुगलकाल में सोने का सबसे प्रचलित सिक्का **'इलाही'** था। अकबर ने **मुहर** नाम से सोने का सिक्का चलाया। सबसे बड़ा सोने का सिक्का **शंसब** था।
- अकबर ने तांबे का **दाम** चलाया जो रुपये के 40वें भाग के बराबर था। तांबे के अप्रयुक्त सिक्के को **जीतल** कहा जाता था जिसे फुलूस या पैसा भी कहा जाता था।
- अकबर ने अपने सिक्कों पर **राम व सीता की मूर्ति** अंकित करवायी और देवनागरी में **राम-सिया** लिखवाया।
- जहांगीर ने **निसार** नामक सिक्का चलाया जो रुपये के एक चौथाई मूल्य का था
- शाहजहां ने **'आना'** नामक सिक्का चलाया। मुगलकाल में टकसाल के अधिकारी को दारोगा कहा जाता था।

मुगलकालीन संस्कृति तथा शिक्षा

- प्रत्येक मस्जिद में मकतब होता था, जहां छात्रों को शिक्षा दी जाती थी।
- हुमायूं को भूगोल तथा ज्योतिष विद्या में विशेष रूचि थी।
- औरंगजेब की पुत्री जेबुन्निसा ने दिल्ली में **'बैतुल-उल-उलूम'** नामक पुस्तकालय की स्थापना की थी।
- मुगल राज परिवार में उत्पन्न दाराशिकोह भारत: के सबसे बड़े विद्वानों में से एक था। वह **अरबी, फारसी एवं संस्कृत** का बहुत बड़ा विद्वान था। उसने कुछ प्रसिद्ध पुस्तकों का फारसी में लेखन भी किया, जिनमें प्रमुख थी उपनिषद, भागवतगीता, एवं योगवशिष्ठ। रामायण के फारसी अनुवाद, मुस्लिम संतों की सूची, तथा सूफी दर्शन पर बहुत सी पुस्तकें उसने लिखी।
- बाबर की पुत्री गुलबदन बेगम (हुमायूँनामा की लेखिका), नूरजहां, मुमताज महल, जहांआरा बेगम और जेबुन्निसा उच्च शिक्षा प्राप्त महिलाएं थी तथा उन्हें फारसी एवं अरबी साहित्य का अच्छा ज्ञान था।

मुगलकालीन साहित्य

- बाबर ने अपनी आत्मकथा **'तुजुक ए बाबरी'** चगताई तुर्की भाषा में लिखी।
- मुगल राजदरबार की भाषा **फारसी** थी।
- अकबर का राजकवि **अबुल फजल** फारसी का अमीर खुसरो के बाद महानतम कवि था।
- अकबर के शासन काल की प्रमुख साहित्यिक पुस्तकें हैं- मुल्ला दाउद की **तारीखे-अल्फी**, अबुल फजल की **आइन-ए-अकबरी तथा अकबरनामा**, बदायूनी की **मुन्तखाबुत तवारीख**, संकलित हुई।
- महाभारत का अनुवाद **रज्मनामा** नाम से किया गया।
- बदायूंनी ने रामायण का, टोडरमल ने भगवतपुराण का, सरहिंदी ने अथर्ववेद का, फैजी ने लीलावती का, शाहवादी ने राजतंरिगिणी का अनुवाद किया।
- हुमायूँ की बहन **गुलबदन बेगम ने हुमायूँनामा** की रचना की। जहांगीर ने **तुजुक ए-जहांगीरी** नामक अपनी **अत्मकथा** लिखी।
- शाहजहां के काल में उसके दरबारी इतिहासकार **अब्दुल हमीद लाहौरी** ने **पादशाहनामा** की रचना की।

- दाराशिकोह ने **मज्म-उल- बैहरीन** या समुद्रों का मिलन नामक पुस्तक लिखी, जिसमें उसने यह दिखाने का प्रयास किया है कि हिन्दू धर्म और इस्लाम एक ही लक्ष्य के दो मार्ग हैं। दारा द्वारा लिखित अन्य पुस्तकें हैं- **हसनत उल-अरिफीन** तथा **सकिनत-उल-औलिया** । दाराशिकोह ने 52 उपनिषदों का अनुवाद **सिर्र-ए-अकबर** नाम से किया।
- औरंगजेब ने धर्माचार्यों के एक समूह द्वारा इस्लामी कानून का सारसंग्रह तैयार करवाया जिसे **फतवा-ए-आलमगीरी** कहा जाता है।
- रस गंगाधर तथा गंगा लहरी के लेखक जगन्नाथ पंडित शाहजहां के दरबारी कवि थे।
- मलिक मुहम्मद जायसी ने 1540 ई. में **अवधी** में **पद्मावत** लिखा।
- अकबर के दरबारियों में बीरबल, जिसे उसने **'कविप्रिय'** की उपाधि दी थी, एक प्रसिद्ध कवि था। नरहरि (जिसे बादशाह ने महापात्र की उपाधि दी थी), हरीनाथ तथा गंज भी उसके दरबार के उल्लेखनीय लेखक थे। अकबर ने मुहम्मद हुसैन को **जर्रीकलम** की उपाधि से सम्मानित किया था।

संगीत

- तानसेन (रामतनु पाण्डे), जो अकबर के दरबार और मुगलकाल के महानतम संगीतकार थे, तानसेन को वृन्दावन के स्वामी हरिदास ने संगीत की शिक्षा दी थी। तानसेन **ध्रुपद गायन शैली** के महान संगीतकार थे
- जहांगीर के दरबार में तानसेन के जमाता लाल खां और उनके पुत्र विलास खां प्रसिद्ध संगीतकार थे। लाल खां को शाहजहां ने **गुणसमुद्र** की उपाधि से सम्मानित किया था।
- अकबर के दरबार में कुल 36 संगीतकार थे, अकबर स्वयं **नगाड़ा** बजाता था।
- शाहजहां ध्रुपद गायक था। औरंगजेब खुद **वीणा** बजाया करता था। संगीत की पुस्तक **तुहफत-उल-हिन्द** जहांदार शाह के शासन काल में लिखी गयी। औरंगजेब के शासन काल में भारतीय शास्त्रीय संगीत पर सर्वाधिक पुस्तकें लिखी गई, जबकि औरंगजेब **संगीत का विरोधी** था।

स्थापत्यकला

- बाबर ने पानीपत के काबुली बाग में एक मस्जिद बनवायी। नूर अफगान नामक बाग बनवाया। हुमायूँ ने दिल्ली में दीन- पनाह, आगरा में एक किला तथा पंजाब के फतेहाबाद में एक मस्जिद बनवायी।

- अकबर द्वारा निर्मित दिल्ली में हुमायूँ का मकबरा भारतीय तथा फारसी स्थापत्य का उत्कृष्ट नमूना है। यह **पूरी तरह सफेद संगमरमर** का बना है।
- अकबर ने आगरा का किला (1565-73 ई.), इलाहाबाद का किला तथा लाहौर का किला बनवाया।
- 1572 ई. में गुजरात की विजय की स्मृति में नवीन नगर का नाम फतेहपुर (विजय नगरी) रखा गया।
- बुलन्द दरवाजा लाल बलुए पत्थर से बना है।
- फतेहपुर सीकरी में ही शेख सलीम चिश्ती की शुद्ध संगमरमर से निर्मित दरगाह है।
- फतेहपुर सीकरी के भवनों में **दफ्तरखाना** और **दीवान-ए-खास** है। यहां की अवासीय भवनों और महलों में **जोधा बाई का महल** (फतेपुर का सबसे बड़ा महल), बीरबल और मरियम के मकान एवं **पंचमहल** हैं।
- पंचमहल पांच मंजिला है तथा इसकी आकृति को भारत के सभा मंडपों से ग्रहण किया गया है।
- आगरा के निकट पश्चिम में ही सिकन्दरा में अकबर का मकबरा है, जिसे 1613 ई. में जहंगीर ने पूरा किया। इस पर बौद्ध विहारों का प्रभाव है।
- जहांगीर के समय में लाल बलुए पत्थर का स्थान संगमरमर ने ले लिया। इस काल में **पीत्रादुरा** या **जड़ाऊ रंगीन पत्थरों** का प्रयोग शुरू हुआ। पित्रादुरा का प्रथम प्रयोग नूरजहां द्वारा निर्मित अपने पिता **एतमाद-उद-दौला** के आगरा में स्थित मकबरा में हुआ है। यह मकबरा श्वेत संगमरमर से निर्मित है।
- आगरा के लालकिले में शाहजहां द्वारा निर्मित कुछ महत्वपूर्ण भवन है दीवाने-आम दीवाने खास, खास महल, शीशमहल, मुसम्मन बुर्ज या चमेली महल, अंगुरी बाग और मोती मस्जिद मोती मस्जिद विशुद्ध संगमरमर का है। शीश महल शाही स्नानागार था।
- 1639 ई. में शाहजहां ने दिल्ली का लाल किला, लाल बलुवा पत्थर से निर्मित करवाया।
- दिल्ली के लाल किला के अन्दर शाहजहां द्वारा निर्मित भवन हैं- दीवान-ए-आम, मुमताज या खासमहल, रंगमहल या इम्तियाज महल।
- दीवान-ए-खास में ही तख्त-ए-ताऊस या मयूर सिंहासन को प्रतिस्थापित किया गया था। दीवान-ए खास पर ही यह उक्ति ऑकित है- 'पृथ्वी पर यदि कहीं स्वर्ग है, तो वह यहीं है।'

- शाहजहां ने दिल्ली में जामा मस्जिद (1648) नामक भारत का विशालतम मस्जिद बनवाया।
- आगरा में शाहजहां ने अपनी पत्नी अंजुमंद बानो बेगम (मुमताज) की यादगार में **ताजमहल** के नाम से उसका मकबरा बनवाया। 1631 ई. में आरम्भ होकर बाईस वर्ष में 1653 ई. में ताजमहल का निर्माण पूरा हुआ। इसका मुख्य स्थापत्यकार **उस्ताद अहमद लाहौरी** था, जिसे **नादिर-उल-असरार** की उपाधि दी गई। ताजमहल का प्रधान मिस्त्री **ईसा खां** था।
- औरंगजेब ने अपनी पत्नी **रविया दुर्रानी** का मकबरा जो **बीबी का मकबरा** कहलाता है, दौलताबाद में बनवाया जो ताजमहल की फूहड़ नकल है। औरंगजेब का मकबरा औरंगाबाद में है।

चित्रकला

- मुगल चित्रशैली मुख्यतः फारसी या ईरानी 'चित्रकला से प्रभावित है, जो स्वयं में चीनी,भारतीय, बौद्ध, बैक्ट्रियाई और मंगोलियायी चित्रकला शैलियों की विशेषताओं का सम्मिश्रण थी।
- मुगल **चित्रकला शैली की नींव हुमायूं** ने रखी, जिसने फारस में अपने प्रवास के दौरान, मीर सैयद अली और अब्दुस्समद नामक दो ईरानी चित्रकारों की सेवाएं प्राप्त की। हुमायूं के साथ ये दोनों चित्रकार भारत आए और अकबर की चित्रशाला में कार्यरत रहे।
- मीर सैयद अली हेरात के प्रसिद्ध बेहजाद ('पूर्व का रफेल') का शिष्य था।
- अकबर के काल के प्रसिद्ध सत्रह चित्रकारों में तेरह हिन्दू थे, जिनमें **दसवन्त**, **बसावन**, **लाल** और **मुकुन्द** सर्वप्रमुख थे। दसवन्त अपने समय का सबसे अग्रणी चित्रकार था । दसवंत ने आत्महत्या कर ली थी।
- **हम्जानामा** और **अकबरनामा** में अकबर कालीन अनेक उत्कृष्ट चित्रों को संकलित किया गया है।
- अकबर के समय विदेशी चित्रकार थे: **अब्दुस्समद, फर्रूखवेग, खुसरो कुली एवं जमशेद** ।
- जहांगीर के शासनकाल में मुगल चित्रकला में अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंच गई।
- जहांगीर के दरबार के प्रमुख चित्रकार थे फारूख बेग, दौलत, गोवर्धन, मनोहर, विशनदास, मंसूर और अबुल हसना जहांगीर ने **उस्ताद मंसूर को नादिर-उल-अस्र** और **अबुल हसन को नादिर-उल-जमा** की उपाधियों से सम्मानित किया था।

- उस्ताद मंसूर लघुचित्रों के चित्रण में दक्ष थे। मंसूर जानवरों तथा पक्षी के चित्र बनाने में भी निपुण थे।
- जहांगीर किसी चित्रकार का नाम बताये पहचान लेता था कि किसका चित्र है।

शाहजहां के दरबार के प्रमुख चित्रकार थे: कल्याणदास (चतुरमन), अनुपचित्र, राज अनुप, मोहम्मद नादिर समरकन्दी।

सूफी आंदोलन

- सूफी शब्द की उत्पति अरबी भाषा के **सफा** शब्द से हुयी है
- अबुलफजल ने **'आइन-ए-अकबरी'** में चौदह सिलसिलों का उल्लेख किया है। चौदह सिलसिलों या रहस्यवादी संगठनों में चिश्ती, सुहरावर्दी कादिरी, शत्तारी और नक्शबन्दी अधिक महत्वपूर्ण थे। **'कादिरी'** और **'नक्शबन्दी'** नियम पालन में बड़े कट्टर थे जबकि **'चिश्ती'** की प्रवृत्ति इस सम्बन्ध में उदार थी।
- सूफी विचार धारा के गुरू (**पीर**) और शिष्य (**मुरीद**) के बीच सम्बन्ध का महत्व बहुत अधिक है। प्रत्येक पीर अपना उत्तराधिकारी (**वलि**) नियुक्त करता था।
- सूफी सिलसिला **बा-शरा** व **बे-शरा** में विभक्त था। बा-शरा उन्हें कहते थे इस्लामी विधान को मानते थे जबकि बे-शरा इस्लामी विधान से बंधे हुये नहीं थे।

चिश्ती सम्प्रदाय

- भारत का सर्वप्रथम प्राचीन सूफी सिलसिला है। **ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती** सन् 1192 ई० में (12वीं शताब्दी) में शिहाबुद्दीन गोरी की सेना के साथ भारत में आए थे और बाद में इन्होंने चिश्तियाँ परम्परा की नीवं डाली। उनकी समाधि **अजमेर में 'ख्वाजासाहब'** के नाम से प्रसिद्ध दरगाह है।
- उनके बाद के **ख्वाजा बख्तियार काकी** सुल्तान इल्तुतमिश के समकालीन थे। उन्होंने ही **बाबा फरीद** को चिश्तियां परम्परा में दीक्षित किया था।
- चिश्ती सन्तों में सबसे प्रसिद्ध है **निजामुद्दीन औलिया** (1238-1325 ई०) और नासिरुद्दीन **चिराग-ए-दिल्ली** (मृत्यु 1356 ई०) अमीर खुसरो निजामुद्दीन औलिया का शिष्य था। निजामुद्दीन औलिया को **'महबूब-ए इलाही'** की उपाधि मिली।

सुहरावर्दी पंथ

- भारत में इस पंथ का विस्तार **बहाउद्दीन जकारिया** के द्वारा हुआ बहाउद्दीन जकारिया को इल्तुतमिश ने **'शेख-उल-इस्लाम'** की पदवी दी थी।

कादिरी सिलसिला

- भारत में इस सिलसिले की शुरुआत **'सैयद मुहम्मद गिलानी'** से हुई।
- इस पंथ के सबसे प्रसिद्ध सन्त शेख मीर मुहम्मद या 'मियां मीर' हुए।
- **दाराशिकोह** इस सिलसिले का अनुयायी था।

फिरदौसी सिलसिला

- **बदरूद्दीन** ने इस सिलसिला की शुरुआत भारत में की थी। इसके मुख्य नेता शेख हुसैन बल्खी थे।

नक्शबन्दी सिलसिला

- नक्शबन्दी सिलसिला की स्थापना **उबैदुल्ला** ने की थी। इस पंथ के प्रमुख नेता 'ख्वाजा बकी बिल्ला' काबुल से दिल्ली आये
- सूफियों में यह सबसे **अधिक कट्टरवादी** थे।

भक्ति आन्दोलन

- भक्ति आंदोलन के प्रणेता **शंकराचार्य** थे। शंकराचार्य ने अद्वैत दर्शन की स्थापना की तथा मोक्ष प्राप्ति के लिए ज्ञान पर अधिक बल दिया।
- रामानुज का दार्शनिक सिद्धान्त **विशिष्टाद्वैत** कहलाता है। उनके अनुसार मोक्ष का मार्ग कर्म, ज्ञान और भक्ति में निहित है। रामानुज ने शुद्र और अछूतों को एक निश्चित दिन मंदिरों में प्रवेश करने की अनुमति दी।
- निंबार्क **द्वैताद्वैतवाद** में विश्वास रखते थे।
- रामानंद ने **दक्षिण व उत्तर भारत के संतों के बीच पुल** का काम किया। उनका जन्म इलाहाबाद में हुआ था। उन्होंने रामभक्ति आरंभ की। उनके 12 शिष्य थे रविदास चमार, कबीर जुलाहा, धन्ना जाट, सेन-नाई, सघना कसाई, पीपा राजपूत ।

- निर्गुण भक्ति के कबीर ऐसे प्रथम भक्त थे, जिन्होनें सन्त होने के बाद भी पूर्णतः गृहस्थ जीवन का निर्वाह किया। वह सिकंदर लोदी का समकालीन था। **बीजक** में उनकी शिक्षाएं संग्रहित है।
- माधवाचार्य ने **द्वैतवाद** का प्रचार किया।
- बल्लभाचार्य कृष्ण के उपासक थे। इन्होंने **शुद्धाद्वैतवाद** का प्रतिपादन किया। उन्होंने **'पुष्टिमार्ग'** का प्रतिपादन किया था। **वैष्णव संप्रदाय** की स्थापना की।
- दादू ने **निपख संप्रदाय** (असांप्रदायिक मत) का प्रचार किया
- बंगाल में भक्ति आंदोलन के जनक **चैतन्य** थे हन्होने कृष्ण भक्ति पर विशेष बल दिया। चैतन्य ने **'गोसाई संघ'** की स्थापना की और साथ ही **'संकीर्तन प्रथा'** को जन्म दिया। चैतन्य ने **मध्यगौडीय संप्रदाय** या **अचिंत्यभेदाभेदवाद** संप्रदाय की स्थाना की ।
- सूरदास, दादू के शिष्य थे। कृष्ण भक्ति के कवि थे। सूरदास की सुप्रसिद्ध रचना **'सूरसागर'** में कृष्ण की कथा, जन्म से लेकर मथुरा जाने तक प्रस्तुत की गई है। उनकी अन्य कृतियां हैं; **सूरसारावली** व **साहित्य लहरी** ।
- तुलसीदास रामानंद के शिष्य थे और रामभक्त थे। उनका जन्म 1523 में बांदा जिले के राजापुर गांव में हुआ था। वे अकबर के समकालीन थे। उन्होंने **अवधी** भाषा में **रामचरितमानस** (1574-75) की रचना की।
- मीराबाई मेवाड़ के राजा रतन सिंह राठौड़ की पुत्री एवं सिसोदिया वंश की महारानी थीं। उनका विवाह भोजराज के साथ हुआ था। मीराबाई कृष्ण की अनन्य उपासिका थीं। मीराबाई ने **रैदास** को अपने गुरु माना।
- गुरु नानक सिख धर्म के संस्थापक थे। निराकार ईश्वर को उन्होंने **'अकाल पुरुष'** की संज्ञा दी। सिख का शाब्दिक अर्थ 'शिष्ट' है।
- बल्लभाचार्य के दूसरे पुत्र का नाम विट्ठलनाथ था। अपने पिता वल्लभ के 84 शिष्यों में से चार और अपने 252 शिष्यों में से चार को लेकर **अष्टछाप** के प्रसिद्ध भक्त कवियों की मंडली की स्थापना की। इन आठ भक्त कवियों में चार **वल्लभाचार्य के शिष्य थे; सूरदास, कुम्भनदास, परमानंद दास, कृष्णदास**; अन्य चार गोस्वामी **बिट्ठलनाथ के शिष्य थे; गोविंदस्वामी, नंददास, छीतस्वामी व चतुर्भुजदास**
- कश्मीर के शैव सन्तों में **'लालदेह'** नामक एक महिला का नाम सबसे ऊपर आता है।
- नामदेव अपने प्रारम्भिक जीवन में डाकुओं के सरदार थे।
- रामदास शिवाजी के आध्यात्मिक गुरु थे। **दासबोध** इनकी रचना है।

सिक्ख धर्म

- सिक्ख सम्प्रदाय की स्थापना का श्रेय **गुरु नानक** (प्रथम गुरु) को है।
- ये बादशाह **बाबर एवं हुमायूँ** के समकालीन थे। सन् 1496 ई० की कार्तिक पूर्णिमा को नानक को आध्यात्मिक पुनर्जीवन का आभास हुआ।
- गुरु नानक ने अनेक स्थानों पर **संगत** (धर्मशाला) और **पंगत** (लंगर) स्थापित किए।
- गुरु नानक की सन् 1539 ई० में **करतारपुर** में मृत्यु हो गयी।
- **गुरु अंगद** (सन् 1539-52 ई०) सिक्खों के दूसरे गुरु थे। इनका प्रारम्भिक नाम **लहना** था। **गुरुमुखी लिपि** का आरंभ गुरु अंगद ने किया।
- **अमरदास** (सन् 1552- 74 ई०) - सिक्खों के तीसरे गुरु **अमरदास** थे। गुरु अमरदास ने हिन्दुओं से पृथक् होनेवाले कई कार्य किए। हिन्दुओं से अलग विवाह पद्धति' लवन को प्रचलित किया। अकबर ने गुरु अमरदास से गोविन्दवाल जाकर भेंट की और गुरु-पुत्री बीबी मानी को कई गाँव दान में दिए। अमरदास ने **22 गद्दियों** की स्थापना की और प्रत्येक पर एक महन्त की नियुक्ति की ।
- **रामदास (सन् 1574-81 ई०)** -बीबी के पति **रामदास** सिक्खों के चौथे गुरु हुए। अकबर ने बीवी मानी को 500 बीघा भूमि दी। गुरु रामदास ने इसी भूमि पर अमृतसर नामक जलाशय खुदवाय और अमृतसर नगर की स्थापना की। गुरु रामदास ने अपने तीसरे पुत्र अर्जुन को गुरु का पद सौंपा। इस प्रकार इन्होंने गुरु-पद को पैतृक बनाया।
- **गुरु अर्जुन (सन् 1581 – 1606 ई०)-** सिक्खों के पाँचवें गुरु हुए। इन्होंने सिक्खों के धार्मिक ग्रंथ आदिग्रंथ की रचना की। इसमें गुरु नानक की प्रेरणाप्रद प्रार्थनाएँ और गीत संकलित हैं।
- **नोट:** गुरु ग्रंथ साहिब यानि आदिग्रंथ में सिक्ख गुरुओं के साथ-साथ कबीर, नामदेव एवं रैदास की रचनाओं को भी सुम्मिलित किया गया है।
- गुरु अर्जुन ने अमृतसर जलाशय के मध्य में हरमन्दर साहब का निर्माण कराया।
- राजकुमार खुसरो की सहायता करने के कारण जहाँगीर ने 1606 ई० में गुरु अर्जुन को मरवा दिया।।
- **हरगोविन्द (1606-1645 ई०)**- सिक्खों के छठे गुरु हरगोविन्द हुए। इन्होंने सिक्खों को सैन्य संगठन का रूप दिया तथा **अकाल तख्त** का निर्माण करवाया।
- दरबार में **नगाड़ा** बजाने की व्यवस्था की।

- **हरराय (1645-61 ई०)-** सिक्खों के सातवें गुरु हरराय हुए। इन्होंने दाराशिकोह को मिलने आने पर आशीर्वाद दिया।
- **गुरु हरकिशन (1661-64 ई०)** -सिक्खों के आठवें गुरु हरकिशन हुए। इनकी मृत्यु चेचक से हो गयी।
- इन्हें दिल्ली जाकर गुरुपद के बारे में औरंगजेब को समझाना पड़ा था।
- **गुरु तेगबहादुर (1664-75 ई०)** - सिक्खों के नौवें गुरु तेगबहादुर (1664-75 ई०) हुए। इस्लाम स्वीकार नहीं करने के कारण औरंगजेब ने इन्हें मरवा दिया।
- **गुरु गोविन्द सिंह (1675-1708 ई)**- सिक्खों के दसवें एवं अंतिम गुरु, गुरु गोविन्द सिंह हुए। इनका जन्म 1666 ई० में **पटना** में हुआ था।
- गुरु गोविन्द सिंह अपने को **सच्चा पादशाह** कहा। इन्होंने सिक्खों के लिए पाँच ककार अनिवार्य किया अर्थात् प्रत्येक सिक्ख को **केश, कंघा, कृपाण, कच्छा और कड़ा** रखने की अनुमति दी और सभी लोगों को अपने नाम के अन्त में **सिंह** शब्द जोड़ने के लिए कहा।
- इनके दो पुत्र फतह सिंह एवं जोरावर सिंह को सरहिंद के मुगल फौजदार वजीर खाँ ने दीवार में चिनवा दिया
- **1699** ई० में वैशाखी के दिन गुरु गोविन्द सिंह ने **खालसा पंथ** की स्थापना की।
- गुरुगोविन्द सिंह ने सिक्खों के धार्मिक ग्रंथ आदिग्रंथ को वर्तमान रूप दिया और कहा कि अब **'गुरुवाणी'** सिक्ख सम्प्रदाय के गुरु का कार्य करेगी।
- **पाहुल प्रणाली** की शुरुआत गुरु गोविन्द सिंह ने किया।
- गुरुगोविन्द सिंह की हत्या 1708 ई० में **नादेड (महाराष्)** नामक स्थान पर गुरु नामक पठान ने कर दी।
- **बन्दा बहादुर** : इसके बचपन का नाम **लक्ष्मणदास** था। बन्दा का उद्देश्य पंजाब में एक सिक्ख राज्य स्थापित करने का था। इन्होंने गुरु नानक एवं गुरु गोविन्द सिंह नाम के सिक्के चलवाए। बन्दा ने सरहिन्द के मुगल फौजदार वजीर खां की हत्या कर दी।
- शाहदरा, कल्लगढ़ी के नाम से विख्यात है जहाँ बन्दा ने हजारों मुगल सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया था। बन्दा की मृत्यु के बाद सिक्ख कई छोटे छोटे टुकड़ों में बंट गए थे
- दल खालसा को जस्सा सिंह आहलूवालिया के नेतृत्व में रखा गया, जिसे बाद में बारह दलों में विभाजित किया गया। इसे **मिसल** कहा गया।
- मिसल अरवी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ समान होता है।

रणजीत सिंह

- रणजीत सिंह का जन्म 2 नवंबर, 1780 को **सुकरचकिया** मिसल के मुखिया **महासिंह** के घर हुआ। जब रणजीत सिंह 12 वर्ष के थे तभी उनके पिता का निधन हो गया। 1797 में रणजीत सिंह ने राज्य का कार्यभार संभाला। इस समय इसका प्रभुत्व रावी और झेलम नदियों के बीच कुछ जिलों पर था।
- 1798 ई. में जमानशाह ने पंजाब पर आक्रमण किया। वापिस जाते हुए उसकी कुछ तोपें चिनाव में गिर गई तो रणजीत सिंह ने उन्हें निकलवाकर वापिस भिजवा दिया। इस सेवा के बदले जमानशाह ने उसे लाहौर पर अधिकार करने की अनुमति दे दी और 1799 में रणजीत सिंह ने लाहौर पर अधिकार कर लिया।
- 1805 ई. में रणजीत सिंह ने भंगी मिसल से अमृतसर छीन लिया। इस प्रकार पंजाब की राजनैतिक राजधानी **लाहौर** एवं धार्मिक राजधानी **अमृतसर** दोनों ही रणजीत सिंह के कब्जे में आ गया।
- 25 अप्रैल, 1809 को **चार्ल्स मेटकाफ ने महाराजा रणजीत सिंह** के साथ **अमृतसर की संधि** की
- 1818 ई. में मुल्तान, पर, 1819 ई. में कश्मीर पर और 1823 ई. पेशावर पर रणजीत सिंह ने अधिकार कर लिया। रणजीत सिंह एक निरंकुश शासक था और अपने राज्य का शासन खालसा नाम से (**सरकार-ए-खालसा जी**) चलाता था।
- लाहौर में एक सर्वोच्च अदालत **अदालत ए-आला** कार्य करती थी, जो जिला एवं प्रांतीय अदालतों से अपील सुनती थी। न्याय वास्तव में सरकार की आय का साधन माना जाता था और बड़े से बड़े अपराधी भी जुर्माना देने पर छूट जाते थे।
- रणजीत सिंह ने जनरल **वन्तूरा** और **अलार्ड** के द्वारा एक 1822 ई. में एक विशेष आदर्श सेना **फौज-ए-खास** का गठन किया। फौज-ए-खास के लिए विशेष चिन्ह होता था।
- रणजीत सिंह के यहां उत्कृष्ट पदों पर कार्य करने वालों में वन्तूरा, अलार्ड, कोर्ट, गार्डनर और एविटेवल प्रमुख थे। इन यूरोपीय अफसरों में बहुत से सिविल प्रशासन में ऊंचे-ऊंचे पदों को भी प्राप्त हुए थे।
- रणजीत सिंह को अफगान शासक शाहशुजा से वह प्रसिद्ध कोहिनूर हीरा प्राप्त हुआ जिसे नादिरशाह लाल किले से लूटकर ले गया था।
- 7 जून 1839 को रणजीत सिंह की मृत्यु हो गई तो उसका अयोग्य पुत्र खड्ग सिंह, नौनिहाल सिंह व शेर सिंह क्रम से शासन किया।

- **प्रथम आँग्ल-सिक्ख युद्ध** 1845-46 ई० में एवं **द्वितीय ऑग्ल-सिक्ख युद्ध** 1849 ई० में हुआ ।
- अंग्रेजों एवं सिक्खों के मध्य हुई संधि:

  (i) लाहौर की संधि : 9 मार्च, 1846 ई० ।

  (ii) मेरोवाल की संधि : 22 दिसम्बर, 1846 ई० । (इस संधि के तहत राजा दलीप सिंह के संरक्षण हेतु अंग्रेजी सेना का प्रवास पंजाब में मान लिया गया।)

  20 अगस्त, 1847 ई० को महारानी जिंदा को राजा दलीप सिंह से अलग कर 48,000 रु० वार्षिक पेंशन देकर शेखपुरा भेज दिया गया।
- द्वितीय ऑग्ल-सिख युद्ध के दौरान पहली लड़ाई **चिलियानवाला** की लड़ाई लड़ी गयी। दूसरी लड़ाई गुजरात के चिनाव नदी के किनारे चार्ल्स नेपियर के नेतृत्व में अंग्रेजों ने 21 फरवरी, 1849 ई० को लड़ी। इस युद्ध में सिक्ख बुरी तरह पराजित हुए।
- लार्ड डलहौजी की 29 मार्च, 1849 ई० की घोषणा द्वारा संपूर्ण पंजाब का विलय अंग्रेजी राज्य में कर लिया। महाराजा दलीप सिंह को 50,000 पौंड की वार्षिक पेंशन दे दी गयी और उसे शिक्षा प्राप्त करने के लिए इंग्लैंड भेज दिया गया। सिक्ख राज्य का प्रसिद्ध हीरा कोहिनूर को महारानी विक्टोरिया को भेज दिया गया।

उत्तर मुगलकाल तथा पतन

- जाजौ में जून **1707** में मुअज्जम की सेना मे आजम का परास्त किया। 3 मार्च 1707 ई. को औरंगजेब की मृत्यु हो गई तो उसका सबसे बड़ा पुत्र **मुहम्मद मुअज्जम**' ने **बहादुरशाह** के नाम से मुगल सिंहासन संभाला।

बहादुरशाह प्रथम (1707-12)

- औरंगजेब की मृत्यु के बाद बहादुरशाह एवं आजमशाह के बीच 18 जून, 1707 में 'जजाऊ' में (सामुगढ़ के निकट) युद्ध हुआ, जिसमें आजमशाह मारा गया।
- बहादुरशाह ने मराठों के प्रति सुलहपूर्ण नीति अपनाते हुए औरंगजेब के समय से कैद में रह रहे शम्भाजी के पुत्र शाहू को रिहा कर दिया।
- इसने औरंगजेब द्वारा लगाए गए जजिया कर को पुनः हटा लिया।
- इतिहासकार ने '**शाह बेखबर**' के रूप में उल्लेख किया है।

जहांदार शाह (1712-13)

- उत्तराधिकार युद्ध में जहांदारशाह के तीन भाई **अजमी-उस-शान, रफी-उस-शान और जहानशाह** मारा गया।
- जहांदारशाह, असद खां के पुत्र जुल्फिकार खां के सहयोग से मुगल बादशाह बना।
- जहांदारशाह अयोग्य एवं विलासी शासक था, इसने अपने शासन कार्यों में **लाल कुंबर**, नामक वेश्या को हस्तक्षेप का अधिकार दे रखा
- उसने सवाई जयसिंह को **मिर्जा** की उपाधि दी।
- जहांदारशाह को '**लम्पट मूर्ख**' की उपाधि मिली थी।..

फर्रुखसियर (1713-1719)

- फर्रुखसियर अजीम उस शान का पुत्र था,
- हुसैन अली खां एवं अब्दुल्ला खां को '**सैय्यद बंधु**' के नाम से भी जाना जाता है, मुगलकालीन भारतीय इतिहास में उन्हें **नृप निर्माता**' के रूप में प्रसिद्धि मिली।
- सिंहासन पर बैठने के बाद फर्रुखसियर ने जुल्फिकार खां की हत्या करवा दिया तथा उसके पिता असद खां को जेल में डाल दिया।

- **निजम-उल-मुल्क** के नाम से प्रसिद्ध **चिनकिलिच खां** तूरानी दल का नेता था और समकालीन मुगल साम्राज्य का योग्यतम व्यक्ति था।
- 17 दिसम्बर, 1715 को फर्रुखसियर ने सिख नेता **बन्दा सिंह** की हत्या करवा दिया।
- फर्रुखसियर को इतिहास में **'घृणित कायर'** के रूप में जाना जाता है।
- फर्रुखसियर को गद्दी से हटाने के बाद अप्रैल 1719 में सैय्यद बंधुओं ने रफी-उश- शान के पुत्र **रफी-उद-दरजात** को मुगल सिंहासन पर बैठाया, किंतु चार महीने में अधिक शराब पीने के कारण मर गया।
- इसके बाद सैय्यद बंधुओं ने **रफी-उद-दौला** को **शाहजहां द्वितीय** की उपाधि देकर सिंहासन पर बैठाया किंतु सितंबर 1719 में उसकी मृत्यु हो गई।

मुहम्मदशाह (1719-1748)

- रफी-उद-दौला के बाद सैय्यद बंधुओं ने जहानशाह के पुत्र **रौशन अख्तर** को मुहम्मदशाह के नाम से 28 सितंबर, 1719 को दिल्ली की गद्दी पर बैठाया।
- मुहम्मदशाह ने निजामुलमुल्क के साथ मिलकर एक तुरानी सैनिक **हैदरबेग** के द्वारा सैय्यद बंधुओं को मरवा दिया।
- निजामुलमुल्क ने वजीर का पदभार छोड़कर दक्कन की ओर चला गया और **हैदराबाद** में अपने स्वतंत्र राज्य की स्थापना
- 13 फरवरी 1739 को **'ईरान का नेपोलियन'** के नाम से प्रसिद्ध **नादिरशाह** ने करनाल को जीत कर दिल्ली पर आक्रमण कर दिया।
- मुहम्मदशाह के समय ही मुगल साम्राज्य के (हैदराबाद के अलावा) दो अन्य प्रांत **अवध** एवं **बंगाल** क्रमशः **सादत खां 'बुरहान उल मुल्क'** एवं **अलीवर्दी खां** के नेतृत्व में स्वतंत्र हो गया।
- 28 अप्रैल, 1748 को उनकी मृत्यु हो गयी तो उसका पुत्र अहमदशाह मुगल सम्राट बना। इसे **'रंगीला'** भी कहा गया।

नादिरशाह एवं अहमदशाह अब्दाली का आक्रमण

- ईरान का शासक नादिर शाह लाहौर पर कब्जा करते हुए दिल्ली की ओर तेजी से बढ़ा।

- 13 फरवरी, 1739 को करनाल के निकट नादिरशाह एवं मुगल सेनाओं के बीच युद्ध हुआ, जिसमें मुगल सेना हार गई और खान-ए-दौरा मारा गया।
- निजाम-मुल-मुल्क ने नादिरशाह से बातचीत करके 50 लाख रुपए के बदले दिल्ली पर आक्रमण न करने के लिए मना लिया किंतु **सआदत खां** ने नादिरशाह को भड़का कर दिल्ली पर आक्रमण करने के लिए प्रेरित किया। नादिरशाह ने सआदत खां के प्रस्ताव को मान लिया और 20 मार्च 1739 को दिल्ली में प्रवेश किया और बड़े पैमाने पर कत्ले आम को अंजाम दिया।
- नादिरशाह ईरान के लिए रवाना होते समय प्रसिद्ध मुगल राजसिंहासन **तखत-ए-हाऊस (मयूर 'सिंहासन)** जिसका निर्माण शाहजहां ने कराया था और जिसमें विश्व प्रसिद्ध **कोहिनूर हीरा** लगा था, को भी अपने साथ ले गया।
- 1747 में नादिरशाह की मृत्यु हो गई तो ईरानी साम्राज्य को अफगानिस्तान के सूबेदार अहमदशाह अब्दाली ने स्वयं को ईरान से स्वतंत्र शासक घोषित कर दिया।
- **अहमदशाह अब्दली** ने 1748 से 1767 तक भारत पर पांच आक्रमण किया, जिसका चरम परिणाम पानीपत का तृतीय युद्ध के रूप में सामने आया।

अहमदशाह (1748-1754)

- मुहम्मदशाह को मृत्यु के बाद उसका एकमात्र पुत्र अहमदशाह मुगल सम्राट बना।
- अहमदशाह के शासनकाल में अहमदशाह अब्दाली ने 1749 और 1752 में दो आक्रमण किए। मुगल सम्राट ने दिल्ली को आक्रमण से सुरक्षित रखने के लिए पंजाब और सुल्तान अब्दाली को दे दिया।
- वजीर पद पाने के कुछ ही समय बाद गाजीउद्दीन (निजाम-मुल-मुल्क के पुत्र) ने अहमदशाह को सत्ता से हटाकर उसे अंधा करवा दिया तथा जहांदार शाह के पुत्र आलमगीर द्वितीय को मुगलबाद बनाया।

आलमगीर द्वितीय (1754-1759)

- इसके शासनकाल में शासन की वास्तविक शक्ति वजीर गाजीउद्दीन फिरोज जंग के हाथों में थी।

- 1755 ई. में अहमदशाह अब्दाली ने भारत पर चौथी बार भारत पर आक्रमण किया और 1757 में दिल्ली से वापस गया। आलमगीर द्वितीय की मृत्यु के बाद उसके पुत्रो अली गौहर को **'शाह आलम'** की उपाधि देकर मुगल शासक बनाया गया।

शाहआलम द्वितीय (1759-1806)

- यह मुगल शासक सिर्फ **अंग्रेजों, मराठों एवं अमीरों के हाथों की कठपुतली** मात्र था।
- शाहआलम के समय अहमदशाह अब्दाली पांचवीं बार भारत पर आक्रमण किया, जिसके कारण अफगानों एवं मराठों के बीच **पानीपत का तीसरा युद्ध (1761)** हुआ।
- 1764 ई. में शाह आलम द्वितीय ने बंगाल के नवाब मीर कासिम एवं अवध के नवाब शुजाउद्दौला के साथ बक्सर के युद्ध में भाग लिया।
- इसके शासनकाल में ही **1803 में अंग्रेजों ने** दिल्ली पर कब्जा किया।

अकबर द्वितीय (1806-1837)

- इसके शासनकाल में मुगलों की सत्ता सिर्फ लाल किले के अंदर तक ही सिमट कर रह गया था।

बहादुरशाह द्वितीय (1837-1857)

- यह अंतिम मुगल शासक था। इसने 1857 के विद्रोह में अंग्रेजों के विरुद्ध भाग लिया।
- अंग्रेजों ने इसे गिरफ्तार करके रंगून निर्वासित कर दिया, जहां 1862 में इसकी मृत्यु हो गई। इसी के साथ मुगलवंश का पूर्णतः अंत हो गया। बहादुरशाह द्वितीय एक अच्छा शायर था और **'जफर'** उपनाम से शायरी भी लिखता था।

स्वतंत्र राज्यों की स्थापना व शासक

हैदराबाद

- **चिनकिलिच खां** नामक एक शक्तिशाली मुगल सामन्त ने 1724 में हैदराबाद राज्य की स्थापना की, इसे निजा-उल-मुल्क के नाम से भी जाना जाता है।

अवध का राज्य

- सआदत खां बुरहानुल मुल्क ने इसकी स्थापना की।
- शुजाउद्दौला के बाद आसफउद्दौला (1775-95)) अवध का नवाब बना, इसने अपनी राजधानी फैजाबाद से **लखनऊ** स्थानांतरित किया। अवध के शासकों में **'वाजिद अली शाह'** अंतिम शासक था।

बंगाल का राज्य

- औरंगजेब की मृत्यु के बाद बंगाल के स्वतंत्र राज्य की स्थापना **मुर्शिद कुली खां** ने किया।
- मुर्शिद कुली खां ने बंगाल की राजधानी **ढाका से मुर्शिदाबाद** स्थानांतरित किया।
- अप्रैल 1740 में अलीवर्दी खां बंगाल पर अधिकार कर लिया। 1757 में अलीवर्दी खां की मृत्यु के बाद उसकी लड़की का पुत्र सिराजुद्दौला बंगाल का नवाब बना।
- सिराजुद्दौला के समय ही **1757 में प्लासी की लड़ाई लड़ी** गई जिसमें सिराजुद्दौला की हार हुई और बंगाल पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया।

कर्नाटक का राज्य

- कर्नाटक के नवाब **सादुतुल्ला खां** ने स्वतंत्र कर्नाटक राज्य की स्थापना की और **आरकाट** को अपनी राजधानी बनाया।

रुहेलखंड

- रुहेलखंड का स्वतंत्र राज्य की स्थापना **वीरदाऊद** एवं उसके पुत्र **अली मुहम्मद** ने किया।

जाट राज्य

- दिल्ली, मथुरा तथा आगरा के कुछ क्षेत्रों को जीतकर जाट नेता **चूडामन** एवं **बदनसिंह** ने भरतपुर राज्य की स्थापना की।
- जाट नेता **सुरजमल**, जिसे **जाटों का प्लूटो** के नाम से जाना जाता है, ने जाट शक्ति को चर्मोत्कर्ष पर पहुंचाया। 1663 में सुरजमल की मृत्यु के साथ ही जाट शक्ति का पतन हो गया।

मराठा राज्य का विस्तार

- मराठे **17वीं सदी** से ही बीजापुर, अहमदनगर तथा गोलकुंडा राज्यों को सेना में कार्यरत थे। इन मराठों को राजा नायक तथा राव की उपाधि से सम्मानित किया जाता था।

शिवाजी (1627-80 ई.)

- शिवाजी का जन्म 10 अप्रैल, 1627 ई. को पूना के निकट शिवनेर के दुर्ग में शिवाजी का जन्म हुआ। **शाहजी भोंसले** उनके पिता तथा **जीजाबाई** उनकी माता थीं। **दादा कोणदेव** उनके शिक्षक थे जबकि **समर्थ रामदास** उनके गुरु थे।
- शिवाजी का प्रारंभिक सैनिक अभियान **बीजापुर के आदिलशाही** राज्य के विरुद्ध शुरू हुआ। 1640-41 में शिवाजी का विवाह **सईबाई निंबालकर** के साथ हुआ। 1643 ई. में शिवाजी ने बीजापुर से **'सिंहगढ़'** के किले को जीता। **तोरण के दुर्ग** पर विजय 1645-46 ई. में, **रायगढ़** तथा चाकन (बोजापुर के सुल्तान से छीनकर) दुर्ग पर विजय 1646 ई. में, बारामती, इन्द्रपुर के दुर्ग पर विजय 1647 ई. में **पुरन्दर के किले** पर विजय 1648 ई. में व जाबली के दुर्ग पर विजय 1655-56 ई. में की।
- 1656 ई. में ही शिवाजी ने अपनी राजधानी **रायगढ़** में बनायी।
- 1657 ई. में शिवाजी का मुकाबला पहली बार मुगलों से हुआ।
- 2 नवंबर, 1659 ई. को बीजापुर ने प्रख्यात सरदार **अफजल खां** को शिवाजी को कैद करने या मार डालने के लिए नियुक्ति किया। परंतु शिवाजी ने उसे मार डाला। ब्राह्मण दूत कृष्णाजी भास्कर ने अफजल खा के बारे में शिवाजी को बता दिया था।

- 1660 ई. में मुगल सूबेदार **शाइस्ता खां** को शिवाजी को समाप्त करने के लिए भेजा गया। 15 अप्रैल, 1663 ई. को शिवाजी ने पूना में प्रवेश किया तथा शाइस्ता खां को पराजित किया।
- 1665 ई. में आमेर जयपुर के प्रसिद्ध राजा, मिर्जा राजा जय सिंह को दक्षिण का सूबेदार एवं सेनापति नियुक्त किया गया। मिर्जा राज जयसिंह से शिवाजी पराजित हुए।
- जून **1665 ई. में पुरन्दर की संधि** राजा जयसिंह तथा शिवाजी के बीच हुई।
- राजा जयसिंह द्वारा शिवाजी को आगरा स्थित मुगल दरबार में उपस्थित होने के लिए भी आश्वस्त किया गया। जयसिंह ने शिवाजी से कहा कि उन्हें दक्षिण के मुगल सूबों का सूबेदार बना दिया जायगा।

  मई 1666 ई. में शिवाजी मुगल दरबार में उपस्थित हुए। लेकिन उनके साथ तृतीय श्रेणी के मनसबदारों जैसा व्यवहार किया गया और उन्हें **जयपुर भवन** (आगरा) में नजरबंद भी कर दिया गया। लेकिन नवम्बर 1666 ई. में वे अपने पुत्र शम्भाजी के साथ छिपकर कैद से निकल भागे।
- अगले वर्ष औरंगजेब ने शिवाजी को **राजा'** की उपाधि और बरार की जागीर प्रदान की।
- 1670 में कोंडाना का किला जीता जिसे सिंहगढ़ नाम दिया गया। 1672 ई. में मराठों ने पन्हाला, पाल और सतारा के दुर्ग को जीता।
- 14 जून, 1674 को शिवाजी ने रायगढ़ के दुर्ग में अपना राज्याभिषेक किया और **'छत्रपति'** की उपाधि धारण की। काशी के **पंडित विश्वेश्वर उर्फ गंगाभट्ट** ने शिवाजी का राज्याभिषेक करवाया था।
- शिवाजी ने गोलकुंडा के दो मंत्रियों मदन्ना तथा अखन्ना के साथ संधि की। इस अभियान में जिंजी मदुराई, बेल्लूर, कर्नाटक: व तमिलनाडु के 100 से अधिक किलें जीत लिया। यही उनका अंतिम अभियान था।

शिवाजी के उत्तराधिकारी

शंम्भाजी (1680-89 ई.):

- शम्भाजी शिवाजी का ज्येष्ठ पुत्र था, शम्भाजी के समय कन्नौज का एक ब्राह्मण मंत्री कवि कलश मंत्री नियुक्त किया गया।
- उसने औरंगजेब के विद्रोही पुत्र अकबर को शरण दिया,
- शम्भाजी का पुत्र शाहू मुगलों द्वारा बंदी बना लिए गये

- शाहू को औरंगजेब की पुत्री **जीनत-उल-निशा** ने अपने पुत्र की भांति पाला। इसलिए शाहू औरंगजेब के श्रेष्ठ नातियों में से एक माना जाता था।

राजाराम (1689-1700 ई.):

- उसने अंत तक यह कहा कि वह शम्भाजी के पुत्र शाहू का प्रतिनिधि मात्र है और इसी कारण राजा होते हुए भी वह कभी सिंहासन पर नहीं बैठा।
- राजाराम की मृत्यु के बाद उसकी विधवा **ताराबाई** ने अपने चार वर्षीय पुत्र को शिवाजी द्वितीय के नाम से गद्दी पर बैठाया और संघर्ष जारी रखा।

शाहू (1707-1749 ई.) :

- शाहू, शम्भाजी का पुत्र था। वह 17 वर्ष तक मुगलों का बंदी रहा।
- औरंगजेब के पुत्र आजमशाह ने 8 मई, 1707 ई. में जुल्फिकार खान के परामर्श से शाहू को महाराष्ट्र वापस जाने दिया। उसका विचार था कि इससे मराठों में फूट पड़ जायेगी।
- 12 अक्टूबर, 1707 को खेद नामक स्थान (भीमा नदी) पर हुए युद्ध में ताराबाई पराजित हुई। शाहू ने बालाजी विश्वनाथ की सहायता से विजय पायी।
- शाहू के शासन काल में मराठा शक्ति का विस्तार हुआ और मराठे दक्षिण में ही नहीं, अपितु उत्तर भारत में भी प्रवेश कर गये और शीघ्र ही भारत की सबसे बड़ी शक्ति बन गये।
- 1708 में शाहू ने बालाजी विश्वनाथ को **सेनाकर्ते** का पद प्रदान किया था।

मराठा पेशवाओं का अभ्युदय

- राजा के अधिकारों का पूर्ण उपयोग करने वाला अंतिम मराठा शासक शाहू थे। उसके बाद मराठा राजा नाममात्र के शासक रहे और राज्य की संपूर्ण शक्ति **पेशवा** के हाथ में केंद्रित होती गयी।

बालाजी विश्वनाथ (1713-20 ई.)

- बालाजी विश्वनाथ 1713 ई. में शाह द्वारा **प्रथम पेशवा** नियुक्त किया गया। वह मराठा साम्राज्य के **'द्वितीय संस्थापक'** के रूप में सुप्रसिद्ध है।
- 1719 ई. में मराठों को औरंगाबाद, बरार, खानदेश बीदर, गोलकुंडा और बीजापुर में चौथ व सरदेशमुखी वसूल करने का अधिकार प्राप्त हो गया।

- बालाजी विश्वनाथ की सबसे बड़ी उपलब्धि यह थी कि उन्होंने 'मराठा राज्य-संघ' का गठन किया।

बाजीराव प्रथम (1720-40 ई.)

- बालाजी विश्वनाथ के पुत्र बाजीराव प्रथम को 20 वर्ष की अल्पायु में पेशवा नियुक्त किया गया। वह सर्वश्रेष्ठ मराठा सेनापति साबित हुआ। उनकी नियुक्ति से पेशवा का पद **वंशानुगत** हो गया।
- उसके बारे में यह उक्ति प्रसिद्ध है' **मराठों की पताका कृष्णा से अटक तक फहराये।**' मराठा साम्राज्यवाद इसी के काल में अपनी पराकाष्ठा पर पहुंचा।
- **1724** ई. में औरंगाबाद के निकट हुए **शकूर खेड़ा के युद्ध** में निजामुल्मुल्क ने बाजीराव के समर्थन से दक्षिण के नवनियुक्त सूबेदार को पराजित किया और हैदाराबाद में स्वतंत्र निजाम वंश की स्थापना की, लेकिन कालान्तर में मतभेद हो जाने के कारण बाजीराव ने निजाम को लगातार युद्धों में पराजित किया।
- **1728 के पालखेड़ के युद्ध** में निजाम हार गया।
- बुंदेला के महाराज छत्रसाल वेश में जन्मी **मस्तानी** नामक मुस्लिम स्त्री से प्रेम संबंध के कारण भी बाजीराव प्रथम चर्चित रहा। यह उनकी दूसरी पत्नी थी। दुमेला में मस्तानी महल है।
- शिवाजी के बाद मराठों में बाजीराव प्रथम ने **गुरिल्ला युद्ध प्रणाली** को अपनाया।

बालाजी बाजीराव (1740-61 ई.)

- बाजीराव की मृत्यु के बाद शाहू ने उसके 18 वर्षीय पुत्र बालाजी, जिसे **'नाना साहब'** भी कहा जाता है, पेशवा नियुक्त किया।
- 1752 ई. तक मराठे अपनी शक्ति की पराकाष्ठा पर पहुंच गये। मुगल बादशाह उनके हाथों की कठपुतली बन गये। वे सम्पूर्ण भारत से चौथ तथा सरदेशमुखी वसूलने लगे।
- अब्दाली और मराठा सेना का सामना 14 जनवरी, 1761 ई. को पानीपत के मैदान में हुआ **(पानीपत का तृतीय युद्ध)**। मराठा सेना बुरी तरह पराजित हुई।

मराठा प्रशासन

- शिवाजी के काल में स्वराज्य को चार प्रांतों में विभाजित किया गया था। प्रांत को **'महल'** या **'सूबा'** कहा जाता था, जो **'मामलात'** या **'सूबेदार'** के अधीन होते थे। **महल**, **परगनों** में बटे थे। 'परगना', 'तरफ' और 'तरफ', मौजा में विभक्त थे।
- मुख्य पदाधिकारियों की एक परिषद थी, जिसे 'अष्टप्रधान' कहा जाता था, जिसमें निम्नलिखित आठ पदाधिकारी होते थे

1. **पेशवा** (प्रधानमंत्री)
2. **मजुमुआदार या अमात्यः** वित्त विभाग का प्रधान।
3. **सर-ए-नौबतः** सैनिक कार्य (सेनापति)
4. **दबीर या सुमंतः** वैदेशिक मामले।
5. **सरनवीस या सचिवः** पत्र-व्यवहार का अधीक्षक
6. **सेनापतिः** सेना का प्रधान
7. **पंडितराव या दानाध्यक्ष** - राजा का पुरोहित, जो दान आदि की व्यवस्था करता था।
8. **न्यायाधीश या शास्त्री**- जो हिन्दू न्याय की व्याख्या करता था।

- **पंडितराव** और शास्त्री को छोड़कर अष्टप्रधान में सम्मिलित सभी पदाधिकारी मंत्री होते थे। इन दोनों को सैन्य कार्य में संलग्न नहीं होना पड़ता था।

अन्य अधिकारी

- मंत्री या वाकिया नवीस- राजा के दैनिक कार्यों तथा मिलने-जुलने वालों की देखभाल करने वाला अधिकारी
- मजूमदार- लेखा परीक्षक तथा लेखाकार
- चिटनिस- पत्राचार लिपिक
- पोटनिस - रोकड़िया
- जमादार - खजांची

राजस्व प्रशासन

- भूमि का मापन **'काठी'** और **'मुठी'** से किया जाता था।
- भूमिकर के अतिरिक्त राजकीय आय का दूसरा सबसे बड़ा साधन युद्ध में लूटा गया धन एवं **चौथ** तथा **सरदेशमुखी** था।
- चौथः चौथ किसी भी क्षेत्र से प्राप्त कुल भूमि आय का एक चौथाई होता था चौथ उस क्षेत्र से वसूला जाता था, जिस क्षेत्र पर मराठा आक्रमण की पूर्ण संभावना होती थी।

- सरदेशमुखीः यह कर मराठा राजा को उसके देशस्वामी (देशमुख) होने के नाते दिया जाने वाला एक पुराना कर था।

न्याय प्रशासन

- गांव में आपराधिक मामलों की जांच **पटेल** करते थे। ब्राह्मण न्यायधीश दीवानी और फौजदारी मामलों की सुनवाई करते थे। **हाजिर मजलिस** अपील की अंतिम अदालत थी।

मराठा सैन्य संगठन

- शिवाजी एक स्थायी सेना रखने की परम्परा आरंभ की। जिसमें चालीस हजार घुड़सवार सैनिक और दस हजार पैदल सैनिक थे। शाही सेना को **पागा** कहा जाता था।
- सबसे छोटी सैन्य इकाई 25 सैनिकों की होती थी, जिसका नेता **हवलदार** होता घुराब बंदूक से लैस नाव थी।
- संपूर्ण घुड़सवार सेना का प्रधान **सर-ए-नौबत** होता था तथा पैदल सेना का प्रधान भी **सर-ए-नौबत** कहलाता था। शिवाजी की सेना में मुसलमान सैनिक भी होते थे।
- प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध (1775-82) - मराठा और अंग्रेजों के बीच युद्ध प्रारंभ हो गया।
- द्वितीय आंग्ल मराठा युद्ध (1803-05) : यह मुख्यतः अंग्रेजों के फ्रांसीसी भय का परिणाम था। देवगांव की संधि हुई।
- तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध (1816-18): यह युद्ध अन्तिम रूप से लार्ड हेस्टिंग्ज के गवर्नर जनरल बनकर आने पर लड़ा गया।

आधुनिक भारत

भारत में यूरोपीय व्यापारिक कंपनियों के आगमन

- भारत में यूरोपीय व्यापारिक कंपनियों के आगमन का क्रम था; **पुर्तगीज-डच- अंग्रेज -डेन -फ्रांसीसी** ।
- भारत में सबसे पहले पुर्तगाली (1498) आये और सबसे अंत में (1961) वे ही भारत से वापस गये।

पुर्तगाली

- 17 मई, 1498 को पुर्तगाली नाविक **वास्कोडिगामा**, **अब्दुल मनीक** नामक गुजराती की सहायता से भारत के समुद्र तट पर स्थित कालीकट पहुंचने में सफल हुआ।
- वास्कोडिगामा ने कालीकट के हिंदू राजा **जमोरिन** से मिलकर व्यापार की अनुमति प्राप्त किया। वास्कोडिगामा ने भारत में कालीमीर्च के व्यापार से 60 गुना अधिक लाभ कमाया।
- 1502 में वास्को दूसरी बार भारत आया। 1503 में कोचीन में पुर्तगालियों ने अपनी पहली कोठी स्थापित की।
- भारत एवं पुर्तगाल के बीच व्यापार आरंभ होते ही पुर्तगालियों ने भारत के कालीकट, गोआ, दमन दीव एवं हुगली के बंदरगाहों पर अपनी व्यापारिक कोठियों का निर्माण कराया।
- 1505 ई. में **'फ्रांसिस्को द आल्मेडा'** को प्रथम पुर्तगाली गवर्नर के रूप में भारत भेजा गया, जो 1509 ई. तक भारत में रहा। 1509 ई. में **'अल्फांसो द अल्बुकर्क'** को पुर्तगाली गवर्नर बनाकर भारत भेजा गया, जो 1515 ई. तक भारत में रहा। उसे भारत में **'पुर्तगाली साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक'** माना जाता है।
- इसने 1510 ई. में बीजापुर के सुल्तान 'यूसुफ आदिलशाह' से गोवा छीन लिया और उसे पुर्तगाली सत्ता एवं संस्कृति का केंद्र बनाया।
- 1580 ई. में पुर्तगाल पर स्पेन का कब्जा हो जाने के बाद भारत में भी पुर्तगालियों की शक्ति में तेजी से ह्रास हुआ।
- 1661 ई. में तत्कालीन ब्रिटिश सम्राट **'चार्ल्स द्वितीय'** द्वारा एक पुर्तगाली **राजकुमारी कैथरीन** से विवाह करने पर पुर्तगालियों ने उसे मुंबई का द्वीप दहेज में दे दिया था।
- पुर्तगालियों ने कार्ट्ज-आर्मेडा **काफिला** पद्धति लागू किया

- पुर्तगालियों ने भारत में तंबाकू की खेती आरंभ की, जहाज निर्माण व प्रिंटिंग प्रेस की शुरुआत की।
- 1556 में गोवा में पुर्तगालियों ने भारत का प्रथम प्रिंटिंग प्रेस स्थापित किया।
- भारत में **गोथिक कला** पुर्तगालियों के साथ आया।

डच

- डच लोग **हॉलैंड(नीदरलैण्ड)** के निवासी थे। भारत में आने वाला प्रथम डच नागरिक **कॉरनेलिस ड. हस्तमान** था।
- डचो ने 1605 ई. में **मुसलीपट्टम** में प्रथम डच कारखाना की स्थापना की।
- बंगाल में प्रथम डच कारखाना **पीपली** में स्थापित की गई थी डचों ने पुलीकट में **पैगोडा** नाम से स्वर्ण सिक्के चलाये।
- **1759** में डचों एवं अंग्रेजों के बीच **बेदरा** का युद्ध हुआ, जिसमें डचों को पराजित होना पड़ा। इस पराजय के साथ ही डचों का भारत से अंतिम रूप से पतन हो गया।

अंग्रेजों की ईस्ट इंडिया कंपनी

- भारत में अंग्रेजों के आगमन के समय इंग्लैण्ड की महारानी एलिजाबेथ शासन कर रही थीं।
- **31 दिसंबर, 1600** को महारानी एलिजाबेथ टेलर प्रथम ने अंग्रेजों को भारत में व्यापार करने के लिए एक आज्ञा पत्र दिया। और 1599 में **'दि गवर्नर एण्ड कंपनी ऑफ मर्चेण्ट्स ऑफ लंदन इन्टू दि ईस्ट इंडीज'** नामक कंपनी की स्थापना भारत में हुई। महारानी का यह आज्ञापत्र **15 वर्ष** के लिए था तथा इस कंपनी में कुल **217** साझीदार थे। बाद में जेम्स प्रथम ने यह आज्ञापत्र अनिश्चितकाल के लिए बढ़ा दिया।
- 1608 में पहला ब्रिटिश जहाज **हेक्टर** भारत के सुरत बंदरगाह पर आया और इस जहाज के कप्तान **विलियम हॉकिन्स** ब्रिटिश सम्राट जेम्स प्रथम की ओर से मुगल सम्राट जहांगीर के दरबार में आया।
- हॉकिन्स ने जहांगीर से सूरत में बसने की इजाजत मांगी किंतु पुर्तगीजों के विद्रोह तथा सूरत के सौदागारों के विद्रोह के कारण उसे स्वीकृत नहीं मिली। उसे 400 मनसब का प्रदान किया गया।

- 1615 ई. में सम्राट जेम्स प्रथम ने **'सर टामस रो'** को अपना राजदूत बनाकर जहांगीर के पास भेजा, जिसका एक मात्र उद्देश्य व्यापारिक संधि करना था। हलांकि रो ने जहांगीर के साथ व्यापारिक सौंध करने में सफलता नहीं प्राप्त किया परंतु अंग्रेजों को भड़ौच, अहमदाबाद तथा आगरा में व्यापारिक कोपनयां स्थापित करने की अनुमति प्राप्त हो गई।
- 1611 में दक्षिण-पूर्वी तट पर सर्वप्रथम मुसलीपट्टम में अंग्रेजों ने व्यापारिक कोठी की स्थापना की। पूर्वी तट पर पहला अंग्रेजी कारखाना 1633 में **बालासोर** व हरिपुरा में खोला गया।
- 1661 ई. में इंग्लैण्ड के राजा चार्ल्स द्वितीय का विवाह पुर्तगाली राजकुमारी कथैरीन ब्रेगांजा से हुआ, जिसमें दहेज के रूप में चार्ल्स को बंबई प्राप्त हुआ।
- 1668 ई. में चार्ल्स द्वितीय ने बंबई को 10 डॉलर वार्षिक किराया लेकर ईस्ट इंडिया कंपनी को दे दिया।
- 1698 ई. में कंपनी ने इब्राहिम खां से **सुतानटी**, **कोलिकता** एवं **गोविन्दपुर** की जमींदारी 1200 रु. में प्राप्त कर ली। यहां पर निर्मित कारखाने के अगल-बगल किलेबंदी करके फोर्ट विलियम का निर्माण किया जो बाद में कलकत्ता नगर कहलाया, जिसकी नींव **जॉब चारनॉक** ने रखी थी।

डेनिश

- 1616 ई. में भारत में डेनमार्क कंपनी (डेनिश) का आगमन हुआ।

फ्रांसीसी

- फ्रांसीसियों सबसे अंत में यहां प्रवेश किया। 1668 ई. में फ्रांसीसियों की पहली कोठी से **सूरत** में स्थापित हुई।

आंग्ल-फ्रांसीसी संघर्ष

- इन दोनों यूरोपीय शक्तियों के बीच संघर्ष की शुरुआत दक्षिण से हुई, जहां इन दोनों शक्तियों के बीच कर्नाटक के तीन युद्ध हुए।
- कर्नाटक का प्रथम युद्ध (1746-48) : यह युद्ध आस्ट्रिया के उत्तराधिकार युद्ध से प्रभावित था। अंग्रेज और फ्रांसीसियों के मध्य यूरोप में संघर्ष छिड़ गया। **ए-ला-शापल की संधि** से समाप्त हुआ।

- कर्नाटक का दूसरा युद्ध (1749-54): कर्नाटक और हैदराबाद के बीच झगड़ा प्रारंभ हो गया और फ्रांसीसी तथा अंग्रेज दोनों ही इस झगड़े में एक-दूसरे के विरोध में सम्मिलित हो गए।
- डूप्ले के स्थान पर गोडेहू को भारत में फ्रांसीसी प्रदेश का अगला गवर्नर बनाया गया, गोडेह ने भारत आकर अंग्रेजों से 1755 ई. में **पांडिचेरी की संधि** किया
- कर्नाटक का तीसरा युद्ध: कर्नाटक का यह तीसरा युद्ध यूरोप में हुए सप्तवर्षीय युद्ध का ही एक अंश था। 1761 ई. में अंग्रेजों ने फ्रांसीसियों से पांडिचेरी छीन लिया **1763 ई. में संपन्न पेरिस की संधि** के द्वारा युद्ध समाप्त हुआ।
- **वांडिवाश का युद्ध** फ्रांसीसियों के लिए निर्णायक सिद्ध हुआ और इसके बाद फ्रांसीसी भारत के कुछ छोटे क्षेत्रों में सिमट कर रह गए।

मैसूर सम्राज्य

- मैसूर पर वाडयार वंश का शासन था तथा इस वंश का अंतिम शासक चिक्का कृष्णराज द्वितीय था।
- मैसूर के शासक **हैदरअली** का जन्म 1727 ई. में हुआ था, फिर मैसूर का वास्तविक शासक बन गया।
- मैसूर में हैदरअली की बढ़ती शक्ति अंग्रेजों के लिए ठीक नहीं था।
- **प्रथम आंग्ल-मैसूर युद्ध (1767-69) :** अंग्रेजों एवं हैदरअली के बीच चला। हैदरअली ने निजाम को अपनी ओर कर लिया। हैदरअली ने अंग्रेजी सेना को चारों तरफ से घेर लिया। अंग्रेजों ने हैदरअली की शर्तों पर 4 अप्रैल 1769 को **मद्रास की संधि** की थी। इस समय अंग्रेजी गवर्नर लार्ड बरेलास्ट था।
- **द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध (1780-84):** इसकी शुरूआत तब हुई जब 19 मार्च 1779 को अंग्रेजों ने माही पर अधिकार कर लिया। माही हैदरअली के क्षेत्र में स्थित एक छोटी सी फ्रांसीसी बस्ती थी। **हेस्टिंग्ज** ने कूटनीति से मराठा और निजाम को हैदरअली से अलग कर दिया, जिससे हैदरअली युद्ध में अकेला रह गया। 1781 ई. में सर आयरकूट ने **'पोर्टोनोवो'** में हैदरअली को पराजित किया। इसी युद्ध में घाव लगने के कारण 7 दिसंबर, 1782 को हैदरअली की मृत्यु हो गयी।
- हैदरअली की मृत्यु के बाद उसका पुत्र **'टीपू सुल्तान'** ने मैसूर की कमान को संभाला। हैदरअली की मृत्यु के बाद टीपू ने एक वर्ष तक युद्ध जारी रखा और फिर मार्च 1784 ई. में अंग्रेजों के साथ **मंगलौर** की संधि किया।
- **तीसरा आंग्ल-मैसूर युद्ध (1790-92) :** लार्ड कार्नवालिस ने निजाम एवं मराठों के साथ मिलकर 1790 में टीपू के विरुद्ध त्रिदलीय संगठन बनाया। टीपू ने तुर्की से सहायता प्राप्त करने के लिए 1784 और 1785 में कुस्तुन्तुनिया (इस्तांबुल) में राजदूत भेजा तथा 1787 में उसने दूतमंडल फ्रांस भेजा।
- मार्च 1792 को अंग्रेजों एवं टीपू सुल्तान के बीच **श्रीरंगपट्टम की संधि** हुई
- चतुर्थ- आंग्ल मैसूर युद्ध (1799) : इस युद्ध के समय अंग्रेजी कंपनी का गवर्नर जनरल **लार्ड वेलेजली** था। टीपू सुल्तान बहादुरी से लड़ता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ।
- टीपू एक कुशल प्रशासक एवं योग्य सेनापति था, इसने अपनी राजधानी श्रीरंगपट्टम में **स्वतंत्रता का वृक्ष** लगाया और साथ ही **जैकोविन क्लब** का सदस्य बना।

- टीपू ने आधुनिक **कैलेन्डर(ग्रिगेरियन)** की शुरुआत की और सिक्का ढलाई तथा नाप तोल की नई प्रणाली का प्रयोग किया।

बंगाल विद्रोह और अंग्रेज

- शाहशुजा से अनुमति प्राप्त कर 1651 में ईस्ट इंडिया कंपनी ने हुगली में कारखाना स्थापित कर तत्कालीन बंगाल की प्रमुख निर्यात जींस, शोरा, रेशम व चीनी का व्यापार प्रारंभ किया।
- बंगाल में स्वतंत्र राज्य की स्थापना **'मुर्शिद कुली खां'** ने की थी। 1739 ई. में उसकी मृत्यु के बाद **'सरफराज खां'** नवाब बना, जिसकी 1740 ई. में बिहार के उप-गवर्नर **अली वर्दी खां** ने हत्या कर दी और स्वयं नवाब बन बैठा।
- 9 अप्रैल, 1756 ई. को अलीवर्दी खां की मृत्यु के बाद उसकी सबसे छोटी बेटी का पुत्र **'सिराजुद्दौला' नवाब** की गद्दी पर बैठा। उसके प्रमुख विरोधियों में शामिल थे; पूर्णिया के नवाब शौकतजंग, सिराज की मौसी **घसीटी बेगम**, अलीवर्दी का अन्य दामाद सेनापति **मीरजाकर।**
- सिराजुद्दौला की राजधानी **'मुर्शिदाबाद'** थी। सिराज ने मीरजाफर को हटाकर मीरमदान को सेनापति नियुक्त किया क्रोधित सिराजुद्दौला ने 4 जून, 1756 ई. को 'कासिम बाजार' की ब्रिटिश फैक्ट्री पर अधिकार कर लिया।
- **ब्लैक होल घटना:** बताया गया कि नवाब ने 20 जून, 1756 को 146 अंग्रेज कैदियों को 18 फीट लंबी व 14 फीट चौड़ी 'ब्लैक होल' नामक काल कोठरी में बंद कर दिया, जिसमें दम घुट जाने के कारण 123 अंग्रेजों की मृत्यु हो गयी। इसे 'ब्लैक होल कांड' के नाम से जाना जाता है। इसमें 23 व्यक्ति बचे, जिन्हें नवाब ने अंग्रेजों को वापस कर दिया।
- **अलीनगर की संधि (9 फरवरी, 1757) :** सिराजुद्दौला कलकत्ता आया और 9 फरवरी, 1757 ई. को अंग्रेजों के साथ 'अलीनगर की संधि' की, 18 अगस्त, 1757 को अंग्रेजों ने कलकता में अपनी टकसाल स्थापित की।
- **प्लासी का युद्ध (23 जून, 1757 ई.):** नवाब का उत्तर मिलने से पहले ही क्लाइव के नेतृत्व में अंग्रेजी सेना 22 जून, 1757 ई. की रात गंगा नदी के तट पर प्लासी के मैदान में पहुंच गयी। **23 जून, 1757 ई.** को 'प्लासी की 'लड़ाई' आरंभ हो गयी। क्योंकि साजिश के चलते नवाब की ओर से **मीरजाफर, वारलतीफ** खां व **दुर्लभ** अपनी विशाल सेनाओं के साथ चुपचाप खड़े रहे। सिराजुद्दौला की ओर से **मोहनलाल** व **मीरमदान** के अधीन वाली

एक छोटी सेना ने, जिसे एक फ्रांसीसी अफसर से सहायता मिल रही थी, युद्ध में भाग लिया। इस युद्ध में अंग्रेजी सेना के मात्र 29 और नवाब दल के 500 लोग मारे गये।

- सिराजुद्दौला अपनी पत्नी लुत्कुन्निसा के साथ भागकर मुर्शिदाबाद पहुंचा फिर नाव से पटना पहुंचा। बाद में मीरजाफर के पुत्र मीरन के आदेश पर मुहम्मद अली बेग ने 2 जुलाई, 1757 को नमक हराम देओह में सिराजुद्दौला की हत्या कर दी।
- **मीरजाफर (1757-1760)** : 29 जून, 1757 को **'मीरजाफर'** को बंगाल का नया नवाब घोषित कर दिया गया। नवाब बनने के बाद उसने कंपनी को बंगाल, बिहार और उड़ीसा में मुक्त व्यापार का अधिकार तथा कलकत्ता के निकट स्थित **'चौबीस परगना'** की जमींदारी भी दी। कलकत्ता पर आक्रमण के हर्जाने के रूप में मीरजाफर ने कंपनी तथा नगर के अंग्रेजी अधिकारियों को एक करोड़ सत्तर लाख रुपये (2 लाख 34 हजार पौंड) प्रदान किये।
- **मीरजाफर** को **'क्लाइव का गीदड** कहा जाता था।
- **मीरकासिम (1760-1763)** - नवाब बनने के बाद 'मीरकासिम ने अंग्रेज कंपनी को 'बर्दवान, मिदनापुर और चटगांव' जिलों की जमींदारी दे दी। नवाब बनने के तुरंत बाद मीरकासिम ने 1760 ई. में ही राजधानी **'मुर्शिदाबाद'** से **'मुंगेर'** स्थानांतरित कर दी। जहां उसने गोली-बारूद तैयार करना और अपने सैनिकों को यूरोपीय पद्धति से प्रशिक्षण देना प्रारंभ किया।
- जून 1763 से सितंबर 1763 ई. तक नवाब अंग्रेजों से तीन बार हारा **करवा का युद्ध** (19 जुलाई, 1963), **गीरिया का युद्ध** (4 सितंबर, 1763) व **उधौनला का युद्ध** (1763) में नवाब पराजित हुआ।
- **बक्सर का युद्ध (22 अक्टूबर, 1764):-** मीरकासिम ने अंग्रेजो से लड़ने के लिए अवध के नवाब **'शुजाउद्दौला'** तथा मुगल बादशाह **'शाहआलम** द्वितीय' के साथ मिलकर एक संघ बनाया। लेकिन इस संघीय सेना को अंग्रेज सेनापति 'मेजर हेक्टर मुनरो ने 22 अक्टूबर, 1764 ई. को 'बक्सर के युद्ध' में बुरी तरह हरा दिया।
- बक्सर का युद्ध भारतीय इतिहास के **सबसे अधिक निर्णायक युद्धों** में से एक था।
- मीरकासिम के साथ युद्ध छिड़ने के साथ ही अंग्रेजों ने 1763 ई. में मीरजाफर को पुनः बंगाल का नवाब बना दिया।
- **इलाहाबाद की प्रथम संधि (12 अगस्त, (1765)** : मई 1765 ई. में 'क्लाइव' दूसरी बार 'बंगाल का गवर्नर' बनकर आया। उसने मुगल बादशाह 'शाहआलम द्वितीय' से 1765 ई.

में एक संधि की, जिसे 'इलाहाबाद की प्रथम संधि कहा जाता है। तथा **इलाहाबाद की द्वितीय संधि (16 अगस्त, 1765)** को हुयी।

- दादाभाई नौरोजी भारत से धन निकासी को **'अनिष्ठों का अनिष्ठ' (Evil of all Evil) व 'ऋण कुचक्र'** कहा था।
- दादा भाई नौरोजी ने बाद में **'पॉवर्टी एंड अन ब्रिटिश रूल इन इंडिया' (1867), द वॉन्ट्स ऑफ इंडिया (1870) तथा ऑन दी कॉमर्स ऑफ इंडिया (1871)** में भी धन निकास की व्याख्या की।
- रमेश चंद्र दत्त ने कहा 'सूरज पानी भारत से ग्रहण करता है वर्षा केवल इंग्लैंड को देता है।' उन्होंने **'इकोनॉमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया' (1901)** में धन निकास का उल्लेख किया।

स्थायी बंदोबस्त

- इसे **जमींदारी, बीसवेदारी मालगुजारी, जागीरदारी, इस्तमरारी** आदि नामों से भी जाना जाता है। इसे गवर्नर जनरल **लार्ड कार्नवालिस, सर जान शोर** ने लागू किया। **22 मार्च 1793** ई. को स्थायी बंदोबस्त के रूप में स्थापित हुआ तथा 1 मई 1793 ई. में कार्नवालिस कोड का पहला नियम बना।
- 1793 ई. में इसे **बंगाल, बिहार, उड़ीसा** में लागू किया गया।

महालवारी व्यवस्था

- महालवारी व्यवस्था का प्रस्ताव सर्वप्रथम 1819 ई. में **हाल्ट मैकेंजी** द्वारा लाया गया। यह व्यवस्था गंगा के दोआब में, पश्चिमोत्तर प्रांत (उ.प्र) मध्य भारत (मध्य प्रांत) और पंजाब में सर्वप्रथम लागू की गयी।

रैयतवाड़ी व्यवस्था

- रैयतवाड़ी व्यवस्था में कृषकों को ही भूमि का स्वामी माना गया बशर्ते वह भू-राजस्व चुकाता करते रहें। यह देश के 51 प्रतिशत हिस्सा में लागू किया गया था।
- 1820 ई. में कर्नाटक और दक्षिण भारत के अनेक क्षेत्रों में इसे लागू किया गया।

1857 का विद्रोह

विद्रोह का आरंभ **10 मई, 1857** को सैन्य विद्रोह के रूप में हुआ। कुछ प्रमुख कारण थे

- राजनीतिक कारण - डलहौजी की डाक्टराइन आफ लैप्स (व्यगत नीति) के अंतर्गत सतारा, जैतपुर, नागपुर, झांसी आदि का विलय, **कुशासन के आधार पर अवध** तथा हैदराबाद का विलय;
- आर्थिक कारण -भारतीय धन का निष्कासन; लघु एवं कुटीर उद्योग बुरा व्यवहार किया व अंग्रेजों द्वारा नौकरियों में अपनायी जाने वाली भेद-भावपूर्ण नीति।
- धार्मिक कारण- अंग्रेज द्वारा अपनी नीति अनुसार अधिकांश भारतीयों को ईसाई बनाकर भारत में अपने साम्राज्य को सुदृढ़ करना चाहते थे।
- सामाजिक कारण- अंग्रेजों को अपनी श्वेत चमड़ियों पर गर्व था, लार्ड विलियम बैंटिक ने सतीप्रथा, बालहत्या, नरबलि पर प्रतिबंध लगाकर तथा डलहौजी ने विधवा विवाह को मान्यता देकर रूढ़िवादी भारतीयों के अंदर असंतोष भर दिया
- सैनिक कारण - सेना भर्ती अधिनियम पारित किया, जिसके अनुसार सैनिकों को यह स्वीकार करना होता था कि जहां कहीं भी सरकार को आवश्यकता होगी, वे कार्य करेंगे।
- तात्कालिक कारण - 1856 में सरकार ने पुरानी लोहे वाली ब्राउनबैस बंदूक के स्थान पर नवीन **एनफील्ड राइफल** को प्रयुक्त करने का निश्चय किया। इसके कारतूस के ऊपरी भाग को मुंह से काटना पड़ता था, जिसमें **गाय** तथा **सूअर** की चर्बी का प्रयोग होता था। हिंदू व मुसलमान दोनों सिपाहियों ने इसके प्रयोग से इंकार किया। यही चर्बी वाला कारतूस 1857 के विद्रोह का तात्कालिक कारण था।
- 1857 के युद्ध मे संदेश पहुंचाने के लिए विद्रोहियों ने **कमल के फूल एवं सूखी रोटी** का इस्तेमाल किया।

विद्रोह के स्वरूप

1. **यह पूर्णतया सिपाही विद्रोह था** :सर जान लारेंसव सीले
2. **यह स्वतंत्रता संग्राम था** :डा .ईश्वरी प्रसाद
3. **यह राष्ट्रीय विद्रोह था** :डिजरायली
4. **ईसाई धर्म के विरुद्ध एक धर्मयुद्ध था** :एल.आर .रीस
5. **1857 का विद्रोह स्वतंत्रता संग्राम नहीं था** :आर.सी .मजूमदार

विद्रोह का आरंभ एवं केन्द्र

- 29 मार्च, 1857 ई .को **बैरकपुर** (प .बंगाल) के **34वीं एन.आई .रेजीमेंट** के सैनिक **मंगल पांडे** ने सर्वप्रथम **लेफ्टीनेंट बाग** पर तलवार से हमला किया, फिर **सार्जेंट मेजर हेवसन** पर गोली चलायी। दोनों की मौत हो गयी। अपने सार्जेंट की हत्या कर दी,
- परिणामस्वरूप 34वीं एन.आई .को भंग कर दिया गया। मंगल पांडे को 18 अप्रैल को फांसी पर चढ़ाया जाना था परंतु 8 अप्रैल को ही फांसी की सजा दे दी गई। मंगल पांडे का साथ देने वाले जमादार इश्वरी प्रसाद को 21 अप्रैल को फांसी दी गई।
- दिल्ली -अंग्रेजों ने पंजाब से सेना बुलाकर 20 सितंबर, 1857 ई .को दिल्ली पर कब्जा कर लिया। बहादुरशाह को शेष जीवन के लिए रंगून में निर्वासित जीवन व्यतीत करना पड़ा। श्वे डेगोन पैगोडा यांगून में उनका मकबरा है। उनके मजार पर लिखा है **'जफर इतना बदनसीब है कि उसे अपनी मातृभूमि में दफन के लिए दो गज जमीन भी नसीब न हुयी।'**
- कानपुर- इस केन्द्र में नेतृत्व करने वालों में **नाना साहब (धोंधू पंत), राव साहेब, तात्या टोपे** तथा **अजीमुल्ला खां** के नाम उल्लेखनीय हैं।
- लखनऊ :इस केन्द्र में अवध की **बेगम हजरत महल** तथा **अहमदुल्ला** ने नेतृत्व प्रदान किया बेगम हजरत महल के पुत्र **बिरजिस कादर** को नवाब घोषित किया गया। अन्ततः 21 मार्च, 1858 ई .को सर कॉलिन कैम्पबेल ने लखनऊ पर पुनः अधिकार कर लिया।
- झांसी - रानी लक्ष्मीबाई के नेतृत्व में विद्रोह की शुरुआत हुयी। पर **सर हूरोज** ने 4 अप्रैल, 1858 ई .को विजय प्राप्त की रानी लक्ष्मीबाई बच निकलने में सफल हुई तथा उन्होंने ग्वालियर पर कब्जा कर लिया। 17 जून, 1858 ई .को रानी लक्ष्मीबाई की मृत्यु हो गयी। रानी झांसी के बारे में ह्यूरोज ने कहा "**भारतीय क्रांतिकारियों में यहां सोयी हुयी औरत एकमात्र मर्द है।**'
- बरेली - रोहिल्लाखण्ड के राजा के पौत्र खान **बहादुर** खां ने यहां विद्रोहियों को नेतृत्व प्रदान किया, परन्तु 5 मई, 1858 ई .को कैम्पबेल ने बरेली पर कब्जा कर लिया।
- आरा - यहां विद्रोहियों का कुशल नेतृत्व **कुंवर सिंह** एवं उनके भाई अमर सिंह ने किया।
- फैजाबाद - **मौलवी अहमदुल्ला** के नेतृत्व में यहां विद्रोह हुआ, परन्तु उसे दबा दिया गया।

विद्रोह असफलता के कारण -

- विद्रोहियों के पास अच्छे साधन व धनाभाव था।

- शिक्षित वर्ग पूर्ण रूप से उदासीन रहा।
- राष्ट्रीय भावना का अभाव था, क्योंकि भारतीय समाज के सभी वर्गों का सहयोग विद्रोहियों को नहीं मिला।
- विद्रोहियों में अनुभव, संगठन क्षमता तथा मिलकर कार्य करने का अभाव था।
- लक्ष्य एवं स्पष्ट योजना का अभाव था।
- 1857 के विद्रोह पर पुस्तकें
- **आर .सी .मजुमदार - द सिपॉय म्यूटिन एंड दरिवोल्ट ऑफ 1857**
- **एन .एन .सेन- 1857 (सरकारी पुस्तक)**
- **एच.पी .चटोपाध्याय - द सिपॉय म्यूटिनी ऑफ 1857, ए सोशल एनेलिसिस**
- **विनायक दामोदर- 1857 का भारतीय स्वातंत्र्य समर**
- **जे.डब्ल्यू.के.- ए हिस्ट्री ऑफ द सिपॉय वार इन इंडिया**
- **बी.बी .मालसेन- इंडियन म्यूटिनी ऑफ 1857**

प्रमुख नागरिक एवं आदिवासी विद्रोह

प्रमुख नागरिक विद्रोह –

- संन्यासी विद्रोह (1763-1800) - द्विजनारायण इस विद्रोह के प्रमुख नेता थे। वंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय ने इस विद्रोह का उल्लेख **'आनंदमठ'** में किया है। यह विद्रोह बिहार व बंगाल मे हुआ था।
- फकीर विद्रोह)1776-77) -**मंजनूमशाह व चिरागअली** शाह ने कम से मुसलमान धार्मिक फकीरों के इस विद्रोह का नेतृत्व किया। यह विद्रोह प्रमुखता **बंगाल** मे फैला रहा।
- फरैजी विद्रोह (1838-1857)- शरीयतुल्ला के **पुत्र दादू मियां** ने बंगाल से अंग्रेजों को निकालने की योजना बनायी।
- पायका विद्रहो – (1817) **उड़िसा** के खुर्दा मे पायकों ने भक्षी जगबंधु के नेतृत्व मे विद्रोह किया।
- पागलपंथी विद्रोह (1840-1850) -यह **अर्द्धधार्मिक** सम्प्रदाय था, जिसको उत्तर बंगाल के **करम शाह** और उसके बाद उसके पुत्र **टीटू** ने आगे बढ़ाया।
- मोपला विद्रोह (1836 व 1921) -मोपला विद्रोह या मालाबार (केरल) विद्रोह हिंदू भूस्वामियों व ब्रिटिश के खिलाफ मोप्पला मुस्लिमों द्वारा किया गया था।

प्रमुख जनजातीय विद्रोह-

- **भील विद्रोह (1812-19, 1825, 1921)** - कृषि संबंधी कष्ट तथा नयी सरकार के भय से भील नामक आदिम जाति ने 1812-19 के बीच खानादेश में **चेन्नावा** के नेतृत्व में विद्रोह किया। 1825 में महाराष्ट्र में सेवरम के नेतृत्व में भीलों ने फिर विद्रोह किया।
- **हो विद्रोह (1820-22, 1831, 1837)** - छोटा नागपुर तथा सिंहभूम जिले के 'हो' तथा 'मुण्डा' लोगों ने 1820-22, 1831 में विद्रोह किया और अंततः 1837 में अत्याचार के विरोध में कंपनी की सेना से टक्कर ली।
- **संथाल विद्रोह (1855-56)** -राजमहल जिले के संथाल लोगों ने भूमि कर अधिकारियों के हाथों दुर्व्यवहार, मे अपना रोष प्रकट किया। इस विद्रोह का नेतृत्व **सिद्ध, कान्हू व भैरव** ने किया।
- **कूका आंदोलन (1840-41)** -पंजाब में **भगत जवाहरमल** ने की। नेता **रामसिंह कूका** को रंगून भेज दिया गया।
- **मुण्डा विद्रोह (1899-1900)** - इसके विरोध में आदिवासियों ने **बिरसा मुंडा** के नेतृत्व में हुआ।

प्रमुख किसान विद्रोह -

- **नील विद्रोह)1859-60)** -अधिकारी बंगाल तथा बिहार के जमींदारों से भूमि प्राप्त कर नील की खेती करवाते थे। 1859 ई .में नील विद्रोह का वर्णन **दीनबंधु मित्र** ने अपने नाटक **'नील दर्पण'** में किया। यह भारतीय किसानों का प्रथम सफल आंदोलन था।
- **पाबना विद्रोह (1873-76)** - इस विद्रोह के प्रमुख नेता **ईशानचंद्र राय, शंभुपाल** व **खूदी मुल्ला** थे।
- **दक्कन दंगे (1875)** - 1875 में दक्कन में मराठी किसानों ने मारवाड़ी तथा गुजराती साहूकारों के विरुद्ध विद्रोह किया। ये साहूकार ऋणों में हेराफेरी करके किसानों का शोषण करते थे।
- **चंपारन सत्याग्रह (1917)** - यह भारत में महात्मा गांधी के नेतृत्व में किया गया **प्रथम किसान सत्याग्रह** था। बिहार के चम्पारन जिले के यूरोपीय नील उत्पादक नील कृषकों का शोषण करते थे। चंपारण के किसान **तिनकठिया व्यवस्था** से परेशान थे। इसके तहत उन्हें अपनी **3/20 भूमि पर नील की खेती** करनी पड़ती थी। स्थानीय कृषक नेता **राजकुमार शुक्ल** ने लखनऊ में गांधीजी से मिलकर किसानों की परेशानी से अवगत

कराया था। गांधीजी ने 1917 में **बाबू राजेंद्र प्रसाद, ब्रजकिशोर, महादेव देसाई, नरहरि पारिख, जे.वी .कृपलानी** की सहायता से कृषकों को अहिंसात्मक असहयोग करने की प्रेरणा दी और सत्याग्रह किया, इस सत्याग्रह के दौरान गांधीजी के कुशल नेतृत्व से प्रभावित होकर रवींद्र नाथ टैगोर ने गांधीजी को **'महात्मा'** की उपाधि प्रदान की थी। इसी सत्याग्रह के दौरान गांधीजी को लोगों ने 'बापू' कहकर पुकारा।

- **खेड़ा (सत्याग्रह) 1918)** - गुजरात के खेड़ा जिला के **किसानों ने लगान की वसूली के खिलाफ** महात्मा गांधी के नेतृत्व में यह सत्याग्रह किया। 1918 में सूखे के कारण फसलें नष्ट हो गयीं। जिससे कृषक कर देने में असमर्थ थे। परंतु सरकार बिना किसी छूट के भू-कर पूरा वसूलना चाहती थी। खेड़ा में ही गांधीजी ने अपने **प्रथम वास्तविक किसान सत्याग्रह** की शुरुआत की।
- **बारदोली सत्याग्रह (1928) -** यह आंदोलन वस्तुतः **कालीपराज** जनजाति के लोगों ने आरंभ किया था। उन्हें हाली पद्धति के तहत उच्ची जाति के यहां **पुश्तैनी मजदूरी** करनी पड़ती थी। **वल्लभ भाई पटेल के नेतृत्व** में लोगों ने इस लगान बढ़ोत्तरी का कड़ा विरोध किया। बारदोली सत्याग्रह के दौरान ही वहां की महिलाओं की ओर से गांधीजी ने बल्लभ भाई पटेल को **'सरदार'** की उपाधि दी।
- **तेभागा आंदोलन -** इसे बंगाल का सबसे सशक्त आंदोलन कहा जाता है। इस आंदोलन को नेतृत्व **कंपाराम** व **भवन सिंह** ने प्रदान किया।
- **अखिल भारतीय किसान सभा)1936)** - 11 अप्रैल, 1936 कसे लखनऊ में अखिल भारतीय किसान कांग्रेस की स्थापना हुई, जिसका नाम बाद में बदलकर अखिल भारतीय किसान सभा कर दिया गया। **स्वामी सहजानंद सरस्वती** इसके प्रथम अध्यक्ष और **एन.जी .रंगा महासचिव** चुने गये

प्रमुख समाज सुधारक एवं समाज सुधारक सभाएं

राजा राम मोहन राय व ब्रह्म समाज

- भारत में व्याप्त बुराइयों के खिलाफ आंदोलन चलाने वाले प्रथम भारतीय राजा राम मोहन राय थे।
- उन्हें **'अतीत व भविष्य के मध्य सेतु', भारतीय राष्ट्रवाद का जनक व आधुनिक भारत का पिता** कहा जाता है।

- उनका जन्म 1772 में **गांव-राधानगर**, बंगाल के एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था और उनकी मृत्यु 1833 में **ब्रिस्टल**, इंग्लैंड में हुयी। उनके पिता राधाकांत बंगाल के नवाब के यहां कार्य करते थे और वहीं राम मोहन राय को **'राय'** की उपाधि मिली।
- वे **संस्कृत, फारसी, अरबी, अंग्रेजी, फ्रेंच, लैटिन, ग्रीक, यहूदी** समेत लगभग 12 भाषाओं के ज्ञाता थे।
- उन्होंने 1816 में **डेविड हेयर** की सहायता से कलकत्ता में **हिन्दू विश्वविद्यालय** की स्थापना, बाद में यही **प्रेसीडेन्सी कॉलेज** बना। 1817 में कलकत्ता में एक अंग्रेजी विद्यालय की स्थाना, 1825 में **वेदांत महाविद्यालय** की स्थापना की।
- उन्हें भारत **में पत्रकारिता का अग्रदूत** माना जाता है।
- 1804 में **फारसी भाषा में 'तुहफतुअल मुवाहिद्दिन'** नामक पत्रिका प्रकाशित की, 1819 में बंगाली भाषा में प्रथम साप्ताहिक पत्रिका **'संवाद कौमुदी** का शुभारंभ, 1822 में **फारसी भाषा में 'मिरातुल अखबार'** पत्रिका का प्रकाशनारंभ, 1820 में 'प्रीसेप्ट्स ऑफ जीसस' पुस्तक का प्रकाशन, एंग्लो भाषा के व्याकरण का संकलन।
- उन्होंने **मूर्ति पूजा, सती प्रथा, बहुपत्नी प्रथा, जातिवाद** की आलोचना की।
- उन्होंने **1815 में 'आत्मीय सभा'** की, 1819 में 'कलकत्ता एकतावादी समिति' स्थापित की, **20 अगस्त, 1828 को 'ब्रह्म समाज'** की स्थापना की।
- **ब्रह्म समाज** का **उद्देश्य एकेश्वरवाद** की उपासना, मूर्तिपूजा का विरोध, पुरोहितवाद का विरो, अवतारवाद का खंडन इत्यादि।
- उनके प्रयासों से 1829 में सती प्रथा की समाप्ति **लार्ड विलियम बैंटिक द्वारा** की गई।
- 1831 में **अकबर द्वितीय** ने राजा राम मोहन राय को **'राजा'** की उपाधि से तथा बाद में सुभाष चंद्र बोस ने **'युगदूत'** की उपाधि से विभूषित किया।

प्रार्थना समाज (1867)

- सन् 1867 ई .में बंबई में **केशवचन्द्र सेन तथा डॉ .आत्माराम पांडुरंग** ने 'प्रार्थना समाज' स्थापित किया। इसका उद्देश्य एक ईश्वर की आराधना तथा समाज सुधार था।
- 1871 में रानाडे ने सार्वजनिक सभा की स्थापना की। उन्हें **'महाराष्ट्र का सुकरात'** भी कहा जाता था। वे गोखले उनको अपना गुरु मानते थे।
- रानाडे ने शिक्षा के प्रसार के लिए **1884 में 'डक्कन एजुकेशन सोसायटी'** की स्थापना।

आर्य समाज व दयानंद सरस्वती

- स्वामी दयानंद सरस्वती के बचपन का नाम **मूल शंकर** था। उनके **गुरु स्वामी विरजानन्द** थे। उनकी मृत्यु 1883 में अजमेर में हो गयी थी।
- 1863 में झूठे धर्मों का खंडन करने के लिए **'पाखंड खंडिनी** पताका' लहराई। 1882 में उन्होंने **'गौ रक्षिणी सभा'** गठित की।
- 10 अप्रैल, 1875 को **बम्बई में आर्य समाज'** की स्थापना की। इसका उद्देश्य भारत को धार्मिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय रूप से एकीकृत करना था। उन्होंने नारा दिया -**'वेदों की ओर लौटो'।**
- आर्य समाजियों का मानना था **कि बुरे से बुरे देशी राज्य अच्छे से अच्छे विदेशी राज्य से अच्छा है। 'सत्यार्थ प्रकाश'** नामक पुस्तक हिन्दी में वे **'शुद्धि आन्दोलन'** के प्रवर्तक थे।
- उन्होंने अस्पृश्यता, जातिगत भेदभाव का घोर विरोध किया और सामाजिक उन्नयन के लिए स्त्रियों के उत्थान पर जोर दिया।
- एनी बेसेंट ने कहा था कि स्वामी दयानंद ऐसे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने **'भारत भारतीयों के लिए है'** का नारा दिया था।
- **इनके द्वारा 1886 ई .में लाहौर में प्रथम एंग्लो-वैदिक स्कूल की स्थापना हुई।**
- इन्होने सबसे पहले **स्वराज** शब्द का प्रयोग किया।

रामकृष्ण मिशन

- स्वामी रामकृष्ण परमहंस का जन्म 1834 में बंगाल में में हुआ था। उनका प्रारंभिक नाम **गदाधर चट्टोपाध्याय** था। दक्षिणेश्वर स्थित काली देवी के मंदिर में पुरोहित हो गये। दक्षिणेश्वर मन्दिर में 12 वर्षों तक कठोर तपस्या की पत्नी शारदा मणि से 'माता' की तरह व्यवहार किया। रामकृष्ण परमहंस का मूल नाम **गंगाधर चट्टोपध्याय** था।
- विवेकानंद का जन्म 9 जनवरी, 1863 को कलकत्ता के संभ्रांत कायस्थ परिवार में हुआ था। उनकी मृत्यु 4 जुलाई, 1902 को हुयी थी। महाराज खेतड़ी के कहने पर अपना नाम बदलकर विवेकानन्द रखा।
- **11 सितंबर, 1893** को शिकागो तथा **1900 में पेरिस** में आयोजित विश्व धर्म संसद में भारत का प्रतिनिधित्व किया। 5 मई, 1897 की गुरु रामकृष्ण परमहंस की स्मृति में **'रामकृष्ण मिशन'** की स्थापना की।

- इसका मुख्यालय **बेलूर** में था। एक अन्य मुख्यालय अल्मोड़ा के **मायावती** नामक स्थल पर खोला गया।
- **राजयोग, कर्मयोग, ज्ञानयोग** उन्हीं की रचना है। सुभाष चंद्र बोस ने विवेकानंद को **'आधुनिक राष्ट्रीय आंदोलन का आध्यात्मिक पिता'** कहा था।

थियोसोफिकल सोसाइटी

- सन् **1875 ई .में न्यूयार्क में श्रीमती ब्लावात्स्की तथा कर्नल आलकाट** ने इसकी स्थापना की। 1882 ई .में इसका मुख्यालय मद्रास के निकट **अडियार** हो गया। 1893 ई .में इसके नेतृत्व के उद्देश्य से **एनी बेसेन्ट** का भारत आगमन हुआ।

यंग बंगाल आंदोलन

- एक एंग्लो-इंडियन शिक्षक **हेनरी विवियन डेरेजियो** ने इसकी स्थापना 1826 ई .में की।
- डेरेजियो को **आधुनिक भारत का प्रथम राष्ट्रकवि'** कहा जाता है।

मुस्लिम सुधारवादी आंदोलन

- **अलीगढ़ आंदोलनः** सर सैय्यद अहमद खान ने अपनी पत्रिका **'तहजीब-उल-अखलाक'** के माध्यम से मुसलमानों में पाश्चात्य शिक्षा के उत्थान द्वारा सामाजिक-धार्मिक सुधार के लिए प्रयास किये। **1875** ई .में उन्होंने अलीगढ़ में **'मोहम्मडन एंग्लो-ओरिएन्टल कालेज'** की स्थापना की। कालांतर में यह अलीगढ़, मुस्लिम विश्वविद्यालय के रूप में ख्याति पाया। उन्होंने **साइंटिफिक सोसायटी** की भी स्थापना की थी।

सत्यशोधक समाज

- **ज्योतिबा फूले** ने रानाडे के सहयोग से जाति भेद विहीन व छुआछूत विरोधी संगठन **'सत्यशोधक समाज'** की स्थापना **पूना** मे की
- उन्होंने **'गुलामगिरी'** की रचना की थी।

सरकारी समाज सुधार विधान

- राजा राममोहन राय के प्रयासों से विलियम बेंटिक के काल में बंगाल सती विनियम एक्ट **1829 के 17वें नियम के द्वारा सती प्रथा को समाप्त** करा दिया गया।

- ईश्वरचंद्र विद्यासागर के प्रयासों से **1856 में विधवा पुनर्विवाह** अधिनियम द्वारा विधवा विवाह को वैध करार दिया गया।
- **1872 के नेटिव मैरेज एक्ट** के द्वारा अंतर्जातीय विवाह को मान्यता दी गई। इसने बहुविवाह को प्रतिबंधित कर दिया। लड़कियों के लिए विवाह की न्यूनतम आयु 14 वर्ष तथा लड़कों के लिए विवाह का न्यूनतम उम्र 18 कर दिया।
- एस.एस.बंगाली के प्रयत्नों से **1891 में एज ऑफ कंसेट एक्ट'** पारित हुआ जिसमें 12 वर्ष से कम आयु की कन्याओं के विवाह को प्रतिबंधित कर दिया।
- **1930 में शारदा एक्ट** के तहत विवाह की न्यूनतम आयु लड़कों एवं लड़कियों के लिए क्रमश :21 वर्ष व 18 वर्ष कर दिया गया।
- **नोट – 1930 शारदा एक्ट –** 1929 मे आया था तब लड़को एवं लड़कियों की विवाह उम्र क्रमश 18 वर्ष व 14 वर्ष थी। संशोधन पश्चात् 1930 मे क्रमश 21 वर्ष व 18 वर्ष कर दी गयी थी।
- **इल्बर्ट बिल विवाद (श्वेत विद्रोह)** - इल्बर्ट बिल, वायसराय के कानून सदस्य, 'सर सी.पी. इल्बर्ट' ने **1883** ई. में पेश किया था। यह मुख्य रूप से अंग्रेज अपराधियों के मामलों पर भारत के जजों द्वारा सुनवाई से संबंधत था। इल्बर्ट बिल का उद्देश्य सरकारी अधिकारियों और भारतीय प्रजा के बीच जातीय भेदभाव दूर करना था। अंग्रेजों ने इस बिल का तीव्र विरोध किया, क्योंकि वे किसी भी भारतीय जज से अपने केस की सुनवाई नहीं चाहते थे।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना

- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना का श्रेय एक अवकाश प्राप्त अंग्रेज प्रशासनिक अधिकारी **एलन ऑक्टोवियन ह्यूम** को दिया जाता है।
- कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन बंबई के **गोकुलदास तेजपाल संस्कृत विद्यालय में 28 दिसंबर, 1885** को हुआ था। इसी सम्मेलन में दादा भाई नौरोजी के सुझाव पर संघ का नाम भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस रखा गया। इसमें **72 लोगों** ने भाग लिया था। **व्योमेश चन्द्र बनर्जी प्रथम अध्यक्ष** बने थे।

कांग्रेस के बारे में विभिन्न लोंगों का कथन

- कांग्रेस की स्थापना **डफरिन** द्वारा आंदोलन को दबाने के लिए **'सेफ्टी वॉल्व'** के रूप में की गई।

- कांग्रेस के बारे में **डफरिन** ने कहा था कि **'यह जनता के उस अल्पसंख्यक वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है जिसकी संख्या सूक्ष्म है।'**
- कांग्रेस के बारे में **कर्जन** ने कहा था कि **'कांग्रेस अपनी मौत की घड़ियां गिन रही है, भारत में रहते हुये मेरी एक सबसे बड़ी इच्छा है कि मैं उसे शांतिपूर्वक मरने में मदद करूं।'** कर्जन ने ही कांग्रेस को **'गंदी चीज' और देशद्रोही संगठन'** करार दिया।
- विपिन चंद्र पाल ने कांग्रेस को **'याचना संस्था'**, अश्विनी कुमार दत्त ने **'तीन दिनों का तमाशा'** कहा। पाल ने कांग्रेस की नीति 'को **'भिखमंगी नीति'** की संज्ञा दी थी।
- अरविन्द घोष ने **भीख मांगने वाली संस्था** कहा।

आंदोलन का उदारवादी प्रथम चरण (1885-1905)

- इस युग में कांग्रेस पर **दादाभाई नौरोजी** जो कांग्रेस के महासचिव थे, **फिरोजशाह मेहता, दिनेशा वाचा, व्योमेश चंद्र बनर्जी, गोपाल कृष्ण गोखले** आदि लोगों का वर्चस्व था इन्हें नरमपंथी या उदारवारी कहा गया।
- इनका विश्वास था कि अंग्रेज न्यायप्रिय लोग हैं और वे भारतीयों के साथ न्याय करेंगे। इन नेताओं ने अपनी मांगें मनवाने के लिए ब्रिटेन में दादा भाई नौरोजी (**ग्रांड ओल्ड मैन ऑफ इंडिया**) को अध्यक्षता में **1887 में 'भारतीय सुधार समिति'** की स्थापना की।

उग्रवादी संघर्ष (1905-1919 ई.)

- मिस्र, फारस, तुर्की की स्वतंत्रता संघर्ष, 1896 में अबीसीनिया द्वारा इटली की पराजय, 1905 में जापान द्वारा रूस की पराजय भारत में उग्रवादी नीतियों के प्रेरणास्रोत थे।
- 1905-1919 ई. के मध्य कांग्रेस में नये लोगों का प्रवेश हुआ, जिसमें **लोकमान्य तिलक, विपिन चन्द्र पाल, अरविंद घोष तथा लाला लाजपत राय** आदि प्रमुख थे। इन्होंने सरकार के सामने **'स्वराज्य'** की मांग रखी।
- अरविंद घोष मे भवानी मंदिर में लिखा कि **"हमारी भारत माता पृथ्वी का एक टुकड़ा नहीं है...**।
- तिलक ने **1893 में गणपति उत्सव** व **1895 मे शिवाजी उत्सव** की शुरुआत की।
- स्वराज, स्वदेशी और बहिष्कार का नारा सर्वप्रथम तिलक ने दिया।

बंगाल का विभाजन व स्वदेशी आंदोलन (1905 ई.)

- वायसराय लॉर्ड कर्जन ने जुलाई 1905 ई. में दो प्रांतों पश्चिम बंगाल (बिहार, उड़ीसा सहित) और पूर्वी बंगाल (असम सहित) में विभाजित करने की घोषणा की थी।
- बंगाल के विभाजन की **घोषणा 20 जुलाई, 1905** को की गई। बंगाल विभाजन की योजना **16 अगस्त, 1905** को प्रभावी हुयी।
- जिस दिन विभाजन लागू हुआ था, वह दिन **'शोक दिवस'** के रूप में मनाया गया। लोगों ने उपवास रखा, वंदेमातरम गीत गाये व एक दूसरे को राखी बांधे।
- बंकिमचन्द्र चटर्जी द्वारा रचित **'वंदे मातरम्'** गीत को लोगों ने जोश से सड़कों पर गाया। अंग्रेजी वस्तुओं का बहिष्कार सर्वप्रथम, कृष्णकुमार मित्र की साप्ताहिक पत्रिका **'संजीवनी'** में सुझाया गया।
- टैगोर ने इसी आंदोलन के दौरान **आमार सोनार बांग्ला** नामक गीत लिखा।
- कड़े विरोध के कारण **1911** ई. में सरकार को **बंग-भंग का आदेश वापस लेना** पड़ा। यह निर्णय जार्ज पंचम के दिल्ली दरबार (1911) में लिया गया, जो 1912 ई. में लागू हो गया।

मुस्लिम लीग (1906)

- आंगा खां के नेतृत्व मे सलीमुल्लाह ने **30 दिसंबर, 1906** को ढाका में मुस्लिम लीग की स्थापना की।
- 1916 ई. में लखनऊ समझौते के पश्चात कांग्रेस व मुस्लिम लीग ने एक ही मंच पर कार्य करने का निर्णय लिया।

सूरत विभाजन (1907 ई.)

- 1907 सूरत कांग्रेस के अध्यक्ष **रासबिहारी घोष** थे। नरमपंथी रासबिहरी के अध्यक्ष बनाना चाहते थे जबकि गरमपंथी बालगंगाधर तिलक को अध्यक्ष बनाना चाहते थे इसी वजह से विभाजन हुआ था।
- कांग्रेस **नरमदल** (दादाभाई नौरोजी, सुरेन्द्र नाथ बनर्जी, गोपालकृष्ण गोखले आदि) एवं **गरम दल** (लाला लाजपत राय, विपिन चंद्र पाल तथा बाल गंगाधर तिलक) में विभक्त हो गयी।

दिल्ली दरबार (1911 ई.)

- तत्कालीन **वायसराय लॉर्ड हार्डिंग** ने दिसंबर 1911 में सम्राट **जार्ज पंचम तथा महारानी मेरी** को भारत बुलाया और दिल्ली में भव्य दरबार (12 दिसंबर 1911) का आयोजन करवाया। इसी दरबार में बंगाल विभाजन को रद्द करने तथा राजधानी **कलकत्ता से दिल्ली** स्थानांतरित करने (1912 ई.) की घोषणा की गयी। **1 अप्रैल, 1912** को दिल्ली को कलकता की जगह भारत की नई राजधानी बनायी गयी।
- पश्चिमी तथा पूर्वी बंगाल को फिर से एक करने तथा **बिहार और उड़ीसा नाम के एक नये प्रांत के निर्माण** की घोषणा भी हुई। असम में सिलहट को शामिल किया गया।

भारत में क्रांतिकारी आंदोलन

- क्रांतिकारी आंदोलन का प्रथम आभास महाराष्ट्र के पूना जिले के **चितपावन ब्राह्मणों** में मिलता है। यूरोपीयों की प्रथम राजनैतिक हत्या 22 जून 1897 को पूना में हुई, जिसके लिए **दामोदर और बालकृष्ण** जिन्हें प्राय: **'चापेकर बंधु'** भी कहा जाता है, उत्तरदायी थे।
- **श्री पी. मित्रा** ने एक गुप्त क्रांतिकारी संगठन **'अनुशीलन समिति'** का गठन किया।
- 1905 ई. में **बारीन्द्र कुमार घोष** ने **'भवानी मंदिर'** नाम की पुस्तिका लिखी
- **बाघा जतिन** के नाम से ख्यात **जतींद्र नाथ मुखर्जी** 9 सितंबर, 1915 को बालासोर में पुलिस मुठभेड़ में मारे गये।
- श्यामजी कृष्ण वर्मा ने 1905 ई. में लंदन में **इंडियन होमरूल सोसायटी** की स्थापना की।
- रुस्तम के. आर. कामा को **'भारतीय क्रांति की माता'** कहा जाता है।
- **1907** में **जर्मनी के स्टुटगार्ट में** द्वितीय अंतरराष्ट्रीय समाजवादी कांग्रेस में भिकाजी कामा ने हिस्सा लिया और इसी सम्मेलन में उन्होंने राष्ट्रीय तिरंगा झंडा की फहराया।

गदर आंदोलन

- नवंबर **1913** में **सोहन सिंह भाकना** ने **हिंद एसोसिएशन ऑफ अमरीका** की स्थापना की। यही संगठन बाद में **गदर आंदोलन** हो गया। उपर्युक्त संस्था ने **अंग्रेजी, ऊर्दू, पंजाबी व मराठी** में गदर या हिंदुस्तान गदर साप्ताहिक पत्रिका निकाला।
- दिसंबर **1915** में **राजा महेंद्र प्रताप** ने जर्मनी के सहयोग से अफगानिस्तान के काबूल में अंतरिम सरकार की स्थापना की। **बरकतुल्ला** प्रधानमंत्री बनें।

हार्डिंग बम कांड (1912) (दिल्ली षडयंत्र)

- 23 दिसंबर, 1912 को राजधानी हस्तांतरण समारोह के दौरान वायसराय हार्डिंग पर बम फेंका गया जिसमें वे घायल गये। इसे **'दिल्ली षडयंत्र' या दिल्ली-लाहौर षडयंत्र** के नाम से भी जाना जाता है। रास बिहारी बोस ने षडयंत्र रचा था और बम भी फेंका था परंतु वे भाग गये। **बसंत कुमार विश्वास, अमिर चंद व अवध बिहारी** को फांसी की सजा दी गई।

कामागाटामारू प्रकरण (1914)

- कामागाटामारू प्रकरण 1914 ई. में घटा था। 1913 ई. में कनाडा के उच्चतम न्यायालय ने अपने एक निर्णय के अन्तर्गत ऐसे 35 भारतीयों को देश में घुसने का अधिकार दे दिया, जो सीधे भारत से नहीं आये थे। इस निर्णय से उत्साहित होकर भारत के गुरदीप सिंह ने '**कामागाटामारू**' नामक एक जहाज को किराये पर लेकर **376** यात्रियों के साथ कनाडा के बन्दरगाह **'बैंकवर'** की ओर प्रस्थान किया। इन लोगों के तट पर पहुँचने के बाद कनाडा की पुलिस ने भारतीयों की घेराबन्दी करके उन्हें देश में घुसने से मना कर दिया।
- इसी दौरान **'शोर कमटी' (तटीय समिति)** की स्थापना की। जब ये जहाज **'याकोहामा'** पहुँचा, तब उससे पहले ही प्रथम विश्वयुध प्रारम्भ हो गया। इसके बाद जब जहाज 'बजबज' पहुँचा तो यात्रियों व पुलिस में झड़पें हुई। इसमें 18 यात्री मारे गये और जो शेष बचे थे, वे जेल में डाल दिये गए।

लखनऊ समझौता (1916 ई.)

- महात्मा गांधी, सरोजिनी नायडू, अबुल कलाम आजाद आदि नेताओं के प्रयासों से **1916 में अंबिका चरण मजुमदार** की अध्यक्षता में कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन में **कांग्रेस तथा मुस्लिम** लीग तथा **उदारवादी दल तथा उग्रवादी** दल दोनों में पुनः एकता हो गयी।

होमरूल आंदोलन

- सर्वप्रथम आयरलैंड में आयरिश नेता रेडमांड के नेतृत्व में होमरूल लीग की स्थापना हुई।
- होमरूल आंदोलन एनी बेसेंट द्वारा आयरिश होमरूल लीग के आधार पर भारत में प्रारंभ किया।

- तिलक ने **28 अप्रैल 1916** को बेलगांव (पूना) में होमरूल लीग का गठन किया।
- तिलक ने अपने पत्र **'मराठा'(अंग्रेजी मे)** एवं **'केसरी'(मराती मे)** तथा एनी बेसेंट ने अपने पत्र **'कॉमनवील'** तथा **'न्यू इंडिया'** के माध्यम से प्रचार किया।
- तिलक को बेलेंटाइन चिरोल ने अशान्ति का जनक कहा। होमरूल आन्दोलन में बालगंगाधर को 'तिलक' की उपाधि मिली।

मटेग्क्यू घोषणा (अगस्त घोषणा) 1917

- **20 अगस्त, 1917** को **भारत सचिव मटेग्यू** ने भारत के भावी संबंधों के लिए ब्रिटिश सरकार की नीति प्रस्तुत की। भारतीयों को प्रशासन के प्रत्येक क्षेत्र में अधिकाधिक रूप से संबंध किया जाये व स्वशासी संस्थाओं का कमिक रूप से विकास किया जाये।'

रॉलेक्ट एक्ट सत्याग्रह (1919)

- न्यायाधीश **सर सिडनी रॉलेट** की अध्यक्षता में न्युक्त किया गया। जिसके तहत किसी जिस व्यक्ति से शांति भंग होने की संभावना हो, उसे गिरफ्तार कर लिया जाये तथा बिना मुकदमा चलाये दो वर्षों तक बंदी बनाये रखने की व्यवस्था की गयी।
- इस रॉलेट बिल (विधेयकों) को जनता ने 'काला कानून' नाम दे दिया था

जलियांवाला बाग हत्याकांड (1919)

- 9 अप्रैल को गांधीजी पंजाब के लोगों के आग्रह पर वहां जा पहुंचे, किंतु पलवल के समीप रोक लिए गये और उन्हें बंदी बना लिया गया। 10 अप्रैल, 1919 को **डॉ. किचलू और डॉ. सत्यपाल** को गिरफ्तार कर लिया गया।
- विद्रोह के दमन के लिए **जनरल डायर** अपनी टुकड़ी समेत अमृतसर पहुंचा। **13 अप्रैल, 1919** की दोपहर को जलियांवाला बाग में एक सभा का आयोजन किया गया। डायर ने सैनिकों को वहां एकत्र भीड़ पर गोली चलाने का आदेश दिया।
- नोट – जनरल डायर को उधम सिंह ने 13 मार्च, 1940 मे लंदन मे मार डाला।
- इस हत्याकांड के विरोध में **रवीन्द्रनाथ टैगोर** ने ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रदान की गयी **'नाइटहुड'** उपाधि लौटा दी।
- **सर शंकरन नायर** ने गवर्नर जनरल की **कार्यकारी परिषद से त्यागपत्र** दे दिया।
- जांच के लिए **हंटर समिति** के गठन की घोषणा की गयी। इस समिति की रिपोर्ट के अनुसार इस कांड में सरकार का कोई दोष नहीं था

- कांग्रेस ने इस हत्याकांड की जांच के लिए अपनी ओर से भी **मदन मोहन मालवीय** की अध्यक्षता में एक समिति गठित की। मोतीलाल नेहरू, तैय्यबजी, गांधीजी, सीआर दास इसके सदस्य थे। रिपोर्ट में डायर की निंदा की गई।

खिलाफत आंदोलन

- प्रथम महायुद्ध के समय तुर्क साम्राज्य के शासक सुल्तान **अब्दुल हमीद द्वितीय** ही मुसलमानों के खलीफा थे।
- प्रथम महायुद्ध में तुर्की अंग्रेजों के विरुद्ध जर्मनी की ओर हो गया था। नवम्बर 1914 ई. में रूस, इंग्लैंड और फ्रांस ने तुर्की के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की। भारतीय मुसलमान अब अंतद्वंद्व की स्थिति में थे, क्योंकि युद्ध में एक के प्रति राजनीतिक निष्ठा थीं, तो दूसरे के प्रति धार्मिका सोवर्स की सोंध के द्वारा खिलाफत की समाप्ति व तुर्की का विभाजन हो गया।
- अली बंधुओं (मोहम्मद व शौकत अली) ने अपने पत्र कॉमरेड में तुर्की के प्रति सहानुभूति बरती।
- 24 नवंबर, 1919 को दिल्ली में आयोजित खिलाफ कमेटी सम्मेलन की अध्यक्षता **महात्मा गांधी** ने किया।

असहयोग आंदोलन (1920-1922)

- आन्दोलन शुरू करने से पहले गांधी जी ने **'कैसर-ए-हिन्द', जूलू युद्ध पदक व बोअर पदक**, पुरस्कारों को लौटा दिया। **'राय बहादुर'** की उपाधि से सम्मानित **जमनालाल बजाज** ने भी यह उपाधि वापस कर दी।
- असहयोग आन्दोलन का संचालन स्वराज की माँग को लेकर किया गया। इसका उद्देश्य सरकार के साथ सहयोग न करके कार्यवाही में बाधा उपस्थित करना था।
- असहयोग आन्दोलन गांधी जी ने **1 अगस्त,1920** को आरम्भ किया। स्वराज्य की प्राप्ति के लिए हमारे द्वारा प्रगतिशील अहिंसात्मक असहयोग की नीति अपनाई जानी चाहिए।'

1. सरकारी उपाधि एवं अवैतनिक सरकारी पदों को छोड़ दिया जाए।
2. सरकार द्वारा आयोजित सरकारी तथा अर्द्धसरकारी उत्सवों का बहिष्कार किया जाए। स्थानीय संस्थाओं की सरकारी सदस्यता से इस्तीफा दिया जाए।

3. सरकारी स्कूलों एवं कॉलेजों का बहिष्कार तथा वकीलों के द्वारा न्यायालय का बहिष्कार किया जाए।
4. आपसी विवाद पंचायती अदालतों के द्वारा निपटाया जाए।
5. असैनिक श्रमिक व कर्मचारी वर्ग मेसोपोटामिया में जाकर नौकरी करने से इन्कार करे।
6. विदेशी सामानों का पूर्णतरू बहिष्कार किया जाए।

- असहयोग आंदोलन की शुरुआती दिन (अगस्त, 1920) ही तिलक की मृत्यु से कांग्रेस को धक्का लगा।
- विद्यार्थियों के अध्ययन के लिए अनेक शिक्षण संस्थाएँ जैसे काशी विद्यापीठ, बिहार विद्यापीठ, बनारस विद्यापीठ आदि स्थापित की गई।
- बहिष्कार आन्दोलन के समय **ताड़ी की दुकानों** पर धरना बहुत लोकप्रिय हुई।
- **प्रिन्स ऑफ वेल्स का बहिष्कारः** अप्रैल, 1921 में प्रिन्स ऑ वेल्स के भारत आगमन पर उनका सर्वत्र काला झण्डा दिखाकर स्वागत किया गया। गांधी जी ने अली बन्धुओं की रिहाई न किये जाने के कारण प्रिन्स ऑफ वेल्स के भारत आगमन का बहिष्कार किया।
- **आन्दोलन समाप्तिः** **5 फरवरी, 1922** को गोरखपुर जिले के **चौरी चौरा** नामक स्थान पर पुलिस ने जबरन एक जुलूस को रोकना चाहा, इसके फलस्वरूप लोगों ने क्रोध में आकर थाने में आग लगा दी, जिसमें एक थानेदार एवं 21 सिपाहियों की मृत्यु हो गई। इस घटना से गांधी स्तब्ध रह गए।
- असहयोग आन्दोलन के स्थगन पर मोतीलाल नेहरू ने कहा कि, '**यदि कन्याकुमारी के एक गाँव ने अहिंसा का पालन नहीं किया, तो इसकी सजा हिमालय के एक गाँव को क्यों मिलनी चाहिए।**'

स्वराज दल की स्थापना (1923)

- गांधीजी की नीतियों से क्षुब्ध होकर मार्च 1923 ई. में **चितरंजन दास, मोती लाल नेहरू एवं नरसिम्ह चिंतामन केलकर** ने इलाहाबाद में 'कांग्रेस खिलाफत स्वराज दल' की स्थापना की जो स्वराज दल कहलाया। **सीआर दास** इसके अध्यक्ष थे।
- 16 जून 1925 ई. को चितरंजन दास की मृत्यु से स्वराज पार्टी को धक्का लगा।

क्रान्तिकारी घटनाये -

- अक्टूबर **1924** में समस्त क्रांतिकारी दलों का कानपुर में एक सम्मेलन बुलाया गया, जिसमें भाग लेने वाले क्रांतिकारियों के नाम थे **शचीन्द्र नाथ सान्याल, जगदीश चन्द्र**

चटर्जी, रामप्रसाद बिस्मिल, भगतसिंह, सुखदेव तथा चंद्रशेखर आजाद 1928 ई. में भारत गणतंत्र समिति अथवा सेना (Hindustan Republican Association or Army) का जन्म हुआ तथा बंगाल, बिहार, यू.पी., दिल्ली, पंजाब तथा मद्रास जैसे प्रांतों में इसकी शाखाएं स्थापित की गयीं। चंद्रशेखर आजाद इसके अध्यक्ष बनाये गये।

- **9 अगस्त, 1925** ई को यूपी के क्रांतिकारियों ने सहारनपुर- लखनऊ लाइन पर काकोरी जाने वाली गाड़ी **(8-डाउन ट्रेन)** को सफलतापूर्वक लूटा। काकोरी काण्ड के अभियोग में **रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाकउल्ला खां, राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी तथा रोशन सिंह** ने यह कहते हुए कि 'मैं अंग्रेजी राज्य के पतन की इच्छा करता हूं' फांसी पर लटक गये।
- साइमन आयोग के विरुद्ध प्रदर्शन करते हुए लाला लाजपत राय पर किये गये लाठीचार्ज के फलस्वरूप हुई उनकी मृत्यु हो गयी।
- 8 अप्रैल, 1929 ई. को सरदार भगतसिंह तथा बटुकेश्वर दत्त ने सेंट्रल लेजिस्लेटिव असेम्बली में बहरी ब्रिटिश सरकार को जन आकांक्षाओं से परिचित कराने के लिए बम फेंका।
- साण्डर्स हत्याकांड और लाहौर षड्यंत्र कांड के तहत **भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरु को 23 मार्च,1931** ई. को फांसी दे दी गयी।

साइमन कमीशन (1927 ई.)

- साइमन कमीशन का उद्देश्य यह जांच करना था कि क्या भारतीयों को और अधिक संवैधानिक अधिकार प्रदान किये जाए या नहीं। सर जॉन साइमन को अध्यक्षता में एक सदस्यीय आयोग गठित किया गया, जिसमें कोई सदस्य भारतीय नहीं था। कांग्रेस ने इसे **श्वेत कमिशन** कहा।
- **3 फरवरी, 1928** को आयोग मुंबई पहुंचा। जहां-जहां यह कमीशन गया, उसे काला झंडा दिखाया गया।
- 1928 ई. में साइमन कमीशन के विरोध प्रदर्शन में लाहौर में लाठी की चोट से घायल होने से **'शेरे पंजाब' लाला लाजपत राय** की मृत्यु हो गयी। मृत्यु से पूर्व उन्होंने कहा 'मेरे ऊपर जो लाठियों के प्रहार किये गये हैं वही एक दिन ब्रिटिश साम्राज्य के ताबूत की आखिरी कील साबित होगी।

नेहरू रिपोर्ट (1928 ई.)

- 1925 ई. में भारत सचिव **लॉर्ड बर्केनहैड** ने कांग्रेसी नेताओं को यह चुनौती दी कि भारतीय एक संविधान का मसविदा तैयार कर सकें, तो ब्रिटिश सरकार इस पर सहानुभूतिपूर्ण ढंग से विचार कर सकती है।
- इस पर विचार हेतु 29 दलों का फरवरी 1928 में दिल्ली में तथा 19 मई, 1928 ई. को बंबई में सर्वदलीय सम्मेलन हुआ। मुंबई में पं. मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में भारतीय संविधान के मसविदे को तैयार करने के लिए एक आठ सदस्यीय समिति की नियुक्ति हुई। **जवाहरलाल नेहरू** इस समिति के सचिव थे, **28 अगस्त, 1928** को नेहरू रिपोर् सौपी गयी।
- रिपोर्ट में **'डोमिनियमन स्टेट्स'** को पहला लक्ष्य एवं **'पूर्ण स्वराज'** को दूसरा लक्ष्य घोषित किया गया।

जिन्ना का 14 सूत्री फार्मूला

- नेहरू रिपोर्ट की बहुत सी बातों को मुस्लिम लीग के नेता मुहम्मद अली जिन्ना ने मुस्लिम विरुद्ध बताया और **सितंबर 1929** ई. में अपनी रिपोर्ट दी, जिसमें 14 शर्त थीं। इसे ही **जिन्ना के 14 सूत्र** कहा जाता है।

कांग्रेस लाहौर अधिवेशन (1929)

- सन **1929** के दिसंबर में लाहौर में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अधिवेशन पंडित जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में हुआ जिसमें घोषणा की गई कि. यदि अंग्रेज सरकार **26 जनवरी, 1930** तक भारत को उपनिवेश का पद (डोमीनियन स्टेटस) नहीं प्रदान करेगी तो भारत अपने को पूर्ण स्वतंत्र घोषित कर देगा।
- **26 जनवरी, 1930** तक जब अंग्रेज सरकार ने कुछ नहीं किया तब कांग्रेस ने उस दिन भारत ने अर्धरात्रि को **रावी नदी** के तट पर 'पूर्ण स्वराज्य' की घोषणा की

दांडी यात्रा या नमक सत्याग्रह (1930)

- मार्च **12 मार्च 1930** से **6 अप्रैल 1930** तक अपने 78 अनुयायी के साथ ब्रिटिश नमक एकाधिकार के खिलाफ अभियान चलाया। 240 मील (390 किमी), साबरमती आश्रम से दांडी तक यात्रा की। दाण्डी मार्च मे सर्वाधिक महिलाये थी।

सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930-34 ई.)

- **6 अप्रैल, 1930** ई. को सविनय अविज्ञा आन्दोलन छेड़ा जिसका उद्देश्य कुछ विशिष्ट प्रकार के गैर-कानूनी कार्य सामूहिक रूप से करके ब्रिटिश सरकार को झुका देना था।
- उत्तर पश्चिम सीमा प्रांत में खान **अब्दुल गफ्फार खान** (सीमांत गांधी) के नेतृत्व में **खुदाई खिदमतगार** (1928 में गठित) या **लालकुर्ती** आन्दोलन चलाया गया
- गांधीजी को **यरवदा जेल** में रखा गया
- **बानर सेना** लड़कों की थी, लड़कियों की **मंजरी सेना** थी।

प्रथम गोलमेज सम्मेलन (1930-31)

- 12 सितंबर, 1930 से 29 जनवरी, 1931 के बीच प्रथम गोलमेज सम्मेलन का लंदन में आयोजन किया गया। इसमें कांग्रेस ने भाग नहीं लिया।
- सम्मेलन का उद्घाटन ब्रिटिश सम्राट **जॉर्ज पंचम** ने तथा अध्यक्षता **ब्रिटिश प्रधानमंत्री रैम्जे मैकडोनाल्ड** ने किया।

गांधी इर्विन समझौता (मार्च 1931)

- गांधीजी को 26 जनवरी, 1931 ई. को यरवदा जेल से रिहा कर दिया गया। **5 मार्च, 1931 ई.** को **'गांधी इर्विन पैक्ट' (दिल्ली पैक्ट)** के मसविदे पर हस्ताक्षर किये गये। इसे दिल्ली समझौता भी कहा जाता है।

द्वितीय गोलमेज सम्मेलन (1931)

- 7 सितंबर, 1931 से दिसंबर, 1931 तक सेंट जेम्स पैलेस में द्वितीय गोलमेज सम्मेलन आयोजित हुआ। कांग्रेस की ओर से केवल **गांधीजी** ने भाग लिया।

करांची अधिवेशन, 1931

- कांग्रेस का अधिवेशन 29 मार्च, 1931 में कराची में वल्लभभाई पटेल की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। गांधीजी को अपनी कराची यात्रा के दौरान भगत सिंह एवं उनके साथियों को फांसी की सजा से न बचा पाने के कारण जनता के तीव्र रोष का सामना करना पड़ा।
- इस अधिवेशन में कांग्रेस ने पहली बार पूर्ण स्वराज्य को परिभाषित किया और बताया कि जनता के लिये पूर्ण स्वराज्य का अर्थ क्या है।

- गांधी ने कहा कि - **गांधी मर सकते है गांधीवाद नहीं।**

द्वितीय सविनय अवज्ञा आंदोलन (1932-34)

- 1 जनवरी, 1932 को सविनय अवज्ञा आंदोलन दोबारा शुरू करने का निर्णय लिया गया। गांधीजी ने वापस आकर पुन: सविनय अवज्ञा आंदोलन प्रारंभ किया।

तीसरा गोलमेज सम्मेलन, (1932)

- 17 नवंबर, 1932 से 24 दिसंबर 1932 तक तृतीय गोलमेज सम्मेलन आयोजित हुआ। कांग्रेस ने इसमें भाग नहीं लिया। **अंबेडकर तथा टी वी सप्रू ऐसे नेता** थे जिन्होंने तीनों गोलमेज सम्मेलनों में हिस्सा लिया।

मैक्डोनाल्ड अवार्ड एवं पूना समझौता (1932)

(कम्युनल अवार्ड)

- ब्रिटिश प्रधानमंत्री रैम्जे मैकडोनाल्ड ने 16 अगस्त 1932 ई. को सांप्रदायिक पंचाट या कम्युनल अवार्ड की घोषणा की।
- इसमें प्रत्येक अल्पसंख्यक समुदाय के लिए विधान मंडल में कुछ सीटें आरक्षित की गयी थीं। इस समझौते मे अम्बेडर एवं गांधी के अनुयायी ने हस्ताक्षर किये जबकि गांधी जी की तरफ से मदन मोहन मालवीय ने किये थे।
- प्रांतीय विधान मंडलों में दलितों के लिए सुरक्षित सीटों की संख्या **71 से बढ़कर 147** कर दी गयी।
- सितंबर **1932** ई. में गांधीजी द्वारा **अखिल भारतीय अस्पृश्यता संघ** की स्थापना की गयी।
- गांधीजी द्वारा **1933** ई. में **'हरिजन पत्र'** का प्रकाशन किया गया।

1937 ई. के चुनाव

- कांग्रेस को पांच प्रांतों ; संयुक्त प्रांत, मद्रास, मध्य प्रांत, बिहार तथा उड़ीसा में पूर्ण बहुमत प्राप्त बंबई में बहुमत के नजदीक।
- कांग्रेस ने उत्तर पश्चिमी सीमा प्रांत, बंबई, संयुक्त प्रांत, मद्रास, मध्य प्रांत, बिहार तथा उड़ीसा में कांग्रेस मंत्रिमंडल बने।

- बंगाल, पंजाब एवं सिंघ में कांग्रेस मंत्रिमंडल नहीं बन सका। **बंगाल में कृषक प्रजा पार्टी** तथा मुस्लिम लीग ने संयुक्त सरकार का गठन किया जबकि **पंजाब में यूनियनिस्ट पार्टी** ने सरकार बनायी।
- प्रमुख मंत्रिमंडलों के अध्यक्ष निम्नलिखित थे:

1. बिहार में श्रीकृष्ण सिन्हा
2. संयुक्त प्रांत में जवाहर लाल नेहरू
3. सिंघ में अल्लायख्श
4. बंगाल में फजलुल हक
5. पंजाब में सिंकंदर हयात खान
6. मध्य भारत में एन.वी. खरे
7. मद्रास में राजगोपालाचारी
8. बंबई में वी. जी. खेर

- कांग्रेस ने **28 माह** कार्यकाल किया 8 राज्यो मे।
- 3 सितंबर, 1939 को द्वितीय विश्व युद्ध शुरु होने पर बिना कांग्रेस से अनुमति लिये वायसराय लिनलिथगो ने भारत को भी इसमें शामिल होने की घोषणा कर दी। इसके विरोध में कांग्रेस मंत्रिमंडल ने 27 अक्टूबर से 15 नवंबर, 1939 के बीच त्यागपत्र दे दिया।
- इसके उपलक्ष्य में मुस्लिम लीग ने अंबेडकर के साथ मिलकर **22 दिसंबर, 1939 ई. को मुक्ति दिवस** मनाया।

त्रिपुरी संकट (1939)

- 1938 में ताप्ती नदी के किनारे **हरिपुरा (गुजरात)** में कांग्रेस अधिवेशन की अध्यक्षता **सुभाष चंद्र बोस** ने की। यह कांग्रेस का 51 वाँ अधिवेशन था, इसलिए कांग्रेस अध्यक्ष सुभाष चन्द्र बोस का स्वागत 51 बैलों द्वारा खींचे हुए रथ में किया गया।
- **1939** का वार्षिक कांग्रेस अधिवेशन **त्रिपुरी (मध्य प्रदेश)** में हुआ। सुभाष ने स्वयं कांग्रेस अध्यक्ष बने रहना चाहा। लेकिन गांधी उन्हें अध्यक्ष पद से हटाना चाहते थे। गांधी ने अध्यक्ष पद के लिये **पट्टाभि सीतारमैया** को चुना। कांग्रेस पार्टी में अध्यक्ष पद के लिये चुनाव हुआ। गांधीजी ने पट्टाभि सीतारमैया की हार को अपनी हार बताकर अपने साथियों से कह दिया।
- आखिर में तंग आकर 29 अप्रैल 1939 को सुभाष ने कांग्रेस अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया। उनकी जगह गांधीवादी **राजेंद्र प्रसाद** कांग्रेस के अध्यक्ष बने।
- **3 मई 1939** को सुभाष चंद्र बोस ने कांग्रेस के अन्दर ही **फॉरवर्ड ब्लॉक** के नाम से अपनी पार्टी की स्थापना की।

पाकिस्तान प्रस्ताव

- द्वि-राष्ट्र का सिद्धांत **1930** ई. में सर **मुहम्मद इकबाल** ने दिया था, जिनका रचा गीत **'सारे जहां से अच्छा, हिंदोस्तां हमारा है।'** लेकिन **'पाकिस्तान'** शब्द का सृजन कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के स्नातक चौधरी **रहमत अली** ने किया था। उसके द्वारा परिकल्पित पाकिस्तान में पंजाब अफगान प्रांत, कश्मीर, सिंध और बलूचिस्तान शामिल था।
- सरोजिनी नायडु ने मुहम्मद अली जिन्ना को **'हिंदू-मुस्लिम एकता का दूत'** की संज्ञा दी थी।
- जिन्ना ने कभी कहा था कि **'हिंदू व मुस्लिम भारत रूपी सुंदर पक्षी के दो आंख हैं।'**
- भारत विभाजन के दौरान पंजाब राज्य ने एक संयुक्त एवं स्वतंत्र अस्तित्व की योजना बनाई थी। पूर्वी पंजाब, पटियाला तथा पहाड़ी राज्यों का एक संघ बनाया गया जिसे **पेप्सू** कहा गया।

व्यक्तिगत सत्याग्रह (1940)

- महात्मा गांधी ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध भारतीय भावनाओं को व्यक्त करना चाहते थे। इसलिए उन्होंने सामूहिक कार्रवाई के स्थान पर व्यक्तिगत सत्याग्रह आंदोलन आरंभ किया। महात्मा गांधी के अनुयायी **विनोबा भावे को प्रथम सत्याग्रही** के रूप में चुना गया जबकि जवाहरलाल नेहरु दूसरे सत्याग्रही चुने गये

अगस्त प्रस्ताव, 1940

- अगस्त प्रस्ताव कांग्रेस के सभी जगह से इस्तीफा देने के कारण लाया गया था।
- जनवरी 1940 ई. में वायसराय **लॉर्ड लिनलिथगो** ने घोषित किया कि भारत में ब्रिटिश सरकार द्वारा वेस्टमिन्स्टर प्रकार का एक डोमिनियन (अधीनस्थ अस्तित्व को द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अनुमति प्रदान किये जाने की संभावना है।
- **8 अगस्त 1940** ई. को **'अगस्त प्रस्ताव'** घोषित किया गया। ब्रिटिश सरकार 'युद्ध के निष्कर्ष' के तुरंत बाद एक सभा गठित करेगी, जो नये संविधान के निर्माण का ढांचा बनायेगी जवाहरलाल नेहरू ने डॉमिनियन प्रस्ताव के बारे में कहा कि **'यह दरवाजे में जड़ी जंग लगी कील की तरह है।"**
- अगस्त घोषणा – 20 अगस्त, 1917 (माण्टेग्यू चेम्सफोर्ड सुधार)
- अगस्त प्रस्ताप – 8 अगस्त, 1940 (लिनलिथगो ले कर आये)

- अगस्त क्रांति / संकल्प – 9 अगस्त, 1942 (गांधी का भारत छोड़ो आन्दोलन)

1942 का क्रिप्स शिष्टमंडल

- द्वितीय विश्व युद्ध आरंभ होने पर ब्रिटेन भारत का सक्रिय सहयोग पाने के लिए परेशान था, ताकि न केवल जापान को आगे बढ़ने से रोका जा सके, बल्कि युद्ध की तैयारी में उसे भरपूर मदद मिल सके।
- क्रिप्स **22 मार्च, 1942 ई.** को दिल्ली पहुंचे और 29 मार्च, 1942 ई. को अपनी योजना प्रस्तुत की, जिसमे युद्ध की समाप्ति के तुरंत बाद भारत को डोमिनियम स्टेट्स की प्राप्ति, जिसमें राष्ट्रमंडल से अलग होने का अधिकार भी शामिल होगा।
- गांधीजी ने क्रिप्श प्रस्ताव को **'उत्तरदिनांकित 'चेक' (Postdated Cheque)** की संज्ञा दी। जवाहरलाल नेहरू ने इसमें जोड़ दिया **'ऐसे बैंक के नाम जो डूब रहा है।**

भारत छोड़ो आंदोलन

- भारत छोड़ो आन्दोलन **9 अगस्त, 1942** ई. को सम्पूर्ण भारत में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के आह्वान पर प्रारम्भ हुआ था। इस आंदोलन **अगस्त क्रांति** भी कहा जाता है
- 8 अगस्त, 1942 ई. को कांग्रेस ने **ग्वालिया टैंक बंबई** में अहिंसक संघर्ष चलाने हेतु भारत छोड़ो प्रस्ताव पास किया। इस अधिवेशन की अध्यक्षता **मौलाना आजाद** ने की थी।
- महात्मा गाँधी ने **करो या मरो** का नारा दिया
- गांधीजी को सरोजिनी नायडु के साथ पूना के आगा खां महल में रखा गया। नेहरू को अल्मोड़ा जेल में तथा मौलाना आजाद को बांकुरा में रखा गया।

आजाद हिंद फौज

- 28-30 मार्च, 1942 ई. को टोकियो में रह रहे भारतीय रास बिहारी बोस ने **'इंडियन नेशनल आर्मी'** (आईएनए) का गठन किया।
- कैप्टन मोहन सिंह के मस्तिष्क में सर्वप्रथम **आजाद हिंद फौज** की स्थापना का विचार आया था। कैप्टन मोहन सिंह ने मलाया में 15 दिसंबर, 1941 को **आजाद हिंद फौज** का गठन किया।
- 7 जुलाई, 1943 ई. को रास बिहारी बोस ने सुभाष चंद्र बोस को आजाद हिंद फौज एवं इंडियन लीग की कमान दे दी। बोस आजाद हिंद फौज के प्रथम सेनापति थे।

- आजाद हिंद फौज के **रानी झांसी** रेजीमेंट महिलाओं की थी। तीन अन्य ब्रिगेड का नाम थे; **सुभाष ब्रिगेड, नेहरू ब्रिगेड** व **गांधी ब्रिगेड** ।
- सैनिकों का आह्वान करते हुये बोस ने नारा दिया **'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा।'**
- बोस ने **'दिल्ली चलो'** का नारा भी दिया। 6 नवंबर, 1943 को जापानी सेना ने अंडमान निकोबार आजाद हिंद फौज को सौप दिया जिसे **'शहीद'** व **'स्वराजद्वीप'** नाम रखा गया।
- पहली बार सुभाष चंद्र बोस द्वारा ही महात्मा गांधी को **'राष्ट्रपिता'** कहकर संबोधित किया गया।

कैबिनेट मिशन (1946)

- ब्रिटिश प्रधानमंत्री **एटली** ने **22 जनवरी, 1946** ई. को भारत में चल रहे राजनीतिक गतिरोध को दूर करने के लिए एक उच्च स्तरीय कैबिनेट मिशन भेजने का निर्णय लिया।
- **भारत विभाजन कैबिनेट मिशन मे शामिल नहीं था।**
- कैबिनेट मिशन के सदस्यों में शामिल थे **सर स्टेफर्ड क्रिप्स, श्री ए.बी. अलेक्जेंडर तथा पैथिक लारेंस**
- **सर पैथक लॉरेंस** इस मिशन के अध्यक्ष थे। 29 मार्च, 1946 को यह मिशन भारत आया।

प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस (1946)

- अप्रैल, 1946 ई. में दिल्ली में हुए मुस्लिम लोग अधिवेशन में घोषणा की गयी कि लीग पाकिस्तान की मांग मनवाने के लिए **16 अगस्त, 1946 को 'प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस'** मनायेगी। इस अशुभ दिन को कलकत्ता में सामूहिक कत्लेआम हुआ।

अंतरिम सरकार का गठन

- **24 अगस्त, 1946** को **पं. नेहरू** के नेतृत्व में भारत की पहली अन्तरिम राष्ट्रीय सरकार की गयी, जिसमें मुस्लिम लीग की भागीदारी नहीं थी। परन्तु मुस्लिम लीग ने बाद में भाग लिया।

अंतरिम सरकार के मंत्री थे;

- जवाहर लाल नेहरूः **प्रधानमंत्री**

- वल्लभ भाई पटेल: **गृहमंत्री**
- बलदेव सिंहः **रक्षा मंत्रालय**,
- सी. राजगोपालाचारी - **शिक्षा एवं कला**
- आसफ अली: **रेलवे तथा ट्रांसपोर्ट**,
- राजेन्द्र प्रसादः **खाद्य तथा कृषि मंत्रालय**
- जगजीवन रामः **श्रम**
- जॉन मथाई: **उद्योग एवं आपूर्ति**
- लियाकत अली खान (मुस्लिम लीग) : **वित्त**
- इब्राहीम इस्माइल चुंद्रीगर (मुस्लिम लीग) : **वाणिज्य**

माउंटबेटन योजना (जून 1947)

- में 22 मार्च, 1947 ई. को नये वायसराय माउंटबेटन ने अपना पदभार ग्रहण किया। उन्होंने शीघ्र ही जान लिया कि भारत का बंटवारा अवश्यंभावी है।
- गांधीजी माउन्टबेटन से मिले और उन्हें विभाजन करने से रोका। वे जिन्ना को सरकार बनाने देने के लिए भी राजी थे। बाद में नेहरू और पटेल के दबाव में गांधीजी को भी विभाजन स्वीकार करना ही पड़ा।
- देशी रियासतों को यह स्वतंत्रता होगी कि वे जिसके साथ चाहें, मिल जायें या अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनायें रखें।
- ठीक 12 बजे रात्रि को 14 अगस्त के पाकिस्तान तथा 15 अगस्त, 1947 ई. को भारत का प्रादुर्भाव हुआ।
- जिन्ना पाकिस्तान के गवर्नर जनरल और लियाकत अली प्रधानमंत्री बने। भारत के गर्वनर जनरल लार्ड माउन्टबेटन और प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू बने।

देशी रियासतों का विलय

- 15 अगस्त, 1947 तक **कश्मीर, जूनागढ़** और **हैदराबाद** को छोड़कर सभी देशों रियासतें (500) भारत के साथ विलय के दस्तावेज पर हस्ताक्षर के लिए सहमत हो गयी थी।
- **जनमत संग्रह** के पश्चात 20 फरवरी, 1949 को **जूनागढ़** भारत में सम्मिलित हो गया। **'ऑपरेशन पोलो'** के तहत एक **पुलिस कार्रवाई** के पश्चात 1 नवम्बर, 1948 को **हैदराबाद** भी भारत में सम्मिलित हो गया।

- 20 मई, 1946 को **कश्मीर** के हिन्दू शासक **महाराजा हरि सिंह** के विरूद्ध कश्मीर छोड़ो आंदोलन के दौरान 'नेशनल कांफ्रेस' के नेता शेख अब्दुल्ला गिरफ्तार कर लिये गये।
- अक्टूबर 1947 में पाक समर्थित सीमावर्ती कवायलियों द्वारा कश्मीर पर आक्रमण करने के बाद महाराजा हरि सिंह ने **26 अक्टूबर, 1947 को** कश्मीर का भारत में विलय से संबंधित पत्र पर हस्ताक्षर कर दिये।
- फ्रांस ने 1950 में चंद्रनगर तथा 1954 में पांडिचेरी, कारोकल, माही एवं यनम क्षेत्र भारत को सौंप दिया। गोवा, दमन, दीव, दादरा-नागर हवेली पर पुर्तगालियों का शासन था। 1954 में भारतीय सैनिकों ने दादरा-नगर हवेली पर अधिका कर लिया।

संविधान निर्माण

- कैबिनेट मिशन की संस्तुतियों के आधार पर भारतीय संविधान की निर्माण करने वाली संविधान सभा का गठन जुलाई, **1946** में किया गया।
- प्रत्येक प्रांत एवं देशी रियासतों अथवा रियासतों के समूह को उनकी जनसंख्या के अनुपात के अनुसार (**10 लाख की आबादी पर एक सीट**) संविधान सभा में प्रतिनिधित्व प्रदान किया गया था।
- संविधान सभा के सदस्यों की कुल संख्या **389** निश्चित की गई थी, जिनमें **292** ब्रिटिश प्रांतों के प्रतिनिधि, **4 चीफ कमिश्नर** क्षेत्रों के प्रतिनिधि एवं **93** देशी रियासतों के प्रतिनिधि थे। मुस्लिम लीग द्वारा संविधान सभा से अपने प्रतिनिधियों को बुला लेने के बाद सदस्य संख्या **299** ही रह गई थी।
- संविधान सभा का **प्रथम अधिवेशन 9 दिसंबर, 1946** ई. को **सच्चिदानंद सिन्हा** जो अस्थायी अध्यक्ष थे कि अध्यक्षता में प्रारंभ हुआ। **11 दिसंबर, 1946** को **डा. राजेंद्र प्रसाद** को संविधान सभा का स्थायी अध्यक्ष चुना गया।
- संविधान निर्माण का कार्य **13 दिसंबर, 1946** को जवाहर लाल नेहरू द्वारा **'उद्देश्य प्रस्ताव'** को पेश करने से प्रारंभ हुआ। इस प्रस्ताव को विचार-विमर्श के उपरांत **22 जनवरी, 1947** को संविधान सभा द्वारा पारित कर दिया गया।
- संविधान निर्माण क विभिन्न पहलुओं पर अध्ययन करने के लिए अनेक समितियां नियुक्त की
- **संघ संविधान समितिः** पं. जवाहर लाल नेहरू
- **संचालन समितिः** डा. राजेंद्र प्रसाद (बाद में के.एम. मुंशी)

- **संघ शक्ति समितिः** पं. जवाहर लाल नेहरू
- **प्रांतीय संविधान समिति:** सरदार बल्लभ भाई पटेल
- **प्रारूप समिति** डा. भीम राव अंबेडकर
- **झंडा समितिः** जे.बी. कृपलानी
- इस संविधान में 60 देशों के संविधान की प्रमुख विशेषताओं को शामिल किया. गया था
- संशोधनों के उपरांत **26 नवंबर, 1949** को संविधान सभा ने संविधान पारित कर दिया।
- संविधान पूर्णतया 26 जनवरी, 1950 से लागू हो गया।
- संविधान सभा में संविधान का **प्रथम वाचन 4 से 9 नवंबर, 1948** तक चला। **द्वितीय वाचन 15 नवंबर, 1948 से 17 अक्टूबर, 1949** तक एवं **तृतीय वाचन 14 नवंबर, 1949 से 26 नवंबर, 1949** तक चला। 26 नवंबर, 1949 की संविधान पारित करते समय संविधान सभा के **284** सदस्य उपस्थित थे।
- संविधान के निर्माण में **2 वर्ष 11 माह और 18 दिन** लगे।
- संविधान को जब 1949 (26 नवंबर को) पारित किया गया, तो **इसके 22 भाग 395 अनु और 8 अनुसूचियां** थीं।

कांग्रेस के महत्वपूर्ण अधिवेशन

वर्ष	स्थान	अध्यक्ष	टिप्पणी
1885	मुंबई	व्योमेश चन्द्रबनर्जी	72 प्रतिनिधि उपस्थित थे।
1886	कलकत्ता	दादाभाई नौरोजी	प्रतिनिधियों की संख्या बढकर 436 हो गई।
1887	मद्रास	सैयद बद्रूद्दीन तैयबजी	प्रथम मुस्लिम अध्यक्ष
1888	इलाहाबाद	जॉर्ज यूल	प्रथम अंग्रेज अध्यक्ष
1895	पुणे	सुरेन्द्रनाथ बनर्जी	राष्ट्रीय गीत गाया गया।
1901	कलकत्ता	ई.दिंशा वाचा	गांधी ने पहली बार भाग लिया।
1905	बनारस	गोपाल कृष्ण गोखले	
1906	कलकत्ता	दादाभाई नौरोजी	'स्वराज्य' शब्द का प्रथम बार प्रयोग
1907	सूरत	रासबिहारी घोष	कांग्रेस का विभाजन
1916	लखनऊ	ए.जी. मजुमदार	कांग्रेस का मुस्लिम लीग व गरम दल का विलय।
1917	कलकता	श्रीमती एनी बेसेंट	प्रथम महिला अध्यक्ष
1923	दिल्ली	अबुल कलाम आज़ाद	सबसे कम उम्र के अध्यक्ष
1924	बेलगांव	महात्मा गांधी	
1925	कानपुर	सरोजिनी नायडू	प्रथम भारतीय महिला अध्यक्ष
1929	लाहौर	जवाहरलाल नेहरू	पूर्ण स्वराज्य प्रस्ताव
1930		अधिवेशन नहीं हुआ	
1931	कराची	वल्लभ भाई पटेल	मूल अधिकारों तथा राष्ट्रीय आर्थिक नीति प्रस्ताव
1933	कलकत्ता	नलिनी सेनगुप्ता	
1938	हरिपुरा	सुभाष चन्द्र बोस	
1939	त्रिपुरी	सुभाष चंद्र बोस	बोस का त्यागपत्र, राजेन्द्र प्रसाद का अध्यक्ष बनना तथा
1940	रामगढ	अबुल कलाम आजाद	
1941-45		अधिवेशन नहीं हुआ	अबुल कलाम आजाद अध्यक्ष बने रहे।

कम्पनी के अधीन गवर्नर जनरल

- प्रथम गवर्नर **जेनरल वारेन हेस्टिग्स** (1774-85 ई०) हुआ। वह कासिम बाजार का अध्यक्ष, बंगाल का गवर्नर एवं कम्पनी का गवर्नर जेनरल बना ।

वारेन हेस्टिग्स (1774-85 ई0)

- इसने राजकीय कोषागार को मुर्शिदाबाद से हटाकर कलकत्ता लाया।
- इसने 1781 ई० में कलकत्ता में **प्रथम मदरसा** स्थापित किया।
- 1792 ई० में जोनाथन डंकन ने बनारस में **संस्कृत विद्यालय** की स्थापना की।
- विलियम जोंस ने 1784 ई० में **एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल** की स्थापना की।
- इसी के समय में 1780 ई० में भारत का पहला समाचार पत्र **'द बंगाल गजट'** का प्रकाशन **'जेम्स ऑगस्टस हिक्की'** ने किया था।
- इसी के समय में रेग्युलेटिंग एक्ट के तहत **1774** ई० में **कलकत्ता में एक उच्च न्यायालय** की स्थापना की गयी, जिसका अधिकार क्षेत्र कलकत्ता तक था
- प्रथम **आंग्ल मराठा युद्ध** (1775-82 ई०) एवं **द्वितीय आंग्ल मैसूर युद्ध**) 1780-84. ई०) वारेन हेस्टिंग्स के समय में ही लड़े गये।

लॉर्ड कार्नवालिस (1786-93 और 1805 ई०)

- इसके समय में जिले के समस्त अधिकार कलेक्टर के हाथों में दे दिए गए।
- इसने **1793 ई० में स्थायी बन्दोबस्त** की पद्धति लागू की, जिसके तहत जमींदारों को अब भू-राजस्व का लगभग 90% (1/11 भाग) कम्पनी को तथा लगभग 10% (1/11 भाग) भाग अपने पास रखना था।
- कॉर्नवालिस को भारत में **नागरिक सेवा का जनक** माना जाता है।
- 1799 में बंगाल से दासों के व्यापार पर रोक लगा दी।

लार्ड वेलेजली (1798-1805 ई०)

- इसने **सहायक संधि** की पद्धति शुरू की। भारत में सहायक संधि का प्रयोग वेलेजली से पूर्व फ्रांसीसी गर्वनर **डी डूप्ले** ने किया था।
- सहायक संधि करनेवाले राज्य थे- हैदराबाद (1798 ई०), मैसूर (1799 ई०),अवध (1801 ई०),

- इसी के समय टीपू सुल्तान **चौथे आँग्ल-मैसूर युद्ध** (1799 ई) में मारा गया।
- इसी ने (1800 ई०) कलकत्ता में नागरिक सेवा में भर्ती किए गए युवकों को प्रशिक्षित करने के लिए **फोर्ट विलियम कॉलेज** की स्थापना की।
- यह स्वयं को बंगाल का शेर कहा करता था।

लॉर्ड एमहर्स्ट (1823 1828 ई)

- इसके समय में प्रथम आंग्ल वर्मा युद्ध)1824-1826 ई० (लड़ा गया।
- 1826 ई० में बर्मा एवं अंग्रेजों के बीच यान्डबू की संधि हुई। **1824 ई० में बैरकपुर का सैन्य विद्रोह** भी इसी के समय में हुआ।

विलियम बेटिक (1828-1835 ई०)

- माथे पर जातीय-चिह्न न लगाने तथा कानों में वालियाँ न पहनने देने पर वेल्लोर के सैनिकों ने विद्रोह कर दिया।
- 1833 ई० के 'चार्टर एक्ट' 'द्वारा बंगाल के **गवर्नर जेनरल को भारत का गवर्नर जेनरल** बना दिया गया। इस प्रकार **भारत का पहला गवर्नर** ने विलियम बेटिक हुआ।
- राजा राम मोहन राय के सहयोग से वैटिक ने **1829 ई० में सती-प्रथा** को समाप्त कर दिया। बैंटिक ने इस प्रथा के खिलाफ कानून बनाकर 1829 ई० में धारा 17 के द्वारा विधवाओं के सती होने को अवैध घोषित कर दिया।
- **नोट :**अकबर और मराठा पेशवाओं ने भी सती प्रथा पर रोक लगाने का प्रयास किया था
- बैंटिक ने कर्नल सलीमन की सहायता से **1800 ई० तक ठगी प्रथा** को समाप्त कर दिया।
- सन् 1835 ई० में बैटिक ने कलकत्ता में **कलकत्ता मेडिकल कॉलेज** की स्थापना की।
- इसी के समय **मैकाले की अनुशंसा पर अंग्रेजी को** शिक्षा का माध्यम बनाया गया।
- इसने **शिशु बालिका की हत्या पर भी प्रतिबंध** लगा दिया।

चार्ल्स मेटकॉफ (1835-36 ई०)

- इसने अपने एक वर्ष के कार्यकाल में **प्रेस पर से नियंत्रण हटाया।** इसीलिए इसे **भारतीय प्रेस का मुक्तिदाता** कहा जाता है।

लॉर्ड एलिनबरो (1842-44 ई०)

- प्रथम आंग्ल-अफगान युद्ध समाप्त हुआ। सिन्ध को अगस्त, 1843 ई० में पूर्ण रूप से ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया गया।
- **दास प्रथा का उन्मुलन** इसी के समय में हुआ। (1843 के एक्ट-V के द्वारा)

लॉर्ड हार्डिंग (1844 1845 ई०)

- इसके काल की सबसे महत्त्वपूर्ण घटना थी -**प्रथम आंग्ल-सिक्ख युद्ध** (1845-46 ई०)।
- इसने **नरबलि प्रथा पर प्रतिबंध** लगाया।

लॉर्ड डलहोजी (1549-56 ई०)

- डलहौजी को भारत में **रेलवे का जनक** माना जाता है। इसी के समय भारत में पहली बार **16 अप्रैल, 1853** ई० में बम्बई से थाणे के बीच (34 किमी०) प्रथम रेल चलायी गयी
- **द्वितीय आँग्ल सिक्ख युद्ध** (1848-19 ई०) तथा पंजाब का ब्रिटिश शासन में विलय (1849 ई०) ।
- प्रसिद्ध सिक्ख राज्य का प्रसिद्ध **हीरा कोहिनूर महारानी विक्टोरिया को भेज** दिया गया।
- डलहौजी ने **व्यपगत सिद्धान्त (Doctrine of Lapse)** लागू किया था। इस नीति के तहत अंग्रेजी साम्राज्य में विलय किए गए राज्य थे सर्वप्रथम **सतारा** 1848 ई० में जैतपुर (बुंदेलखंड) और संभलपुर (उड़ीसा) 1849 ई० में .बघाट (हिमाचल प्रदेश) 1850 ई० में, उदेपुर (मध्य प्रदेश) 1852 ई० में, झाँसी 1853 ई० में, नागपुर 1854 ई० में।
- सन् **1856** ई० में **अवध को कुशासन** का आरोप लगाकर अंग्रेजी राज्य में मिला लिया गया। उस समय अवध का नवाब वाजिद अली शाह था।
- शिक्षा संबंधी सुधारों में डलहौजी ने **सन् 1854 ई० के वुड डिस्पैच** को लागू किया।
- 1857 ई० में तीनों प्रेसीडेंसियों **कलकत्ता, मद्रास** एवं **बम्बई** में एक-एक विश्वविद्यालय स्थापित किए गए
- सन् 1854 ई० में नया पोस्ट ऑफिस एक्ट पारित हुआ और भारत में पहली बार डाक टिकट, का प्रचलन प्रारंभ हुआ।
- इसने सन् 1854 ई० में एक स्वतंत्र विभाग के रूप में **लोक सेवा विभाग** की स्थापना की।
- इसी के समय में 1853 में **कलकत्ता एवं आगरा** के बीच पहली बार बिजली से संचालित तार सेवा शुरू हुई।

- इसने **शिमला** को **ग्रीष्मकालीन** राजधानी बनाया। इसी के समय में भारतीय नागरिक सेवा हेतु पहली बार प्रतियोगिता परीक्षा शुरू हुई।

लॉर्ड कैनिंग (1856-62 ई०)

- यह भारत में कम्पनी द्वारा नियुक्त **अन्तिम गवर्नर जेनरल** तथा ब्रिटिश सम्राट् के अधीन नियुक्त भारत का **प्रथम वायसराय** था, **इलाहाबाद** को **आपात कालीन मुख्यालय** बनाया
- इसके समय की सबसे महत्त्वपूर्ण घटना थी सन् **1857 ई० का ऐतिहासिक विद्रोह**।
- कैनिंग के समय में ही सन् **1856 ई० में विधवा पुनर्विवाह अधिनियम** पारित हुआ।
- **व्यपगत सिद्धान्त (Doctrine of Lapase)** यानी राज्य विलय की नीति को समाप्त कर दिया गया।

लॉर्ड मेयो (1869-72 ई०)

- लॉर्ड मेयो ने अजमेर में **मेयो कॉलेज** की स्थापना की। इसने सन् 1872 ई० में एक **कृषि विभाग** की स्थापना की।
- **पहली बार जनगणना** इसी के कार्यकाल मे होती है।
- एक अफगान ने सन् 1872 ई० में चाकू मार कर इसकी हत्या कर दी।
- इसकी कब्र अण्डमान निकोबार मे है

लार्ड लिटन (1876-80 ई०)

- 1 जनवरी, 1877 ई० को ब्रिटेन की महारानी विक्टोरिया को **कैसर-ए-हिन्द** की उपाधि में सम्मानित करने के लिए दिल्ली दरबार का आयोजन किया गया। मार्च, 1878 ई० में लिटन ने भारतीय समाचारपत्र अधिनियम (**वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट**) पारित कर भारतीय समाचारपत्रों पर कठोर प्रतिबंध लगा दिए। (विशेषकर समाचार-पत्र सोम प्रकाश के लिए)
- इसने सिविल सेवा परीक्षाओं में प्रवेश की अधिकतम आयु सीमा **21 वर्ष से घटाकर 19 वर्ष** कर दी

लॉर्ड रिपन (1880-54 ई0)

- रिपन ने सर्वप्रथम समाचारपत्रों की स्वतंत्रता को बहाल करते हुए सन् 1882 ई० में **वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट को समाप्त** कर दिया।

- इसने सिविल सेवा में प्रवेश की आयु को **19 वर्ष से बढ़ाकर 21 वर्ष** कर दिया।
- इसने **स्थानीय स्वशासन की शुरुआत** की। इसके समय में ही भारत में सन् **1881 ई० में सर्वप्रथम नियमित जनगणना** करवायी गयी।
- फ्लोरेंस नाइटिंगेल ने रिपन को भारत के उद्धारक की संज्ञा दी।

लॉर्ड डफरिन (1884-88 ई०)

- इसके समय की सबसे महत्त्वपूर्ण घटना थी -**28 दिसम्बर, 1885** ई० को बम्बई में ए० ओ० ह्यूम के नेतृत्व में **भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस** की स्थापना।

लार्ड लैन्सडाउन (1888-94 ई.)

- भारत और अफगानिस्तान के मध्य सीमा रेखा (**डुरण्ड रेखा**) का निर्धारण इसी के समय हुआ ।

लॉर्ड कर्जन (1899-05 ई०)

- 1904 में भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम पास किया गया।
- प्राचीन स्मारक परीक्षण अधिनियम 1904 ई० के द्वारा कर्जन ने भारत में पहली बार ऐतिहासिक इमारतों की सुरक्षा एवं मरम्मत की ओर ध्यान दिया। इस कार्य के लिए कर्जन ने **भारतीय पुरातत्व विभाग** की स्थापना की।
- इसी के कार्यकाल के दौरान कलकत्ता में **विक्टोरिया मेमोरियल हॉल** का निर्माण हुआ।
- कर्जन के भारत विरोधी कार्यों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कार्य था— **1905 में बंगाल का विभाजन** ।

लार्ड मिन्टो द्वितीय (1905-10 ई०)

- इसके समय में आग खाँ एवं सलीम उल्ला खाँ के द्वारा ढाका में **1906 ई० में मुस्लिम लीग** की स्थापना की गयी। 1907 ई० के कॉग्रेस के सूरत अधिवेशन में **कॉग्रेस का विभाजन** हो गया।
- मुसलमानों के लिए अलग निर्वाचन व्यवस्था **मार्लेमिन्टो सुधार अधिनियम 1909** ई० के द्वारा किया गया।

लॉर्ड हार्डिंग द्वितीय (1910-15 ई०)

- इसके समय में ब्रिटेन के **राजा जॉर्ज पंचम** भारत आए। 12 दिसम्बर, 1911 ई० में दिल्ली में एक भव्य दरबार का आयोजन हुआ। यहाँ पर **बंगाल विभाजन को रद्द** करने की घोषणा की गयी एवं भारत की राजधानी **कलकत्ता से दिल्ली** स्थानान्तरित करने की घोषणा की गयी। 1912 ई० में दिल्ली भारत की राजधानी बनी।
- 23 दिसम्बर, 1912 ई० को **लॉर्ड हार्डिंग पर दिल्ली में बम फेंका** गया। इसी के समय 28 जुलाई, 1914 ई० को प्रथम विश्व युद्ध प्रारंभ हुआ।

लॉर्ड चेम्सफोर्ट (1916-21 ई०)

- काँग्रेस के लखनऊ अधिवेशन (1916 ई०) में कांग्रेस का एकीकरण हुआ एवं मुस्लिम लीग के साथ समझौता
- इसके काल में **1917** ई० में शिक्षा पर **सैडलर आयोग** का गठन किया गया। इसी के काल में **1919** ई० में **रौलेट एक्ट** पारित हुआ।
- इसी के काल में **13 अप्रैल, 1919 ई० को जालियाँवाला बाग** हत्याकांड हुआ खिलाफत आन्दोलन एवं गांधीजी का असहयोग आन्दोलन इसी के समय प्रारंभ हुआ।

लार्ड रीडिंग (1921-26 ई०)

- **5 फरवरी, 1922** ई० को घटी चौरी-चौरा काण्ड (उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले में) के बाद महात्मा गांधी ने अपना असहयोग आन्दोलन वापस ले लिया।
- 1923 ई० में चित्तरंजन दास एवं मोतीलाल नेहरू ने इलाहाबाद में काँग्रेस के अंतर्गत **स्वराज्य पार्टी** की स्थापना की।
- इसके काल में ही **प्रिंस ऑफ वेल्स** ने नवम्बर, 1921 ई० में भारत की यात्रा की। इस दिन पूरे भारत में हड़ताल का आयोजन किया गया।
- 1921 ई० में **मोपला विद्रोह** हुआ।

लॉर्ड इरविन (1926-31 ई०)

- 3 फरवरी, 1928 ई० **साइमन कमीशन** बम्बई पहुँचा।
- 12 मार्च, 1930 ई० में गांधीजी के द्वारा सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारंभ किया गया।
- **1929** ई० में कॉग्रेस के लाहौर अधिवेशन में **'पूर्ण स्वराज'** का लक्ष्य निर्धारित किया गया और **26 जनवरी, 1930 ई० को स्वतंत्रता दिवस** मनाने की घोषणा की गयी।

- 12 नवम्बर, **1930** ई० में लंदन में **प्रथम गोलमेज सम्मेलन** हुआ। इस सम्मेलन में काँग्रेस ने भाग नहीं लिया।
- 5 मार्च, 1931 ई० **को गाँधी इरविन समझौते** पर हस्ताक्षर किया गया और साथ ही 'सविनय 'अवज्ञा आन्दोलन' को स्थगित किया गया।

लॉर्ड वेलिंगटन (1931-36 ई०)

- इसके समय में लंदन में 7 सितम्बर से 1 दिसम्बर, **1931** ई० तक **द्वितीय गोलमेज सम्मेलन** का आयोजन हुआ। इस सम्मेलन में काँग्रेस ने भी भाग लिया। कॉग्रेस का प्रतिनिधित्व **महात्मा गाँधी** ने किया। दूसरे गोलमेज सम्मेलन की असफलता के बाद महात्मा गाँधी ने 3 जनवरी, 1932 ई० को दुबारा सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारंभ किया।
- 16 अगस्त, 1932 ई० में **रैम्जे मैकडॉनल्ड** ने विवादास्पद **'साम्प्रदायिक पंचाट'** की घोषणा की।
- 17 नवम्बर से 24 दिसम्बर, **1932** ई० तक लंदन में **तृतीय गोलमेज सम्मेलन** का आयोजन हुआ। कॉग्रेस ने इसमें भाग नहीं लिया।

लार्ड लिनलिथगो (1936-43 ई०)

- इसके समय में पहली बार चुनाव कराए गए। काँग्रेस ने ग्यारह में से सात प्रान्तों में अपनी सरकारें बनाई।
- 1 सितम्बर, 1939 ई० को **द्वितीय विश्वयुद्ध प्रारंभ** हुआ।
- 1 मई, 1939 ई० में सुभाष चन्द्र बोस ने **फारवर्ड ब्लॉक** नाम की एक नयी पार्टी बनाई।
- 1940 ई० में लीग के लाहौर अधिवेशन में पहली बार पाकिस्तान की मांग की गयी।
- 8 अगस्त, 1940 ई० को **अगस्त प्रस्ताव** अंग्रेजों के द्वारा लाया गया।
- 1942 ई० में **क्रिप्स मिशन** भारत आया
- 9 अगस्त, 1942 ई० को कॉग्रेस ने **'भारत छोड़ो'** आन्दोलन प्रारंभ किया।

लॉर्ड बेवेल (1914-47 ई०)

- शिमला समझौता 1945 ई० में हुआ।
- **कैबिनेट मिशन 1946** ई० में भारत आया। इस मिशन के सदस्य थे—**स्टेफोर्ड क्रिप्स, पैथिक लारेंस, ए० बी० अलेक्जेंडर**। 20 फरवरी, 1947 ई० में प्रधानमंत्री लार्ड क्लीमेंट

एटली (लेवर पार्टी) ने हाउस ऑफ कॉमंस में यह घोषणा की कि जून, 1948 ई० तक प्रभुसत्ता भारतीयों के हाथ में दे देंगे।

लॉर्ड माउण्टबेटन (मार्च, 1947 से जून, 1948 ई०)

- 4 जुलाई, 1947 ई० को ब्रिटिश संसद में एटली द्वारा भारतीय स्वतंत्रता विधेयक प्रस्तुत किया गया, जिसे 18 जुलाई को स्वीकृति मिली। विधेयक के अनुसार भारत और पाकिस्तान दो स्वतंत्र राष्ट्रों की घोषणा की गयी। 15 अगस्त, 1947 ई० को भारत स्वतंत्र हुआ।
- स्वतंत्र भारत का प्रथम गवर्नर जेनरल लॉर्ड माउण्टबेटन हुए।
- स्वतंत्र भारत के प्रथम एवं अंतिम भारतीय गवर्नर जेनरल चक्रवर्ती राजगोपालाचारी हुए।

प्रमुख तथ्य -

- लॉर्ड ली की अध्यक्षता में गठित रॉयल कमिशन ने 1924 में लोक सेवा आयोग के गठन की सिफारिश की थी। इसी के आधार पर 1 अक्टूबर, 1926 को संघ लोक सेवा आयोग की स्थापना हुयी। सर रॉस बेकर इसके प्रथम अध्यक्ष थे।
- भारत में बैंकिंग इतिहास 1870 में कलकता में स्थापित **'बैंक ऑफ हिंदुस्तान'** की स्थापना से होता है। 1786 में जनरल बैंक ऑफ इंडिया की स्थापना हुयी।
- ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने 3 बैंकों की शुरुआत की **बैंक आफ बंगाल** 1809 में, **बैंक ऑफ बांबे** 1840 में और **बैंक ऑफ मद्रास** 1843 में। लेकिन बाद में इन तीनों बैंको का विलय 27 जनवरी, 1921 को एक नये बैंक **'इंपीरियल बैंक'** में कर दिया गया जिसे **1955 में 'भारतीय स्टेट बैंक** में विलय कर दिया गया। इस प्रकार भारतीय स्टेट बैंक भारत का सबसे पुराना बैंक है।
- **1861** के 'पेपर करेंसी एक्ट' द्वारा 1862 से स्वीकृत मुद्रा की शुरूआत हुई।

भारत मे शिक्षा का विकास क्रम

- 1778 में **विलियम जोंस** ने कलकता में **एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल** की स्थापना की। इसे पहले एशियाटिक सोसायटी कहा जाता था।
- 1781 ई. में वारेन हेस्टिंग्स ने कलकत्ता मदरसा बनवाया।
- 1792 ई. में डंकन ने बनारस में संस्कृत विद्यालय बनवाया।
- 1813 ई. के चार्टर एक्ट द्वारा एक लाख रुपया विद्या प्रसार, साहित्य पुनरूद्धार तथा विज्ञान के आरंभ और उन्नति के लिए दिया गया।
- 1817 ई. में पाश्चात्य ज्ञान और मानविकी मानवता की शिक्षा के लिए कलकत्ता में हिन्दू कॉलेज की स्थापना हुई। इसके अतिरिक्त कलकत्ता, बनारस और आगरा में तीन संस्कृत कॉलेज खोले गये।
- 1820 में डेविड हेयर ने कलकता में विशप कॉलेज की स्थापना की।
- कलकता में हिंदू कॉलेज की स्थापना राजा राममोहन राय ने डेविड हेयर के साथ मिलकर की।
- मैकाले भारत में '**अंग्रेजी शिक्षा द्वारा एक ऐसा वर्ग तैयार करना चाहता था जो रक्त व रंग से भारतीय हो परंतु विचार से अंग्रेज हो।** उसके अनुसार 'यूरोप के एक अच्छे पुस्तकालय की आलमारी का एक तख्ता भारत के समस्त साहित्य से अधिक मूल्यवान है।'
- कर्जन के समय कृषि विभाग, पुरातत्व विभाग की स्थापना की गई। 1904 में प्राचीन स्मारक, अभिलेख संरक्षण अधिनियम बनाया गया।

चार्ल्स वूड डिस्पच, 1854

- 1854 ई. में चार्ल्स वुड के सुझाव आए जिसे भारतीय **शिक्षा का मैग्नाकार्टा'** कहा जाता है।
  - **हंटर शिक्षा आयोग (1882)**
  - **टॉमस रैले शिक्षा आयोग, 1902**
  - **सैडलर विश्वविद्यालय आयोग, 1917**
  - **हार्टोग समिति, 1929 ई**
  - **मूलशिक्षा की वर्धा योजना 1937**

भारत मे प्रेस का विकास

- भारत में प्रिंटिंग प्रेस पुर्तगालियों द्वारा लाया गया एवं 1567 में गोवा में कुछ पादरी लोगों ने भारत की पहली पुस्तक छापी।
- ईस्ट इंडिया कंपनी ने 1684 में बंबई में अपना पहला प्रिंटिंग प्रेस स्थापित किया।
- **जेम्स आगस्ट्स हिक्की** ने 1780 में भारत का पहला समाचार पत्र प्रकाशित किया जिसका नाम था, द **बंगाल गजट (The Bengal Gazette)** नवंबर 1780 में प्रकाशित 'इंडिया गजट' दूसरा भारतीय पत्र था
- राजा राममोहन राय ने 1821 में **बंगाली भाषा में संवाद कौमुदी** का 1822 में **'चंद्रिका' फारसी भाषा** में **'मिरातुल अखबार'** एवं **अंग्रेजी भाषा में 'ब्रह्मनिकल मैगजीन'** का प्रकाशन प्रारंभ किया।
- कार्यवाहक गवर्नर जनरल चार्ल्स मेटकॉफ ने समाचार पत्रों पर 1823 के प्रतिबंधों को हटा दिया। मेटकॉफ को **भारतीय प्रेस का मुक्तिदाता'** कहा जाता है। मैकाले ने भी प्रेस की स्वतंत्रता का समर्थन किया। राजा राममोहन राय को राष्ट्रीय प्रेस की स्थापना का श्रेय दिया जाता है।
- 1859 से प्रकाशित ईश्वरचंद्र विद्यासागर द्वारा 'सोम प्रकाश' एकमात्र समाचार पत्र था, जिसके विरुद्ध लार्ड लिटन का 'वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट' लागू किया गया था। यह ईश्वर चन्द्र विद्यासागर का पत्र था।
- 1826 में कानुपर से जुगलकिशोर द्वारा हिंदी में प्रकाशित **उदंड मार्तंड** भारत का पहला हिंदी का समाचारपत्र है।

लार्ड वेलेजली. मिंटो, लार्ड एडम, कैनिंग, लिटन आदि को भारतीय प्रेस की स्वतंत्रता का विरोधी माना जाता है। लार्ड हेस्टिंग्स, बैटिक, मेटकॉफ, मैकाले तथा रिपन को भारतीय प्रेस की स्वतंत्रता का समर्थक माना जाता है।

PA.ONE SIR
+91-90-2696-9090
pa.onesingham@gmail.com